शिक्षा का अधिकार
मंजरी
8
निःशुल्क वितरण हेतु
2020-2021

पाठ्यक्रम का मासिक विभाजन

हिन्दी कक्षा–8

माह	पाठ का नाम
अप्रैल	1. वीणावादिनि वर दे
	2. काकी
	3. वन्दना
मई	4. सच्ची वीरता
	5. पेड़ों के संग बढ़ना सीखो
	6. भोजस्य राज्य प्राप्तिः
जून	**ग्रीष्मावकाश**
जुलाई	7. अपराजिता
	8. बिहारी के दोहे
	9. बाल–प्रतिज्ञा
	10. महादानम्
अगस्त	11. जूलिया
	12. धानों का गीत
	13. हिन्दी विश्वशान्ति की भाषा है
	प्रथम सत्र परीक्षा
सितम्बर	14. भक्ति के पद
	15. आत्मनिर्भरता
	16. विभक्तीनां प्रयोगाः
	17. सहसा विद्धीत न क्रियाम्
अक्टूबर	18. पहरुए सावधान रहना
	19. जंगल (अप्रैल से अक्टूबर तक पढ़े गये पाठों का अभ्यास)
	अर्द्धवार्षिक परीक्षा
नवम्बर	20. कर्मवीर
	21. एक स्त्री का पत्र
	22. सोना
	23.प्रभात–सौन्दर्यम्
दिसम्बर	24. अमरकंटक से डिंडौरी
	25. नींव का निर्माण फिर–फिर
	26. आदर्श परिवारः
	द्वितीय सत्र परीक्षा
जनवरी	27. जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी
	28. झाँसी की रानी
	29. कुम्भ मेला
	30. व्यवसायेषु संस्कृतम् एवं व्याकरणम्
फरवरी	31. बस की यात्रा
	32. खानपान की बदलती तस्वीर (पुनरावृत्ति / सम्पूर्ण पाठों का अभ्यास)
मार्च	**वार्षिक परीक्षा**

masterjeeonline.com

सीखने का प्रतिफल (Learning Outcomes)

उच्च प्राथमिक की अन्तिम कक्षा में बच्चे अपनी प्रतिक्रिया/तर्क/विचार/टिप्पणी/समीक्षा व्यक्त करने में सक्षम हो सकेंगे। वह अपनी अभिव्यक्ति में उचित शब्दों का चयन, मुहावरों/लोकोक्तियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकेंगे। वे नये शब्दों को जाने, उनके अर्थ खोजें उनका विविध प्रकार से प्रयोग करें। वे कल्पना, रूचि के अनुसार कविता, कहानी, निबन्ध आदि में सूक्ष्म बिन्दुओं को खोज सकेंगे, तथ्यों की व्याख्या लिखित रूप से कर सकेंगे तथा नव सृजन हेतु प्रेरित हों। वे गद्य–पद्य की विभिन्न विधाओं की रचना/शैली एवं व्याकरणीय व्यवस्थाओं रोचकताओं आदि को समझ सकेंगे तथा उनकी मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकेंगे, परिस्थितियों में उनकी पहचान कर सकेंगे और उनका आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकेंगे।

सीखने–सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियायें	शिक्षण संबंधी परिणाम (Learning Outcomes)
• शिक्षक बच्चों को किसी पाठ के आधार पर लोककथा, गीत, उक्ति सुनाने को प्रेरित करें। शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर इस प्रकार की सामग्री का संकलन करें।	• बच्चे किसी प्रसंग/सन्दर्भ के आधार पर परिवेशीय लोककथा/लोकगीत/लोकोक्तियाँ बताते व सुनाते हैं।
• शिक्षक समसामयिक/परिवेशीय घटनाक्रम या पाठ्य सामग्री के आधार पर चर्चा करें, सही गलत के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित करें तथा बच्चों को इस आधार पर परिचर्चा हेतु आमंत्रित करें।	• बच्चे विभिन्न संवेदनशील/सामाजिक मुद्दों जैसे–जाति, धर्म, लिंग, अंधविश्वास, रूढ़ियों पर बात करते हैं, प्रश्न करते हैं एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर अपना मत खुलकर रखते हैं।
• शिक्षक बच्चों में धार्मिक सद्भाव बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक पर्वों को मनाने के तरीकों पर बातचीत करवायें। स्थानीय मेलों का इतिहास व विशेषताओं पर चर्चा करायें। सकारात्मक तथ्यों को उभारने वाले मानवीय मूल्यों के विकास से सम्बंधित गतिविधि करा सकते हैं।	• विभिन्न स्थानीय मेलों, धार्मिक पर्वों के मनाने के तरीकों पर अपने साथियों व शिक्षकों से बातचीत करते हैं, सराहना करते हैं और उसको बताते हैं।
• बच्चों में पठन–क्षमता विकास हेतु किसी विषय पर विभिन्न प्रकार की रचनाओं को खोजने, जानकारी लेने एवं साझा करने को प्रेरित करें। बच्चे से इस तरह की सामग्री को संकलित भी करायें।	• विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं, चर्चा करते हैं। जैसे–'अपराजिता' कहानी, 'काँटो में राह बनाते हैं' कविता, तथा अरुणिमा सिन्हा (पर्वतारोही) की जीवनी, विवेकानन्द जी के व्याख्यान खोजते हैं, पढ़ते हैं, जानकारी एकत्र करते हैं।

• शिक्षक पाठ्य सामग्री के तथ्यों को वर्तमान समय एवं बच्चों के दैनिक जीवन/परिवेश से जोड़कर देखने उस पर विचार करने के दृष्टिकोण को विकसित करते हैं।	• किसी रचना को पढ़कर उससे जुड़े सामाजिक मुद्दे पर चर्चा करते हैं। जैसे–**काकी** की कहानी या अन्य कोई घटना/कहानी/जीवनी सुनाकर उसमें निहित सामाजिक/मानवीय मूल्यों पर चर्चा करना।
• शिक्षक बच्चों को अवसर दें कि वे पाठ्य सामग्री को पढ़कर गहराई से उस पर विचार करें तथा बेहतर समझ बनाने के लिए उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के अवसर दें।	• पाठ्य सामग्री को पढ़कर चिन्तन व समझ बेहतर बनाने के लिए प्रश्न करते हैं। अन्य बच्चों द्वारा बताये गये उत्तरों पर अपना मत देते हैं या उस पर प्रश्न करते हैं।
• शिक्षक बच्चों में कल्पनाशक्ति विकसित करने का अवसर प्रदान करें।	• बच्चे पठित सामग्री की घटनाओं, परिस्थितियों की कल्पना करते हैं और काल्पनिक छवि व विचार को मौखिक/सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं।
• शिक्षक बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पठन सामग्री को पढ़ने को प्रेरित करें तथा उस सामग्री के आधार पर उन्हें उनकी राय, विचार व्यक्त करने, टिप्पणी करने के पर्याप्त अवसर दें।	• बच्चे हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों से अलग विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे–पत्रिका, समाचार–पत्र, प्रचार–पत्रक (पैम्पलेट), इंटरनेट को समझकर पढ़ते हैं और उस पर अपनी पंसद–नापसंद, राय, टिप्पणी, निष्कर्ष आदि मौखिक या सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
• शिक्षक बच्चों से पठन सामग्री के विविध प्रकार पर चर्चा करें तथा उनकी सूक्ष्मता से पढ़ने, मुख्य बिन्दु खोजने, उसका परीक्षण अपनी तरह से करने तथा चर्चा करने को प्रेरित करें।	• बच्चे विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री जैसे–कहानी, कविता, लेख, संस्मरण, निबन्ध,व्यंग्य, रिपोतार्ज (रिपोर्ट का कलात्मक और साहित्यिक रूप) की सूक्ष्मता से जाँच करते हुए पढ़ते हैं, विशेष बिन्दु खोजते हैं, विश्लेषण करते हैं।
• शिक्षक बच्चों से मौन–पठन करने, पाठ्य सामग्री को समझने तथा किसी बात को समझ में न आने पर प्रश्न पूछें। शिक्षक पठित सामग्री पर बच्चों की जिज्ञासा बढ़ाने वाले प्रश्नों को तैयार करायें।	• बच्चे पठित सामग्री समझकर पढ़ लेते हैं, चिन्तन करते हैं व बेहतर समझ हेतु प्रश्न करते हैं।

कोड नं. 23, लखनऊ प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, लखनऊ। सत्र 2020–21

• शिक्षक बच्चों में व्याकरण की समझ बढ़ाने, शब्द खोजने जैसे–इस पाठ में क्रिया शब्द कौन–कौन हैं? अलंकार कौन–कौन हैं? आदि कार्य गतिविधियों के रूप में कर सकते हैं।	• बच्चे विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, समास, अलंकार आदि) मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए पढ़ते हैं, उनका लेखन में सही प्रयोग करते हैं व पाठ्य सामग्री से उसे छाँट पाते हैं।
• शिक्षक पठित सामग्री में गद्य पद्य की विभिन्न विधाओं पर चर्चा कर सकते हैं, बच्चों से पुस्तक की सभी रचनाओं में कौन–कौन पाठ किस तरीके/शैली के हैं, इस पर चर्चा कर सकते हैं।	• बच्चे गद्य–पद्य की विभिन्न विधाओं में लेखन के विविध तरीकों/शैलियों को पहचानते हैं जैसे–वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, रेखा या प्रकृति चित्रण आदि और उन्हें स्पष्टता से बता पाते हैं।
• शिक्षक विविध पठन सामग्री के प्रस्तुतीकरण, संरचना/शिल्प जैसे– प्रस्तावना, उपसंहार, कविता/छंद में पद/पंक्ति आदि पर चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि किसी सामग्री में उन्हें कौन सी विशेषता दिखती हैं। इस प्रकार उनमें तुलना करने, विशेषताओं को चिह्नित करने आदि कौशलों का विकास कर सकते हैं।	• बच्चे विविध पठन सामग्री को पढ़ते हुए उसकी शिल्प/संरचना की सराहना करते हैं और मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से उसके बारे में विचार व्यक्त करते हैं। उनकी विशेषताओं को बता व लिख पाते हैं।
• शिक्षक पठित सामग्री में आये कठिन शब्दों के अर्थ खोजने के लिए बच्चों को प्रेरित करें। कक्षा मे शब्दकोश की उपलब्धता बहुत उपयोगी साबित हो सकती है। यदि शिक्षक स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं तो बच्चों को बतायें, कि किस प्रकार किसी शब्द के बारे में उसके अर्थ एवं उपयोग की जानकारी की जा सकती हैं।	• पठित सामग्री पर बेहतर समझ हेतु शब्दकोश या अन्य पुस्तक से शब्द के अर्थ को खोज पाता है और बता पाता है।
• शिक्षक बच्चों को मौलिक लेखन हेतु प्रेरित करें। उन्हें बतायें कि सोशल मीडिया में कैसे लिखा जा सकता है। अधिकांश बच्चों को फेसबुक/व्हाट्सएप की जानकारी हो सकती हैं, किन्तु मेल, ट्विटर के बारे में शायद वह कम जानते हों, तो उन्हें बताया जा सकता है।	• बच्चे लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावपूर्ण तरीके से लिखते हैं। जैसे– सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर, डायरी पर या संपादक के नाम पत्र आदि।

• शिक्षक बच्चों को प्रेरित करें कि कविता के शब्द बदलकर उसकी लय या तुक का परीक्षण करें। दोहा, सोरठा में पद बदलकर लय तुक बदलने का उदाहरण दिया जायें।	• बच्चे भाषा की बारीकी/व्यवस्था को समझने के लिए लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे–कविता के शब्द बदलकर लय व तुक पर समझ विकसित करना।
• बच्चों को किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाने को कहें। उन्हें समाचार लिखने में तटस्थता/निष्पक्षता के बारे में बताया जा सकता है। शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय–पत्रिका, बाल समाचार–पत्र, बाल–पत्रिका, बनाने का अभ्यास करेंगे।	• बच्चे किसी कार्यक्रम जैसे–बालसभा, राष्ट्रीय पर्व आदि की रिपोर्ट/समाचार बनाना, नोटिस बनाना जैसे कार्य अपने ढंग से करते हैं।
• शिक्षक बच्चों को मौलिक लेखन के लिए प्रेरित करें, उन्हें मेले/बाजार/यात्रा तथा उसमें किन्हीं व्यक्तियों के संवाद लिखने तथा उनमें विरामादि चिह्नों के प्रयोग के उदाहरण देकर कार्य करने के पर्याप्त अवसर दें।	• बच्चे मेले/बाजार का वर्णन जिसमें फेरीवालों, दुकानदारों के संवाद आदि हो, को उचित विरामादि चिह्नों का प्रयोग कर लिखते हैं।
• बच्चों को कोई शब्द/घटना/चित्र देकर स्वतंत्र लेखन हेतु अवसर दिये जायें व प्रतियोगिताएं करायी जायें।	• बच्चे अनुभव तथा अभिव्यक्ति भाषा की विविध शैलियों कविता, कहानी, निबन्ध आदि में प्रस्तुत करते हैं।
• शिक्षक बच्चों को नृत्य की भाव–भंगिमा या अभिनय करने, रोल–प्ले करने, संवाद बोलने के पर्याप्त अवसर दें। इससे बच्चों में सामाजिक समरसता भावों को समझने आदि की क्षमताओं का विकास होता है।	• बच्चे विविध कलाओं/व्यवसायों में प्रयुक्त होने वाली भाषा में आने वाले स्थानीय शब्दों और मानक शब्दों का सही प्रयोग करते हैं। जैसे नृत्य मुद्रा, भाव–भंगिमा, दस्तकारी, अभिनय आदि को देखकर उसकी विशेषता बता पाते

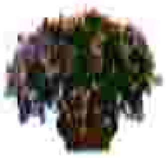

विषय-सूची

क्रमांक	पाठ-शीर्षक	विधा	लेखक/कवि	पृष्ठ-संख्या
1-	वीणावादिनि वर दे	कविता	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	13
2-	काकी	कहानी	सियारामशरण गुप्त	16
3-	सच्ची वीरता	निबन्ध	सरदार पूर्ण सिंह	20
4-	पेड़ों के संग बढ़ना सीखो	कविता	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	25
5-	अपराजिता	कहानी	शिवानी	27
6-	बिहारी के दोहे	कविता	बिहारी	33
7-	जूलिया	एकांकी	अन्तोन चेखोव	36
8-	धानों का गीत	कविता	केदारनाथ सिंह	41
9-	हिन्दी विश्वशांति की भाषा है	साक्षात्कार	रत्नावली कौशिक	43
10-	भक्ति के पद	कविता	मीराबाई, रसखान	49
11-	आत्मनिर्भरता	निबन्ध	रामचन्द्र शुक्ल	52
12-	पहरुए सावधान रहना	कविता	गिरिजाकुमार माथुर	57
13-	जंगल	कहानी	चित्रा मुद्गल	60
14-	कर्मवीर	कविता	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	68
15-	एक स्त्री का पत्र	पत्र	रवीन्द्रनाथ टैगोर	72
16-	सोना	रेखाचित्र	महादेवी वर्मा	77
17-	अमरकंटक से डिंडौरी	यात्रावृत्तान्त	अमृतलाल बेगड़	83
18-	नीड़ का निर्माण फिर-फिर	कविता	हरिवंशराय 'बच्चन'	89
19-	जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी	संस्मरण	धर्मवीर भारती	93
20-	झाँसी की रानी	उपन्यास अंश	वृन्दावनलाल वर्मा	98
21-	बस की यात्रा	व्यंग्य	हरिशंकर परसाई	105
22-	खानपान की बदलती तस्वीर	निबन्ध	प्रयाग शुक्ल	109

अनिवार्य-संस्कृत

पाठ-संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ-संख्या
	वन्दना	113
प्रथमः पाठः	भोजस्य राज्यप्राप्तिः	115
द्वितीयः पाठः	बाल-प्रतिज्ञा	118
तृतीयः पाठः	महादानम्	122
चतुर्थः पाठः	विभक्तीनां प्रयोगाः	125
पञ्चमः पाठः	सहसा विदधीत न क्रियाम्	128
षष्ठः पाठः	प्रभात-सौन्दर्यम्	131
सप्तमः पाठः	आदर्शपरिवारः	134
अष्टमः पाठः	कुम्भमेला	137
नवमः पाठः	व्यवसायेषु संस्कृतम्	140
	व्याकरणम्	142

पाठ 1

वीणावादिनि वर दे

(प्रस्तुत कविता में कवि ने वीणापाणि सरस्वती की वन्दना करते हुए अज्ञानता को दूर करने तथा नवचेतना का प्रकाश फैलाने की कामना की है।)

वर दे, वीणावादिनि वर दे !
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे !
काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम-हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद - मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे !

-सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म माघ शुक्ल 11 सम्वत् 1953 (सन् 1896 ई०)में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। इनके पिता उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के निवासी थे। निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं - 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका','तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते', 'आराधना'। इनका देहावसान अक्टूबर सन् 1961 ई० को इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) में हुआ।

शब्दार्थ

रव = ध्वनि। **अमृत-मन्त्र** = ऐसे मन्त्र जो अमरत्व की ओ[illegible] जायें, कल्याणकारी मन्त्र। **अन्ध-उर** = अज्ञानपूर्ण हृदय। **कलुष** = मलिनता, पा[illegible]रव = गम्भीर ध्वनि। **विहग-वृन्द** = पक्षियों का समूह।

masterjeeonline.com

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- पाठ में दिये गये चित्र के आधार पर एक तालाब का चित्र बनाइए तथा उसे निम्नलिखित से सजाइए-

एक हंस, दो बतख, कमल के दो फूल, तीन कलियाँ, सात पत्तियाँ।

2- इस कविता को कंठस्थ करके भाव और लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

3- यह कविता अनेक संगीतकारों द्वारा संगीतबद्ध की गयी है। अपने बड़ों/माता-पिता अथवा शिक्षक के मोबाइल फोन पर इस कविता के संगीतबद्ध रूप को सुनें तथा उसके अनुसार गाने का अभ्यास करें। विद्यालय के किसी कार्यक्रम में कविता को गाकर प्रस्तुत करें।

विचार और कल्पना

इस कविता में कवि द्वारा माँ सरस्वती से भारत और संसार के लिए अनेक वरदान माँगे गये हैं। आप अपने विद्यालय के लिए क्या-क्या वरदान माँगना चाहेंगे ?

कविता से

1- कविता में भारत के लिए क्या वरदान माँगा गया है ?

2- तालिका के खण्ड 'क' और खण्ड 'ख' से शब्द चुनकर शब्द-युग्म बनाइए-

'क'	'ख'
वीणा - वादिनि	वादिनि
स्वतन्त्र -	स्तर
अन्ध -	रव
विहग -	मन्त्र नव
ताल -	उर
बन्धन -	छन्द नव
अमृत -	मन्द्र रव
जलद -	वृन्द

3- पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर, बहा जननी, ज्योतिर्मय निर्झर।

(ख) कलुष-भेद तम-हर, प्रकाश भर, जगमग जग कर दे।

(ग) नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव, नवल कंठ, नव जलद - मन्द्ररव।

भाषा की बात

1- कविता में आये 'वर दें', 'भर दे' की तरह अन्य तुकान्त शब्दों को छाँटकर लिखिए।

2- ज्योतिः+मय=ज्योतिर्मय, निः+झर=निर्झर। इन शब्दों में विसर्ग का रेफ हुआ है। यह विसर्ग सन्धि है। इसी प्रकार के दो शब्द लिखिए तथा उनका सन्धि विच्छेद कीजिए।

3- विभक्ति को हटाकर शब्दों के मेल से बनने वाला शब्द **समास** कहलाता है। 'वीणा-वादिनि' का अर्थ है 'वीणा को बजाने वाली' अर्थात् सरस्वती। यह बहुव्रीहि समास का उदाहरण है। इसी प्रकार गजानन पीताम्बर, चतुरानन शब्दों में भी बहुव्रीहि समास है। इनका विग्रह कीजिए।

4- 'नव गति' में 'नव' गुणवाचक विशेषण है, यह गति, शब्द की विशेषता बताता है। कविता में 'नव' अन्य किन शब्दों के विशेषण के रूप में आया है, लिखिए।

इसे भी जानें

'सरस्वती सम्मान' के० के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा में गत दस वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति पर दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1991 ई० में हुई।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने मतवाला, सुधा और समन्वय आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

शिक्षण संकेत-

कविता के संगीतबद्ध रूप को सुने तथा उसके अनुसार छात्रों को गाने का अभ्यास कराएँ।

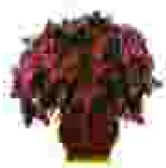

पाठ 2

काकी

(प्रस्तुत कहानी में एक अबोध बालक का अपनी माँ के प्रति गहरा प्रेम प्रकट हुआ है।)

उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा घर भर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कम्बल पर भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेर कर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

लोग जब उसकी माँ को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा। बोला, काकी सो रही है। इसे इस तरह उठा कर कहाँ ले जा रहे हो? मैं इसे न ले जाने दूँगा।

लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया। काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका। एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गयी है, परन्तु यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गयी है। काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो धीरे-धीरे शान्त हो गया, परन्तु शोक शान्त न हो सका। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। पिता के पास जाकर बोला, 'काका, मुझे एक पतंग मँगा दो, अभी मँगा दो।'

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे। 'अच्छा मँगा दूँगा,' कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गये।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था। वह अपनी इच्छा को किसी तरह न रोक सका। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था। इधर-उधर देखकर उसके पास स्टूल सरका कर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोली।

एक चवन्नी पाकर वह तुरन्त वहाँ से भाग गया। सुखिया दासी का लड़का भोला, श्यामू का साथी था। श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, 'अपनी जीजी से कहकर गुपचुप एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो अकेले में लाना कोई जान न पाये।'

पतंग आयी। एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी। श्यामू ने धीरे से कहा, 'भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ।'

भोला ने सिर हिलाकर कहा 'नहीं, किसी से न कहूँगा।'

श्यामू ने रहस्य खोला, 'मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा। इसको पकड़ कर काकी नीचे उतरेगी। मैं लिखना नहीं जानता नहीं तो इस पर उसका नाम लिख देता।'

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा, 'बात तो बहुत अच्छी सोची, परन्तु एक

कठिनाई है। यह डोर पतली है। इसे पकड़ कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाये।'

श्यामू गम्भीर हो गया। मतलब यह बात लाख रुपये की सुझायी गयी, परन्तु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगायी जाय। पास में दाम है नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-मया के जला आये हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं। उस दिन श्यामू को चिन्ता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आयी।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला। ले जाकर भोला को दिया और बोला, 'देख भोला, किसी को मालूम न होने पाये। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे। एक रस्सी छोटी पड़ेगी। जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूँगा। नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जायेगी।'

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् उग्र रूप धारण किये हुए विश्वेश्वर शुभ कार्य में विघ्न की तरह वहाँ जा घुसे। भोला और श्यामू को धमका कर बोले- 'तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?'

भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया। बोला, 'श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।'

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, 'चोरी सीख कर जेल जायेगा! अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह बताता हूँ।'

कहकर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली। अब रस्सियों की ओर देखकर पूछा 'ये किसने मँगायी।'

भोला ने कहा, 'इन्होंने मँगायी थी। कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।'

विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गये। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उस पर चिपके हुए कागज पर लिखा था ....'काकी'।

-सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त का जन्म 4 सितम्बर सन् 1895 ई० को चिरगाँव झाँसी में हुआ। इन्होंने अनेक कविता-संग्रह, उपन्यास और निबन्धों की रचना की है। इनके उपन्यासों में नारी की सहनशीलता, आदर्श और सरलता है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ-'मौर्य विजय', 'दूर्वादल' 'आत्मोत्सर्ग' 'गोद', 'नारी' आदि हैं। 29 मार्च सन् 1963 को इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

कुहराम = रोना-पीटना, विलाप। **भूमि-शयन** = जमीन पर सोना। **करुण** = दीन। **उपद्रव** = उत्पात। **अग्नि-संस्कार** = मृत्यु के बाद शव को अग्नि में जलाना। **अनमना** = उदास, खिन्न। **उत्कंठित** = उत्सुक, अधीर। **प्रफुल्ल** = खिला हुआ, प्रसन्न। **उग्र रूप** = प्रचंड रूप। **मुखबिर** = भेद देने वाला, भेदिया। **हतबुद्धि** = बेसुध, घबराया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

'मैं और मेरी माँ' - इस विषय पर संक्षेप में अपने अनुभव/विचार सुनाइए।

विचार और कल्पना

1- पतंग इतनी ऊँचाई तक कैसे उड़ती है ? एक कागज का सादा पन्ना नहीं उड़ता है, कारण स्पष्ट कीजिए।

2- श्यामू लिखना नहीं जानता था, इसलिए वह पतंग पर अपनी काकी का नाम नहीं लिख पाया। आप बताएँ, जो लोग लिखना नहीं जानते हैं, उनको जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा ?

3- आपका मन भी आकाश में उड़ने को होता होगा। पतंग की तरह यदि आप भी उड़ सके तो सबसे पहले किस स्थान पर जाना चाहेंगे ? क्यों ?

4- पाठ में आपने पढ़ा कि श्यामू ने विवशता में पिता जी की कोट के जेब से पैसे निकाल लिये थे, आपके विचार से ऐसा करना उचित था अथवा अनुचित ? कारण भी बताएँ।

कहानी से

1- समूह 'ख' से नामों को छाँटकर समूह 'क' से सम्बन्धित शब्दों के सम्मुख लिखिए-

'क'		'ख'
श्यामू के पिता	-	भोला
श्यामू का साथी	-	जवाहिर
श्यामू के भैया	-	काकी
श्यामू के साथी की बहन	-	जीजी
श्यामू की माँ	-	विश्वेश्वर
श्यामू के साथी की माँ	-	सुखिया

2- श्यामू ने भोला के सामने कौन-सा रहस्य खोला ?

3- श्यामू ने जवाहिर भैया से कागज पर 'काकी' क्यों लिखवाया ?

4- उड़ती हुई पतंग को देखकर, क्या सोचकर श्यामू का हृदय एकदम खिल उठा ?

5- 'भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया'। इस वाक्य का क्या तात्पर्य है ?

6- 'रस्सी से पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे'। भोला से यह बात सुनकर विश्वेश्वर हतबुद्धि क्यों हो गये ?

7- कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइये।

भाषा की बात

1- 'श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था।' वाक्य में 'श्यामू' और 'पतंग' संज्ञा शब्द हैं। 'श्यामू' व्यक्तिवाचक और 'पतंग' जातिवाचक संज्ञा है। नीचे लिखे वाक्य में आये संज्ञा पदों को पहचान कर लिखिए तथा उनके भेद बताइए।

एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था।

2- जो बुद्धिवाला हो-वाक्यांश के लिए एक शब्द है-'बुद्धिमान'।

इसी प्रकार नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(क) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

(ख) जिसका स्वर्गवास हो गया हो।

(ग) जो अपने मन को एकाग्र रखता हो।

(घ) वह स्थान जहाँ शव जलाये जाते हों।

3- निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताइए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

कुहराम मचना, हृदय का खिलना, चिन्ता का मारा होना, रहस्य खोलना, हतबुद्धि होना

4- 'समझदार' शब्द में 'समझ' संज्ञा है, उसमें 'दार' प्रत्यय लगाकर विशेषण पद बना दिया गया है। संज्ञा शब्दों में दार, इक, इत, ई, ईय, मान तथा वान आदि प्रत्ययों को लगाने से विशेषण शब्द बनता है। नीचे लिखे शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाइए -

बुद्धि, चौकी, उपद्रव, करुण, बल, प्रान्त, उत्कंठा।

इसे भी जानें

"मातृत्व महान गौरव का पद है, संसार की सबसे बड़ी साधना, तपस्या, त्याग और महान विजय है।" -मुंशी प्रेमचन्द

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" - वाल्मीकि रामायण

पाठ 3

55NPGS

सच्ची वीरता

(प्रस्तुत पाठ में सच्चे वीर पुरुषों के धैर्य, साहस, और स्वाभिमान जैसे गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि वीर पुरुष प्रत्येक स्थिति में सच्चाई का साथ देते हैं।)

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है, परन्तु जब ये शेर गरजते हैं तब सदियों तक उनकी दहाड़ सुनायी देती रहती है और अन्य सब आवाजें बन्द हो जाती हैं।

एक बार एक बागी गुलाम और एक बादशाह के बीच बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दिल से आजाद था। बादशाह ने कहा, 'मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो'? गुलाम बोला 'हाँ' मैं फाँसी पर तो चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ। इस गुलाम ने दुनिया के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। बस इतने ही जोर और इतनी ही शेखी पर ये झूठे राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते हैं। चूँकि लोग शरीर को अपने जीवन का केन्द्र समझते हैं इसलिए जहाँ किसी ने इनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया वहीं वे मारे डर के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर-रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पूजा करते हैं।

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। फौज, तोप, बन्दूक आदि के बिना ही वे शहंशाह होते हैं। मंसूर ने अपनी मौज में आकर कहा कि मैं खुदा हूँ। दुनियावी बादशाह ने कहा 'यह काफिर है'। मगर मंसूर ने अपने कलाम को बन्द न किया। पत्थर मार-मारकर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की परन्तु उस मर्द के मुँह से हर बार यही शब्द निकला 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूँ। मंसूर का सूली पर चढ़ना उसके लिए सिर्फ खेल था।

महाराजा रणजीत सिंह ने फौज से कहा अटक के पार जाओ। अटक चढ़ी हुई थी और भयंकर लहरें उठी हुई थीं। जब फौज ने कुछ उत्साह प्रकट न किया तब उस वीर को जोश आया। महाराजा ने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। कहा जाता है कि अटक सूख गयी और सब पार निकल गये।

लाखों आदमी मरने-मारने को तैयार हो रहे हैं। गोलियाँ धुआँधार बरस रही हैं। आल्प्स के पहाड़ों पर फौज ने चढ़ना ज्यों ही असम्भव समझा त्यों ही वीर नेपोलियन को जोश आया और उसने कहा, 'आल्प्स है ही नहीं'। फौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नहीं है और सब लोग पहाड़ के पार हो गये।

एक भेड़ चराने वाली और सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या के दिल में जोश आते ही फ्रांस एक शिकस्त से बच गया।

वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने मरने में, खून

बहाने में, तलवार तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गयी। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देश काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई तभी एक नया स्वरूप लेकर आयी, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गये।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद ब खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। बन्दूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाय। गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परन्तु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हजारों वर्ष बर्फ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे खुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है परन्तु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह को छोड़कर जीवन की तहों में घुसो तब नये रंग खिलेंगे।

-सरदार पूर्ण सिंह

बहाने में, तलवार तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गयी। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देश काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई तभी एक नया स्वरूप लेकर आयी, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गये।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद ब खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। बन्दूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाय। गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परन्तु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हजारों वर्ष बर्फ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे खुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है परन्तु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह को छोड़कर जीवन की तहों में घुसो तब नये रंग खिलेंगे।

-सरदार पूर्ण सिंह

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी सन्1881 ई० को में एक सिख परिवार में हुआ था। ये पेशे से अध्यापक थे। विचार और भावात्मकता इनके निबन्धों की मुख्य विशेषताएँ हैं। 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता', 'आचरण की सभ्यता' आदि इनके प्रसिद्ध निबन्ध हैं। इनका निधन सन् 1931 ई० को हुआ।

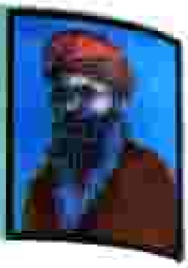

शब्दार्थ

तिरस्कार = अपमान, अनादर। **शेखी** = हेकड़ी, शान। **काफिर** = ईश्वर को न मानने वाला, सत्य को छिपाने वाला। **कलाम** = वाणी, शब्द, वार्तालाप। **अटक** = सिन्धु नदी। **नेपोलियन** = फ्रांस का महान योद्धा (राजा)। **सत्वगुण** = सादगी और सच्चाई से युक्त। **'सत्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या'** = यहाँ लेखक फ्रांस की वीरांगना 'जोन ऑफ आर्क' का उल्लेख कर रहा है, जिसने फ्रांस पर चढ़ाई करने वाले शत्रुओं का डट कर मुकाबला किया और उन्हें परास्त किया। **शिकस्त** = पराजय, हार। **अभिव्यक्ति** = प्रकट होना, प्रकाशन, व्यक्त होना। **अन्तः प्रेरणा** = अपने मन की प्रेरणा। **अरण्य** = जंगल, वन। **बुजदिली** = कायरता। **कुदरत** = प्रकृति।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

किसी भी साहसपूर्ण कार्य को बहादुरी से करना वीरता कहलाती है। सोचिए और लिखिए कि आपके आस-पास घटने वाली वे कौन-कौन सी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें आप बहादुरी का परिचय दे सकते हैं।

विचार और कल्पना

1- वीर पुरुष की तुलना बरसने वाले बादल से और कायर पुरुष की तुलना गरजने वाले बादल से क्यों की गयी है ?

2- 'सच्चा वीर' बनने के लिए आप अपने भीतर किन गुणों को विकसित करेंगे ?

3- 'वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते'-आप इस बात से सहमत हैं या असहमत कारण सहित स्पष्ट करें।

निबन्ध से

1- किसने क्या कहा ? कोष्ठक में दिये गये नामों से चुनकर वाक्य के सामने लिखिए -

(महाराजा रणजीत सिंह, मंसूर, नेपोलियन, बादशाह)

(क) 'अनलहक' (अहं ब्रस्मास्मि)। ....

(ख) मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। ....

(ग) अटक के पार जाओ। ....

(घ) 'आल्प्स है ही नहीं'। ....

2- लेखक के अनुसार दुनिया किस पर खड़ी है -

(क) धन और दौलत पर।

(ख) ज्ञान और पांडित्य पर।

(ग) हिंसा और अत्याचार पर।

(घ) धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर।

3- अपने अन्दर की वीरता को जगाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उपयुक्त कथन पर सही (√) का चिह्न लगाइए-

(क) हथियारों को एकत्र करना चाहिए।

(ख) वाद-विवाद करना चाहिए।

(ग) सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए।

(घ) झूठी बातें करनी चाहिए।

4- सच्चे वीर पुरुष में कौन-कौन से गुण होते हैं ?

5- बादशाह द्वारा जान से मारने की धमकी देने पर गुलाम ने क्या कहा ?

6- शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाने पर लोग मारे डर के अधमरे क्यों हो जाते हैं ?

7- लेखक ने वीरों को देवदार के वृक्षों के समान क्यों कहा है ?

भाषा की बात

1- निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -

डर से अधमरा होना, छाती ठोंककर आगे बढ़ना, रास्ता साफ होना, रंग चढ़ना, दिल को बाँध देना।

2- आजाद, गुलाम, बादशाह, कैदी, फौज, दरिया और कुदरत उर्दू के शब्द हैं। हिन्दी में इनके समानार्थी शब्द लिखिए।

3- 'सत्त्व' शब्द में 'त्व' प्रत्यय जुड़कर सत् + त्व = सत्त्व बन गया है। नीचे लिखे शब्दों में 'त्व' जोड़कर नये शब्द बनाइए -

महत्, प्रभु, तत्, वीर।

4- विलोम या निषेध के अर्थ में कुछ शब्दों के पूर्व 'अ' या 'अन्' जुड़ जाता है, जैसे-'सम्भव' से 'असम्भव' और 'आवश्यक' से 'अनावश्यक' शब्द बनता है। 'अन्' का प्रयोग उस समय होता है, जब शब्द के आरम्भ में कोई स्वर हो। अ, अन् की सहायता से नीचे लिखे शब्दों का विलोम शब्द बनाइए -

उपस्थित, स्थायी, साधारण, समान, उदार।

5- 'आल्प्स' शब्द आ + ल् + प् + स् + अ से बना है। इसमें ल्, प्, स् क्रम से तीन व्यंजन आये हैं, इन्हें व्यंजनगुच्छ कहा जाता है। पाठ से इस प्रकार के व्यंजनगुच्छ वाले शब्द चुनकर लिखिए।

पढ़ने के लिए-

नीचे दी गयी कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ-
जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से जाए,
एक हिलोर उधर से जाए,
        कंठ रुका है महानाश का
        मारकगीत रुद्ध होता है,
        आग लगेगी क्षण में हृत्तल में
        अब क्षुब्ध-युद्ध होता है।
झाड़ और-झंखाड़ दग्ध है
इस ज्वलंत गायन के स्वर से ,
रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है,
निकली मेरी अन्तरता से।

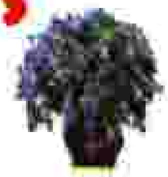

masterjeeonline.com

पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

(इस कविता के माध्यम से कवि ने पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा दी है।)

बहुत दिनों से सोच रहा था, थोड़ी-सी धरती पाऊँ
उस धरती में बाग-बगीचा, जो हो सके लगाऊँ,
खिलें फूल-फल, चिड़ियाँ बोलें, प्यारी खुशबू डोले
ताज़ी हवा जलाशय में अपना हर अंग भिगो ले।

हो सकता है पास तुम्हारे, अपनी कुछ धरती हो
फूल-फल लदे अपने उपवन हों, अपनी परती हो,
हो सकता है छोटी-सी क्यारी हो, महक रही हो
छोटी-सी खेती हो, जो फसलों से दहक रही हो।

हो सकता है कहीं शांत चौपाए घूम रहे हों
हो सकता है कहीं सहन में पक्षी झूम रहे हों,
तो विनती है यही, कभी मत उस दुनिया को खोना
पेड़ों को मत कटने देना, मत चिड़ियों को रोना।

एक-एक पत्ती पर हम सबके सपने सोते हैं
शाखें कटने पर वे भोले शिशुओं-सा रोते हैं,
पेड़ों के संग बढ़ना सीखो, पेड़ों के संग खिलना
पेड़ों के संग-संग इतराना, पेड़ो के संग हिलना।

बच्चे और पेड़ दुनिया को हरा-भरा रखते हैं
नहीं समझते जो, वे दुष्कर्मों का फल चखते हैं,
आज सभ्यता वहशी बन, पेड़ों को काट रही है
ज़हर फेफड़ों में भर, इंसानो को बाँट रही है।

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितम्बर सन् 1927 ई० को बस्ती में हुआ था। ये नयी कविता के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इनके काव्य में प्रगतिशील चेतना की प्रधानता है। **'कुआनो नदी'**, **'गर्म हवाएँ'** तथा **'खूँटियों पर टँगे लोग'** **'कविताएँ-एक'** तथा **'कविताएँ-दो'** **'काठ की घंटियाँ'**, **'बाँस का पुल'**, **'बिल्ली के बच्चे'** इनकी रचनाएँ हैं। इन्होंने निबन्धों की भी रचना की है। इनका देहावसान सन 1983 ई० को हुआ।

शब्दार्थ

दहक=आग की लपट। **सहन**= आँगन। **जलाशय**=तालाब। **अंग**=हिस्सा/भाग। **दुष्कर्म**=बुरे कर्म। **वहशी**=असभ्य, बर्बर।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- पेड़ में पानी डालते हुए माली का चित्र बनाइए और रंग भरिए।

2- नीचे लिखे गये शब्दों की सहायता से आप भी एक तुकान्त कविता बनाइए-

खोना, रोना, काट, बाँट, हरा, भरा

3- अपने विद्यालय/घर में एक पेड़ लगाइए और उसकी देखभाल नियमित कीजिए।

विचार और कल्पना

1- अगर पेड़ न होंगे तो मनुष्य का जीवन कैसा हो जायेगा? इस संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

2- यदि पेड़ पौधे बोलने लगें तो वे अपनी कौन-कौन सी समस्या बतायेंगे ?

कविता से

1- "बहुत दिनों से सोच रहा था, थोड़ी-सी धरती पाऊँ" से कवि का क्या आशय है ?

2- कविता में कवि की क्या चिन्ता है ?

3- कवि क्या विनती कर रहा है ?

4- बच्चे और पेड़ संसार को हरा-भरा किस प्रकार रखते हैं ?

भाषा की बात

1- क्रिया के जिस रूप से ज्ञात होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है, उसे **'प्रेरणार्थक क्रिया'** कहते हैं, जैसे-पढ़ना-पढ़वाना। निम्नलिखित क्रिया शब्दों से प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए-

खेलना, रखना, घूमना, काटना, बनाना, लिखना, देखना, पिलाना।

2- जहाँ पर वर्णों की आवृत्ति से काव्य की शोभा बढ़ती हो वहाँ **अनुप्रास अलंकार** होता है। उदाहरण के लिए-संग-संग, एक-एक, बाग-बगीचा, फूल-फल आदि। आप अपनी पुस्तक से खोजकर अनुप्रास अलंकार के दो अन्य उदाहरण लिखिए।

पाठ 5

567GK3

अपराजिता

(प्रस्तुत पाठ में एक दिव्यांग लड़की के अदम्य साहस एवं विलक्षण प्रतिभा का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति से विपरीत परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।)

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गयी। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हीलचेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गयी। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हीलचेयर तक पहुँच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किये चली जा रही हो।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गयी। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना

से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई०ए०एस० की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने

उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गये, पर बायाँ हाथ चला गया। वह विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंजिल की शरण गही है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिये। इधर चन्द्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल, प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ।

'मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बतायेंगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से सम्बन्धित कुछ सामग्री मिल सकेगी ?'

'मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फेलोशिप मिल सकती है ?'

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी निरन्तर प्रतिभा डूबती जा रही है। आजकल वह आई०आई०टी० मद्रास (चेन्नई) में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा, अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

'मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बना कर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निपटा लेती हूँ।'

उसने मुझे तस्वीरें दिखायीं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाये बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज से उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ० चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, 'हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच०डी० के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाय तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।' डॉ० चन्द्रा और उनकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती टी० सुब्रह्मण्यम् को पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन-साधना की और इस साधना का सुखद अन्त हुआ 1976 में, जब चन्द्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में, दिव्यांग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ० चन्द्रा प्रथम भारतीय हैं।

'जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा- 'आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गरदन ही हिला पायेगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम का कंठ अवरुद्ध हो

गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगी, 'मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपेडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गयी।'

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गयी, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसकी स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गयी थी। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

'नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्', मदर ने कहा, 'हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हीलचेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा ?'

'आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।' और फिर पूरी कक्षाओं में दिव्यांग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चन्द्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी० एस-सी० किया, प्राणिशास्त्र में, एम०एस-सी० में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानियाँ से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ० चन्द्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लेदर जैकेट से कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

'मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें ?'

मैंने जब ये कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आयीं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पायी, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आयी थी। फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाये। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैर का भी काम करते हों, निरन्तर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम दिव्यांग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रखकर वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ० चन्द्रा, प्रधानमन्त्री के साथ मुस्कुराती खड़ी डॉ० चन्द्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चन्द्रा और व्हील चेयर में लेदर

ग्रहण करती डॉ० चन्द्रा।

जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ० चन्द्रा। जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ... के सफल जीवन की कहानी

'मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ० मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कह... गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्यचिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।' किन्तु डॉ० चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, 'मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ० चन्द्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।'

चन्द्रा के अलबम के अन्तिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे०सी० बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं - 'वीर जननी' का पुरस्कार। बहु... बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी, पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगों, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उ... अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, 'ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।'

-गौरा पन्त 'शिवानी'

गौरा पन्त 'शिवानी' हिन्दी की लोकप्रिय कथा लेखिका हैं। इनका जन्म 17 अक्टूबर सन् 1923 ई० को राजकोट गुजरात में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शान्तिनिकेतन में हुई। कोलकाता विश्वविद्यालय से इन्होंने सम्मान सहित बी०ए० आनर्स उत्तीर्ण किया। इनकी संगीत के प्रति विशेष अभिरुचि रही। इन्हें जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 'पद्मश्री' पुरस्कार प्रमुख है। 'कृष्णकली', 'चौदह फेरे', 'पाताल भैरवी', 'श्मशान चम्पा', 'कैंजा', 'यात्रिक' आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी मृत्यु 21 मार्च सन् 2003 में हुई थी।

शब्दार्थ

अपराजिता= जो हारी न हो। **विलक्षण**= अद्भुत। **विच्छिन्न** =अलग किया हुआ। **अभिशप्त**= शा... से ग्रस्त। **काया**= शरीर। **नियति**= भाग्य। **आघात**= चोट। **देवांगना** =देवी, अप्सरा। **मेधावी**= बुद्धिमान। **नूरमंजिल**= लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल। **उत्फुल्ल**= प्रसन्न। **विषाद**= उदासी, दुःख। **उत्कट**= प्रबल। **जिजीविषा**= जीने की इच्छा। **ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट**= औषधि अनुसंधान संस्थान। **माइक्रोबायोलाजी**= जीवाणु विज्ञान। **बायोडाटा**= जीवन विवरण और उपलब्धियों का लेखा-जोखा। **फेलोशिप**= शोध छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति। **कंठगत**= गले में अटके हुए। **पटुता**= निपुणता। **यातनाप्रद**= कष्ट देने वाला। **पक्षाघात**= लकवा रोग। **सर्वांग**= सारा अंग, पूरा भाग। **अचल**= निष्क्रिय। **अभिशाप**= बड़ा शाप। **आर्थोपैडिक**= हड्डियों से सम्बन्धित। **उपचार**= इलाज। **जिरह-बख्तर**= लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। **क्षत-विक्षत**= बुरी तरह घायल। **आभामंडित** = तेज से भरा हुआ। **लेदर** =चमड़ा। **उल्लास**= उमंग, खुशी। **पोलियो**= यह एक संक्रामक रोग है, जो

अधिकतर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में होता है। यह शरीर के किसी अंग को अपाहिज कर देता है। इससे बचाव का एकमात्र तरीका है कि शून्य से पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो अभियान के हर चक्र में पोलियो की दो बूँद दवा अवश्य पिलायी जाय।

"दो बूँद जिन्दगी की"

प्रश्न-अभ्यास

विचार और कल्पना

चलती ट्रेन में चढ़ने से लखनऊ के युवक का हाथ कट गया। रेलवे प्लेटफार्म पर कुछ निर्देश लिखे होते हैं, जैसे-

(क) चलती ट्रेन में न चढ़ें न उतरें।

(ख) रेलवे आपकी सम्पत्ति है, इसकी रक्षा करें।

(ग) सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

(घ) ज्वलनशील पदार्थों को लेकर यात्रा न करें।

- इन निर्देशों का मतलब बताइए। यह भी कि इन निर्देशों का पालन क्यों करना चाहिए ?
- इस प्रकार के अन्य जागरूकता संबंधी निर्देशों का पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

कुछ करने को

1- (क) प्रसिद्ध लेखिका और समाज सेविका हेलेन केलर (सन् 1880 - 1968 ई०, अमेरिका) जिनकी डेढ़ वर्ष की अवस्था में बचपन की एक गम्भीर बीमारी के कारण देखने और सुनने की शक्ति जाती रही। वे भारत भी आयी थीं। उनके बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

(ख) हमारे देश में ऐसे कई खिलाड़ी,कलाकार,वैज्ञानिक,पर्वतारोही हुए हैं जिन्होने दिव्यांगता के बावजूद देश का नाम रौशन किया। उनके बारे में जानकारी संकलित कीजिए।

2- आपके आस-पास यदि कोई दिव्यांग व्यक्ति, जिन्होंने किसी कार्य में विशेष सफलता अर्जित की हो तो उनकी दिव्यांगता का कारण और सफलता के बारे में चर्चा कर अपनी कक्षा में सुनाइए।

3- इस पाठ की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ? लिखिए।

कहानी से

1- कौन-कौन से कथन सही हैं ? हमें अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है, जब-

(क) दूसरों के दु:ख अपने दु:खों से बड़े लगने लगते हैं।

(ख) हमारे कष्टों से बड़े कष्ट को कोई हँसकर झेलता दिखाई देता है।
(ग) अपने कष्टों के लिए विधाता को दोषी मान लेते हैं।
(घ) कष्टों को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

2- लेखिका क्यों चाहती थीं कि लखनऊ का युवक उनकी पंक्तियाँ पढ़े ?

3- डॉ० चन्द्रा की कविताएँ देखकर लेखिका की आँखें क्यों भर आयीं ?

4- डॉ० चन्द्रा ने विज्ञान के अतिरिक्त किन-किन क्षेत्रों में उपलब्धियाँ प्राप्त कीं ?

5- निम्नलिखित कथनों का भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।
(ख) पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है।
(ग) मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे।
(घ) 'चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया'।
(ङ) ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

6- शारदा सुब्रह्मण्यम् को 'वीर जननी' का पुरस्कार क्यों मिला ?

7- इस पाठ की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया ? क्यों ?

भाषा की बात

1- निम्नलिखित शब्दों को 'ब'-'व' के उच्चारण-भेद पर ध्यान रखते हुए शुद्ध रूप में बोलकर पढ़िए।
सुब्रह्मण्यम्, बुद्धिदीप्त, जिजीविषा, विलक्षण, क्षत-विक्षत, विच्छिन्न।

2- 'यातना' शब्द संज्ञा है। उसमें 'प्रद' प्रत्यय जोड़ देने से 'यातनाप्रद' शब्द विशेषण बन जाता है, जिसका अर्थ है- कष्ट देने वाला। नीचे लिखे शब्दों में 'प्रद' जोड़कर नये शब्द बनाइए और उनके अर्थ लिखिए -
कष्ट, आनन्द, लाभ, हानि, ज्ञान।

3- निम्नलिखित वाक्य पढ़िए -
(क) इसके इस जीवन से तो मौत भली है।
(ख) मैंने जब वे कविताएँ देखीं तो आँखें भर आयीं।
वाक्य (क) में 'तो' निपात के रूप में प्रयुक्त है। 'निपात' उस शब्द को कहते हैं, जो वाक्य में कहीं भी रखा जा सकता है, जैसे- पर, भर, ही, तो। किन्तु वाक्य (ख) में 'तो', 'जब' के साथ 'तब' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'क' और 'ख' की भाँति दो-दो वाक्य बनाकर लिखिए।

4- 'वह बैसाखियों से ही ह्वील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी।' इस वाक्य में दो वाक्य हैं, दोनों वाक्य स्वतंत्र अर्थ दे रहे हैं, किन्तु ये वाक्य 'और' से जुड़े हुए हैं। ऐसे वाक्य को **संयुक्त वाक्य** कहते हैं। संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य होते हैं, जो 'और', 'किन्तु' या 'इसलिए' से जुड़े रहते हैं। संयुक्त वाक्य के कोई दो उदाहरण पाठ से चुनकर लिखिए।

5- पाठ में आये हुए अंग्रेजी भाषा के शब्दों को छाँटिए और लिखिए।

इसे भी जानें-
नोबेल पुरस्कार- विश्व का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

पाठ 6

56GCLQ

बिहारी के दोहे

(प्रस्तुत पाठ में नीति एवं भक्ति के दोहों के माध्यम से कवि ने नैतिक एवं व्यावहारिक जीवन-मूल्यों को स्पष्ट किया है।)

नीति

बड़े न हूजै गुनन बिन, विरद-बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़्यौ न जाय।।

अति अगाध, अति ओथरो, नदी, कूप, सर बाइ।
सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।।

ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगौ सतर ह्वै गैन।
दीरघ होहिं न नैकहूँ, फारि निहारै नैन।।

कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौराय जग, इहिं पाये बौराय।।

दिन दस आदरु पाइकै, करि लै आपु बखानु।
जौ लगि काग! सराध पखु, तौ लगि तौ सनमानु।।

भक्ति

बन्धु भये का दीन कै, को तार्‌यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।।

मोहन मूरति स्याम की, अति अद्‌भुत गति जोइ।
बसतु सुचित-अन्तर तऊ, प्रतिबिम्बितु जग होइ।।

भजन कह्यौ, तातै भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरि भजन जातैं कह्यौ, सो तैं भज्यौ गँवार ।।

-बिहारी

बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ, गोविन्दपुर ग्राम में सन् 1595 ई० को हुआ था। वे जयपुर नरेश के दरबारी कवि थे। कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह इनके प्रत्येक दोहे पर एक सोने की मुद्रा भेंट करते थे। इनका एकमात्र काव्य-संग्रह 'बिहारी सतसई' है, जो शृंगार प्रधान है। इनका निधन सन् 1663 ई० को हुआ था।

शब्दार्थ

बिरद = यश। **ओछरो** = उथला। **बाइ** = बापी, बावली। **सतर ह्वै** = ऐंठकर। **गैन** = गगन, आकाश। **लगीं** = छूने लगे। **नैकहूँ** = थोड़ा सा। **कनक** = सोना, धतूरा। **सराध पखु** = श्राद्ध पक्ष (क्वार मास के आरम्भिक पन्द्रह दिन)। **तूठे** = प्रसन्न होकर। **भजन कह्यौ** = जिसका गुणगान (भजन) करने के लिए कहा। **तातें भज्यौ** = उससे दूर भाग गये। **भज्यौ न** = भजन नहीं किया। **दूरि भजन जातें** = जिन दुर्गुणों से दूर भागने (रहने) के लिए। **सो तैं भज्यौ गँवार**= ऐ मूर्ख तूने उसी का भजन किया अर्थात् उन्हीं दुर्गुणों को अपनाया।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

रहीम के अतिरिक्त कबीर और तुलसीदास जैसे अन्य भक्तिकालीन कवियों ने भी नीतिपरक दोहों की रचना की है। नीति से सम्बन्धित इनके दो-दो दोहों को पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

विचार और कल्पना

1- 'धतूरे' की अपेक्षा 'सोने' को अधिक मादक क्यों कहा गया है ?

2- नीति के दोहों में कोई न कोई मूल्य छिपा होता है, जैसे-पहले दोहे में 'व्यक्ति अपने गुणों से बड़ा होता है' से सम्बन्धित मूल्य है। इसी प्रकार निम्नलिखित मूल्यों से सम्बन्धित दोहों को ढूँढ़कर लिखिए –

(क) दिखावा करने से बड़प्पन नहीं आता।

(ख) स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

(ग) जिस वस्तु से हमारा कार्य सिद्ध हो, वही महत्त्वपूर्ण है।

(घ) गुण, सौन्दर्य से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कविता से

1- 'नाम बड़ा होने से ही कोई बड़ा नहीं हो जाता' इस कथन की पुष्टि के लिए कवि ने कौन

सा उदाहरण दिया है?

2- कवि ने नदी, कूप, सर, बावली को किस स्थिति में सागर के समान माना है?

3- 'छोटे बड़े नहीं हो सकते' इसके लिए कौन-सा उदाहरण दिया गया है ?

4- कृष्ण की मोहन मूरति क्यों अद्‌भुत है ?

5- पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।

(ख) दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार।

(ग) तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।

भाषा की बात

1- कविता में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों को देखिए और उनके खड़ी बोली के रूप पर ध्यान दीजिए। सो = वह, ताकौ = उसके लिए, ह्वै सकैं = हो सके। नीचे लिखे शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखिए -

तऊ, ताते, जातैं, कह्यौ।

2- 'कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय' में 'कनक' शब्द दो बार आया है। पहले 'कनक' शब्द का अर्थ धतूरा है तथा दूसरे 'कनक' शब्द का अर्थ स्वर्ण है। कविता में जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ भिन्न- भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

नीचे लिखी पंक्तियों में अलंकार स्पष्ट कीजिए-

(क) भजन कह्यौ, ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार ।।

(ख) 'इस धरा का इस धरा पर ही धरा रह जायेगा।'

(ग) 'काली घटा का घमण्ड घटा।'

इसे भी जानें

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी है।

56Q8ND

जूलिया

प्रस्तुत एकांकी में एक भोली-भाली गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा और विवशता का सजीव चित्रण है, वहीं दूसरी ओर शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश भी है।)

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है)

जूलिया- (दबे स्वर में) आपने मुझे बुलाया था मालिक?

गृहस्वामी- हाँ हाँ......बैठ जाओ जूलिया.....खड़ी मत रहो।

जूलिया- (बैठती हुई) शुक्रिया।

गृहस्वामी- हाँ तो जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें अब तक जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे कभी नहीं माँगोगी। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ। हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न?

जूलिया- (विनीत स्वर में) जी नहीं मालिक, चालीस रूबल।

गृहस्वामी- नहीं भाई, तीस ..... ये देखो डायरी (पन्ने पलटते हुए) मैंने इसमें नोट कर रखा है। मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ। तुम से पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल महीना ही देता था। अच्छा, तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं।

जूलिया- (दबे स्वर में) जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।

गृहस्वामी- क्या कह रही हो जूलिया? ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। हाँ, तो दो महीने के बनते हैं- अंऽऽ......साठ रूबल। लेकिन साठ रूबल तभी बनतें हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो.... तुमने इतवार को छुट्टी मनायी है। उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया। सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गयी हो....और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने ले जाना कोई काम नहीं होता.... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं। ठीक है न?

जूलिया- (दबे स्वर में) जी, आप कह रहे हैं तो.....ठीक..... (रुक जाती है)

गृहस्वामी- अरे भाई.... मैं क्या गलत कह रहा हूँ.....हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ-यानी

बारह दिन तुमने काम नहीं किया- यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया। पिछले हफ्ते शायद तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्टी दे दी थी। तो बारह और सात-उन्नीस। उन्नीस नागे। हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नीस.....कितने रहते हैं...अम्....इकतालीस,. ...इकतालीस रूबल ! ठीक है?.....

जूलिया- (रुआँसी हो जाती है। रोते स्वर में) जी हाँ।

गृहस्वामी- (डायरी के पन्ने उलटते हुए) हाँ, याद आया...पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी। प्याली बहुत कीमती थी। मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है।.....मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है. ....खैर मेरा भाग्य !....हाँ, तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा... अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दिया और तुम्हारी नजर बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ किसी टहनी की खरोंच लगने से उसकी जैकेट फट गयी। दस रूबल उसके गये। इसी तरह तुम्हारी लापरवाही की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नये जूते चुरा लिये.... (रुक कर) तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं?

जूलिया- (मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए) जी सुन रही हूँ।

गृहस्वामी- हाँ ठीक है। अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभाल करना है। तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं। तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या नहीं?..मैं ठीक कह रहा हूँ न ! ...... तो जूतों के पाँच रूबल और कट गये.... और हाँ, याद आया, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिये थे.....।

जूलिया- (लगभग रोते हुए) जी नहीं, आपने कुछ नहीं...(आगे नहीं कह पाती)

गृहस्वामी- अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी? (डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)

जूलिया- (आँसू पोंछती हुई) आप कह रहे हैं तो आपने दिये ही होंगे।

गृहस्वामी- (कड़े स्वर में) दिये होंगे नहीं-दिये हैं....तो ठीक है। घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से.... अमु....अमु.... बचे चौदह। क्यों हिसाब ठीक है न ?

जूलिया- (आँसू पीती हुई) (काँपती आवाज में) मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वो मुझे मालकिन ने दिये थे.....सिर्फ तीन रूबल। ज्यादा नहीं।

गृहस्वामी-(जैसे आसमान से गिरा हो) अच्छा !.....और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बतायी तक नहीं !.....देखो, तुम न बताती तो हो जाता न अनर्थ !..... खैर, देर से ही सही.....मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ...(डायरी खोलकर उसमें यूँ ही कुछ लिखता है) हाँ तो, चौदह में से तीन और घटा दो-बचते हैं, ग्यारह रूबल! (जेब से निकालकर) तो लो भाई, ये रही तुम्हारी तनख्वाह..... ये रहे ग्यारह रूबल (देते हुए) सँभाल लो...... गिन लो, ठीक है न?

जूलिया- (काँपते हाथों से रूबल लेती है। काँपते ही स्वर में) जी धन्यवाद !

गृहस्वामी- (सोफे से उछलकर खड़ा हो जाता है और भारी आवाज करता हुआ कमरे में क्रुद्ध शेर की तरह एक-दो चक्कर लगाता है) 'धन्यवाद !'..... जूलिया तुमने 'धन्यवाद' कहा न !......(गुस्से से) धन्यवाद किस बात का?

जूलिया- आपने मुझे पैसे दिये- इसके लिए धन्यवाद।

गृहस्वामी- (अपना गुस्सा नहीं सँभाल पाता) (ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए), तुम...... तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो जूलिया? जब कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है....तुम्हें धोखा दिया है...... तुम्हारे पैसे हड़प लिये हैं....और तुम...तुम इसके बावजूद तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो ! (गुस्से में आवाज काँपने लगती है)

जूलिया- जी हाँ मालिक....

गृहस्वामी- (गुस्से से तुतलाने लगता है) 'जी हाँ मालिक ! जी हाँ मालिक ! .....क्यों? क्यों जी हाँ मालिक?

जूलिया- (डर जाती है भयभीत स्वर में) क्योंकि इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया......आप कुछ तो दे रहे हैं।

गृहस्वामी- (क्रोध के कारण काँपते, उत्तेजित स्वर में) उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा तक नहीं दिया जूलिया, मुझे ये बात जानकर जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा है......(स्वर धीमा कर) जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मजाक किया.....पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा नहीं मारूँगा...(जेब से निकाल कर) ये हैं तुम्हारे अस्सी रूबल !..... मैं अभी इन्हें तुम्हें दूँगा.....लेकिन इससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहूँगा-'जूलिया, क्या ये जरूरी है कि इन्सान भला कहलाने के लिए, इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाये कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियाँ सहता जाये?.....नहीं जूलिया, नहीं.....इस तरह खामोश

रहने से काम नहीं चलेगा। अपने को बचाये रखने के लिए, तुम्हें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा पूरी शक्ति के साथ.... मत भूलो जूलिया, इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है....कोई स्थान नहीं है....।

-अन्तोन चेखोव

अन्तोन चेखोव का जन्म 18 जनवरी सन् 1860 ई० को तैगानराग रूस में हुआ था। ये एक नाटककार हैं। इनके द्वारा लिखित नाटकों की विषय-वस्तु में संसार में अपमान,अन्याय और उत्पीड़न के प्रति संघर्ष और विरोध करने की चेतना समाहित है। चेखोव का निधन 15 जुलाई सन् 1904 ई० को हुआ था।

शब्दार्थ

गवर्नेस = सेविका, जो छोटे बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उनकी देखरेख भी करती हो। **रूबल** = रूस की मुद्रा। **भीरु** = डरपोक। **भोंदा** = मोटी अक्ल का। **क्रूर** = निर्दय। **निर्मम** = ममता-रहित, कठोर।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- (बैठती हुई), (दबे स्वर में), (रुआँसी होकर), (डायरी के पन्ने पलटते हुए)....... जैसे भाव व दृश्य के संकेत एकांकी के बीच-बीच में दिये गये हैं, जिनसे एकांकी के मंचन में मदद मिलती है। इसी प्रकार के भाव-दृश्य संकेतों का प्रयोग करते हुए माँ और पुत्र में बातचीत के आधार पर एक लघु एकांकी की पटकथा (स्क्रिप्ट) तैयार कीजिए।

2- निम्नांकित प्रारूप के आधार पर तनख्वाह की कटौती का विवरण तैयार कीजिए-

क्रमांक	कारण	काटी गयी धनराशि (रूबल में)
1-	नौ इतवार	9 रूबल
....	....	....
....	....	....

अपने उत्तर का मिलान पाठ में की गयी कुल कटौती से कीजिए।

3- घर में भी आपके माता-पिता घर की तमाम चीजों का हिसाब-किताब रखते होंगे। बताइए कि वे घर पर विभिन्न प्रकार के हिसाब किस-किस प्रकार तैयार करते हैं ? आप इसमें उनकी क्या मदद करते हैं ?

4- रूस की मुद्रा 'रूबल' है। इसी प्रकार बांग्लादेश,चीन,अमेरिका,जापान और पाकिस्तान की मुद्रा के बारे में पता कीजिए।

5- इस एकांकी का कक्षा में मंचन कीजिए।

6- एकांकी की कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

विचार और कल्पना

1-"इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया, आप कुछ तो दे रहे हैं।" इस वाक्य के भाव के आधार पर बताइए कि जूलिया ने किस-किस तरह के लोगों के बीच गवर्नेस का काम किया होगा ?

2- यदि इन लोगों कि जगह आप होते तो जूलिया को पैसें देते अथवा नही ? क्यों ?

3- यदि आप जूलिया के स्थान पर होते तो ऐसे लोगों से कैसा व्यवहार करते ?

एकांकी से

1- गृहस्वामी ने 'उन्नीस नागे' किस प्रकार गिनाये और इसके लिए कितने रूबल की कटौती की?

2- गृहस्वामी के अनुसार जूलिया के कारण क्या-क्या नुकसान हुआ था?

3- गृहस्वामी ने सत्ताइस रूबल किस आधार पर काट लिये थे?

4- गृहस्वामी को अंत में जूलिया पर गुस्सा क्यों आया और उसने जूलिया को क्या समझाया?

5- 'इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

6- एकांकी के कौन से संवाद आपको सबसे अच्छे लगे, क्यों ?

भाषा की बात

1- पाठ में अनेक जगहों पर अंग्रेजी तथा अरबी-फारसी के शब्द आये हैं, जैसे- गवर्नेस, तनख्वाह। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पाठ से छाँटकर उनका वर्गीकरण कीजिए।

2- रीढ़रहित का अर्थ है 'रीढ़ से हीन' इसका विपरीतार्थक अर्थ होगा- 'रीढ़युक्त'। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'रहित' और 'युक्त' लगाकर शब्द बनाइए-

प्राण, धन, बल, यश।

3- निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए-

अन्याय, क्रूर, मूर्ख, दुर्बल, करुण।

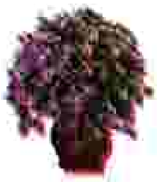

पाठ 8

धानों का गीत

(प्रस्तुत गीत में किसान की तान में सुर मिलाकर धान, चाँदनी एवं गाँव के विश्वास को बड़ी ही सरलता से प्रस्तुत किया गया है। कवि ग्रामीण परिवेश के अन्तर्गत किसान के स्वर में बादल का स्वागत करता है।)

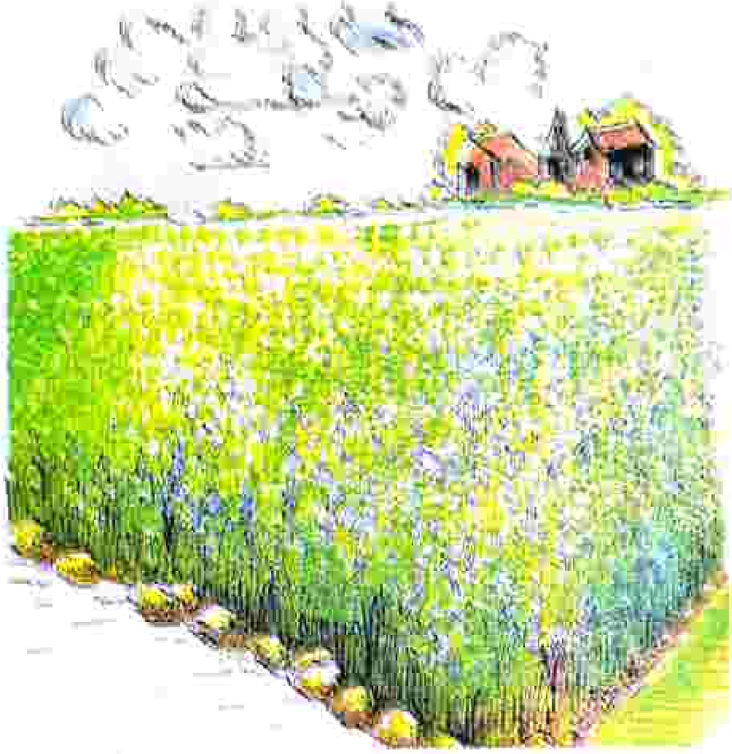

धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे
उगेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर !
चन्दा को बाँधेंगे कच्ची कलगियों
सूरज को सूखी रेत में,
आना जी बादल जरूर !
आगे पुकारेगी सूनी डगरिया
पीछे झुके वन-बेंत,
संझा पुकारेंगी गीली अँखड़ियाँ
भोर हुए धन-खेत,
आना जी बादल जरूर,
धान कँपेंगे कि प्रान कँपेंगे
कँपेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर !
धूप ढरे तुलसी-वन झरेंगे

साँझ घिरे पर कनेर,
पूजा की बेला में ज्वार झरेंगे,
धान-दिये की बेर,
आना जी बादल जरूर,
धान पकेंगे कि प्रान पकेंगे
पकेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर !

-केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह का जन्म 19 नवम्बर सन् 1934 ई० को बलिया जनपद के चकिया गाँव में हुआ था। कई स्थानों पर अध्यापन कार्य करते हुए अन्त में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रहे। 'अभी बिल्कुल अभी', 'यहाँ से देखो' 'जमीन पक गयी है', 'अकाल में सारस', 'बाघ' आदि आपके काव्य संग्रह हैं। आपने आरम्भ में नवगीतों की रचना की। आगे चलकर आप आधुनिक बोध तथा प्रगतिशीलता से जुड़ गये। सन् 2013 में आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका निधन 19 मार्च 2018 ई० को हुआ।

शब्दार्थ

प्रान = प्राण। **कलगियों** = धान की कोमल बालियाँ। **अँखड़ियाँ** = आँखें। **कनेर** = पीले रंग का एक फूल।

कुछ करने को

1- यह कविता 'आना जी बादल जरूर' पंक्ति को आधार बनाकर लिखी गयी है। इसी प्रकार 'विद्यालय जायेंगे जरूर' को आधार बनाकर चार पंक्तियों वाली कविता की रचना कीजिए।

2- इस कविता को लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

विचार और कल्पना

बादल और वर्षा कृषक-जीवन के आधार होते हैं। लहलहाते धान के खेतों को देखकर किसान प्रसन्न हो जाता है। वर्षा ऋतु के कुछ विशेष नक्षत्रों में वर्षा अधिक होने पर धान की फसल अच्छी होती है। बताइए कि किन नक्षत्रों में वर्षा अधिक होती है।

गीत से

1- बादल का स्वागत कौन-कौन और कब-कब कर रहे हैं ?

2- पंक्तियों के भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) चंदा को बाँधेंगे कच्ची कलगियों, सूरज को सूखी रेत में।

(ख) संझा पुकारेंगी गीली अँखड़ियाँ, भोर हुए धन-खेत।

(ग) पूजा की बेला में ज्वार झरेंगे, धान-दिये की बेर।

3- धान को प्रान क्यों कहा गया है ? समझाकर लिखिए।

4- धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे ?
धान कँपेंगे की प्रान कँपेंगे? और
धान पकेंगे कि प्रान पकेंगे? इन तीनों पंक्तियों के भावार्थ की तुलना करते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि 'उगेंगे', 'कँपेंगे' और 'पकेंगे' से क्या आशय है ?

भाषा की बात

1- जहाँ प्रकृति की वस्तुओं को मानवीय व्यवहार की तरह दिखाया जाता है, वहाँ **मानवीकरण** होता है, जैसे- संझा पुकारेंगी। इसी तरह कविता में मानवीकरण के अन्य उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

2- कविता में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे- प्रान और चन्दा। इनका तत्सम रूप क्रमशः 'प्राण' और 'चन्द्रमा' है। कविता में आये अन्य तद्भव शब्दों को छाँटिए तथा उनका तत्सम रूप लिखिए।

पाठ 9

हिन्दी विश्वशांति की भाषा है

(प्रस्तुत पाठ 'हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से रत्नावली कौशिक की बातचीत' पर आधारित है।)

जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई० को जन्मे साइजी माकिनो 36 वर्ष की उम्र में एक बार भारत जो आये तो फिर यहीं के होकर रह गये। आये तो गाँधीजी के सेवाग्राम में स्थित हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ में पशुचिकित्सक के रूप में थे पर हिन्दुस्तान का ऐसा रंग चढ़ा कि फिर लौटने का मन ही नहीं हुआ। खादी क्या अपनायी सम्पूर्ण चिन्तन ही गांधीमय हो चला। आइए मिलते हैं- महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस अनन्य भक्त और हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से -

प्रश्न- भारत आने के पीछे क्या विशेष उद्देश्य था?

उत्तर- सन् 1958 ई० की बात है। मुझे फुजिई गुरु जी ने वर्धा स्थित सेवाग्राम में आने का आमंत्रण दिया। वे सन् 1931 ई० से गांधी जी के सहयोगी थे और सेवाग्राम में ही रहते थे। यहाँ एक पशुचिकित्सक की आवश्यकता थी। सोचा कुछ साल के लिए भारत चला जाता हूँ। आज 45 वर्ष होने चले हैं, अब तो भारत ही मेरा घर है। बाद में फुजिई गुरु जी ने ही मुझे रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास शान्तिनिकेतन भेजा। शान्तिनिकेतन में गुरुदेव के साथ रहकर जीवन का अर्थ और सोच की धारा बदल गयी।

प्रश्न- हिन्दी सीखने और पढ़ने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ?

उत्तर-अप्रैल सन् 1959 ई० में पंढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के बाद विनोबा जी ने मुझसे कहा कि मैं सेवाग्राम लौटकर हिन्दी सीखना प्रारम्भ करूँ और मैंने हिन्दी सीखना आरम्भ कर दिया। उन दिनों सेवाग्राम के प्रेसीडेन्ट आर्यनायकम् हुआ करते थे। उन्होंने आगरा के एक अच्छे हिन्दी शिक्षक को मेरे पास भेजा। मुझ जैसे विदेशी के लिए हिन्दी सिखाना बहुत मुश्किल काम था। मुझे खराब उच्चारण के लिए बहुत डाँट पड़ती थी। पर धीरे-धीरे मैंने हिन्दी बोलना और पढ़ना सीख लिया। मेरी पत्नी 'युकिको' को जिसे सेवाग्राम में 'सुजाता' नाम दिया गया था, हिन्दी सीखने के लिए 'वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में भेज दिया गया। छह महीने तक हॉस्टल में रहकर हिन्दी पढ़ती रही। शायद जापानियों में वही हिन्दी की सर्वप्रथम छात्रा रही हैं।

प्रश्न- सेवाग्राम में रहकर तो आप चरखा चलाना भी सीख गये होंगे ?

उत्तर- सेवाग्राम में गोशाला में इतना काम रहता था कि चरखे की तरफ ध्यान ही नहीं जाता था। आज मैं चरखे के महत्त्व को समझ सकता हूँ बल्कि आज के युग में फिर से चरखे के प्रचार और प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस करता हूँ।

प्रश्न- गुरुदेव टैगोर का साथ और शान्तिनिकेतन का वातावरण आपको कैसा लगा ?

उत्तर- गुरुदेव के व्यक्तित्व और शान्तिनिकेतन के परिसर के प्राकृतिक सौन्दर्य ने मुझे इतना

आकर्षित किया कि मेरा कहीं जाने का मन ही नहीं करता था। हिन्दी-भवन के सामने वाले छात्रावास में रहकर केवल पढ़ता रहता था। शांतिनिकेतन का परिवेश इतना शांत था कि पुस्तकालय में बैठे हुए आप घड़ी की आवाज स्पष्ट सुन सकते थे। मैंने भी पवित्र भूमि शांतिनिकेतन को अपनी जीवन-साधना का आधार बना लिया। समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुन्दर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की। जो भी हो-- जमाना कितना भी बदल जाए पर शांतिनिकेतन की भूमि में विश्व की तमाम संस्कृतियों को समाये रखने की क्षमता हमेशा रहेगी। यहाँ की प्रकृति स्वयं यहाँ की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहेगी। इसी भूमि में मुझे पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे महानुभावों से शिक्षा और प्रेरणा पाने का अवसर मिला।

प्रश्न– ये बताइए कि आपकी हिन्दी-यात्रा की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर– संच तो यह है कि हिन्दी की कृपा से मेरा जीवन चल पड़ा। वरना रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना मुश्किल हो जाता। उन दिनों ग्वालियर में बिड़ला फैक्ट्री में जापानी तकनीक से एक फैक्ट्री लगायी गयी। जापानी इंजीनियरों को हिन्दी नहीं आती थी और फैक्ट्री में काम करने वाले भारतीयों को जापानी। मुझे बुलाया गया और एक दुभाषिये के रूप में मैंने चार सौ रुपये महीने पर काम करना शुरू कर दिया। यहाँ मैंने चार साल काम किया और हिन्दी में बहुत से लेख लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

प्रश्न– क्या जापानी और हिन्दी साहित्य में कोई समानता है ?

उत्तर– दोनों का लोकसाहित्य लगभग समान है। मणिपुर और राजस्थान की लोककथाएँ जापान की लोककथाओं जैसी ही हैं। इसका कारण है कि जापान की संस्कृति चीन और भारत की मिश्रित संस्कृति है। मैं भारत को दादा और चीन को पिता मानता हूँ। हिन्दी विश्व-शांति की भाषा बने और मैं जीवनपर्यन्त इससे जुड़ा रहूँ, यह मेरी कामना है।

प्रश्न– जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

उत्तर– जापान में भारतीयों और हिन्दी भाषा का बहुत अधिक सम्मान है। जापान की दो नेशनल यूनिवर्सिटी ओसाका और टोकियो में बी० ए० और एम० ए० स्तर पर हिन्दी पढ़ाई जाती है। भारत के लिए यह गौरव का विषय होना चाहिए। यहाँ के लोग भी जापानी सीख रहे हैं। पहले यहाँ सिर्फ सर्टिफिकेट डिप्लोमा कोर्स था अब बी० ए० कोर्स भी है और हर साल बहुत लोग बी० ए० की परीक्षा में बैठते हैं। मेरा यह मानना है कि भाषा देशों को भावना के स्तर पर जोड़ती है। जापानी भाषा में संस्कृत के शब्द भरे पड़े हैं। इन दिनों बंग्ला भाषा भी जापान में जोर पकड़ रही है, क्योंकि कलकत्ता (कोलकाता) एशिया का दरवाजा है। एक समय में सबसे ज्यादा जापानी कलकत्ता में ही रहते थे। अब तो पूरे देश में बिखर गये हैं।

प्रश्न– जापान में और कौन विशिष्ट लोग हिन्दी सेवा में रत हैं ?

उत्तर– प्रो० दोइ ने टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना की। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। प्रो० तोषियोतनाका ने भीष्म साहनी के 'तमस' का जापानी में अनुवाद किया है। प्रो० कोगा ने 'जापानी-हिन्दी कोश' की रचना की है। उन्होंने 'गांधी जी की आत्मकथा' का जापानी में अनुवाद भी किया है। इसके लिए उन्होंने गुजराती भी सीखी। प्रो० मोजोकामी हरसाल हिन्दी का एक नाटक तैयार करते हैं और उसका मंचन करने के लिए भारत आते हैं। प्रो० साकाता ने भी

हिन्दी साहित्य पर बहुत काम किया है।

प्रश्न- आपने भी तो हिन्दी की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का जापानी में अनुवाद किया है ?

उत्तर- हाँ मुझे, भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' बहुत पसंद आया, इसलिए मैंने उसका जापानी में अनुवाद किया।

प्रश्न- इसके अलावा आप ने और भी कई पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर- 'टैगोर और गांधी : एक तुलनात्मक अध्ययन', 'जापानी आत्मा की खोज', 'भारत में चालीस साल : पुनर्विचार और सिंहावलोकन' जैसी कुछ पुस्तकें लिखीं हैं। अभी एक पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हुई है, 'भारत वर्ष में 45 साल मेरी हिन्दी यात्रा'।

प्रश्न- आज की नयी पीढ़ी जो पश्चिम सभ्यता के पीछे भाग रही है। आप उनसे क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर- नयी पीढ़ी अपनी सभ्यता संस्कृति से दूर होती जा रही है, यह बड़े दुःख की बात है। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही काम आती है।

प्रश्न- लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त आपके और कौन-से शौक हैं ?

उत्तर- मुझे जापानी बगीचा लगाना बहुत अधिक पसंद है। जहाँ जाता हूँ, फूल-पत्ती और पेड़ों के साथ दोस्ती कर लेता हूँ। जगह-जगह पेड़ लगाता हूँ, कुछ लोग जापानी फूल लगाने की कला भी सीखने आते हैं।

प्रश्न- अंत में कोई ऐसी बात जो आप अपने पाठकों से कहना चाहेंगे?

उत्तर- मुझे हमेशा इस बात का खेद रहता है कि जितना भारत माता का नमक खाया उतनी उसकी सेवा नहीं की। भारत बहुत बड़ा देश है। उसका दिल भी बहुत बड़ा है। दुनिया का कोई देश उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई० को जन्मे साइजी माकिनो 'हिन्दीभवन' द्वारा 'हिन्दी रत्न' से सम्मानित किये जा चुके हैं। आपने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं। मूलतः आप पशु चिकित्सक थे, बाद में कुछ समय के लिए आपने दुभाषिये का भी कार्य किया।

शब्दार्थ

हॉस्टल = छात्रावास। **परिवेश** = वातावरण। **फैक्ट्री** = कारखाना। **दुभाषिया** = दो भाषाओं का आपसी अनुवाद करने की योग्यता रखने वाला। **जीवन-पर्यन्त** = आजीवन।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- साक्षात्कार, हिन्दी गद्य की एक लघु विधा है। इसमें किसी क्षेत्र में विशेष उपलब्धि पाये हुए व्यक्ति से बातचीत करके उसके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी पाठक या श्रोता को

दी जाती हैं। साक्षात्कार लेने के लिए जरूरी होता है प्रश्न (सवाल) बनाना। यदि आप को आपके पसंद के व्यक्ति का साक्षात्कार लेना हो तो जरूरी होगा कि पहले आप उनसे पूछने के लिए सवाल तैयार करें। सोचिए और लिखिए-

-: आप किस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना चाहते है ?

-: उनसे आप कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे ? उनकी एक सूची बनाइए।

2-अपने क्षेत्र के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार लेकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

3-'14 सितम्बर' प्रतिवर्ष 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पता लगाइए कि हिन्दी-दिवस 14 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है ?

विचार और कल्पना

1- यदि पेड़-पौधे और जीव-जन्तु भी भाषा बोलने में सक्षम होते तो-

- वे हमसे क्या-क्या चिन्ताएं बताते ?
- इसका वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता ?

2- हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है किन्तु देश के अनेक प्रदेशों में इसके अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाएँ भी बोली जाती हैं। नीचे लिखी गयी भाषाओं का उनके प्रदेशों से मिलान कीजिए-

मराठी	आन्ध्रप्रदेश
मलयालम	तमिलनाडु
कन्नड़	केरल
तेलगू	महाराष्ट्र
तमिल	कर्नाटक

बातचीत से

1- साइजी माकिनो भारत कब और किस कार्य के लिए आये ?

2- साइजी माकिनो ने शांतिनिकेतन की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?

3- साइजी माकिनो को ग्वालियर की बिड़ला फैक्ट्री में क्यों जाना पड़ा ?

4- साइजी की क्या कामना है ?

5- जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

6- साइजी ने पाठकों को कौन-सा संदेश देना चाहा है ?

7- हिन्दी भाषा के क्षेत्र में कुछ जापानी लेखकों ने कार्य किये हैं। स्तम्भ 'क' में कार्य एवं स्तम्भ 'ख' में उनके नाम लिखे गये हैं उनका सही-सही मिलान कीजिए-

'क' कार्य	'ख' नाम
भीष्म साहनी के 'तमस' का हिन्दी अनुवाद	प्रो० मिजोकामी

'जापानी-हिन्दी कोश' व 'गांधी जी की आत्मकथा' का अनुवाद	साइजी माकिनो
हिन्दी नाटक लेखन और मंचन	प्रो० दोइ
हिन्दी साहित्य का काम	प्रो० तामियोतनाका
टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना	प्रो० कोगा
चित्रलेखा का जापानी अनुवाद	प्रो० साकाता

भाषा की बात

1- भाषा के सौन्दर्य से सम्बन्धित निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

(क) समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुंदर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की है।

(ख) समझ नहीं आता कि आपकी महानता ने आपको इतना सुंदर बना दिया है या आपकी सुन्दरता ने आपको महान बना दिया है।

-इसी प्रकार से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की दो विशेषताओं को लेकर दो वाक्यों की रचना कीजिए।

2- 'शांति' में 'निकेतन' जोड़कर 'शांतिनिकेतन' बना है। इसी प्रकार 'शांति' में अन्य शब्दों को जोड़कर तीन नये शब्द बनाइए।

3- जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट हो उसे **क्रियाविशेषण** कहते हैं, जैसे-

(क) वह धीरे-धीरे टहलता है।

(ख) पी० टी० उषा तेज दौड़ती है।

यहाँ सभी रेखांकित शब्द क्रियाविशेषण हैं क्योंकि पहले वाक्य में 'धीरे-धीरे' क्रिया 'टहलना' की विशेषता और दूसरे वाक्य में 'तेज' शब्द 'दौड़ने' क्रिया की विशेषता बता रहा है। इस प्रकार पाठ में आये किन्हीं चार क्रियाविशेषण (शब्दों) को छाँटकर सम्बन्धित क्रियाओं के साथ लिखिए।

इसे भी जानें

एक भाषा को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, उसे 'स्रोत भाषा' और जिसमें अनुवाद करते हैं, उसे 'लक्ष्य भाषा' कहते हैं। अनुवाद करने वाला अनुवादक होता है। एक अच्छे अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा की जानकारी होने के साथ-साथ दोनों देशों की प्रकृति, सांस्कृतिक अवस्था एवं लोकजीवन की भी अच्छी समझ होनी चाहिए।

अवधारणा चित्र-

किसी पात्र अथवा विषयवस्तु के बारे में उसकी विशेषता, गुण, लाभ, हानि अथवा घटना के क्रमों के प्रमुख बिन्दुओं का चित्रण करना।

हिन्दी विश्वशांति की भाषा है!

शिक्षकों हेतु निर्देश:-

इसी प्रकार अन्य पाठों के आधार पर अवधारणा चित्र बच्चों से बनवायें।

पाठ 10

भक्ति के पद

(प्रस्तुत पदों में मीरा और रसखान ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति तथा दर्शन की उत्कट लालसा प्रकट की है।)

मीरा बाई

हरि! तुम हरो जन की भीर
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढायो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
हिरनकश्यप मार लीनो, धर्‌यो नाहिन धीर।
बूडते गज ग्राह मार्‌यो, कियो बाहर नीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, दुख जहाँ तहाँ पीर।

पग घुँघरू बाँध मीराँ नाची, रे।
मैं तो अपने नारायण की, आपहि हो गई दासी रे।
विष का प्याला राणा जी ने भेज्यो, पीवत मीराँ हाँसी रे।
लोग कहे मीराँ भई बावरी, बाप कहे कुल नासी रे।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणाँ की दासी रे।।

कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई० को राजस्थान के चोकड़ी (कुड़की) नामक गाँव में हुआ माना गया है। इनकी रचनाओं में कृष्णभक्ति के विविध रुप मिलते हैं। 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविन्द टीका', 'राग गोविन्द' आपके प्रमुख ग्रन्थ हैं।

रसखान के भक्ति पद

१. बैन वही उनको गुन गाई औ कान वही उन बैन सों सानी।
हाथ वही उन गात सरै अरु पाइ वही जु उही अनुजानी।।
जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।
त्यौं रसखानि वही रसखानि जु हैं रसखानि सो है रसखानि।।

२. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवहुँ निधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं।।
रसखानि कबौं इन आँखिन सो ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ही कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

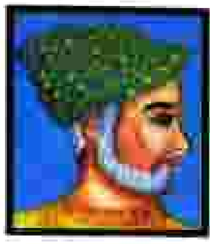

रसखान कृष्ण भक्ति के प्रसिद्ध कवि है। इनका नाम सैयद इब्राहिम था। इन्होंने रसखान नाम से रचनाएँ की हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना 'सुजान रसखान' और प्रेम 'वाटिका' है। ये अपनी रचनाओं में कृष्ण के प्रति प्रेम की तन्मयता और भाव-विह्वलता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्होंने दोहा, कवित्त और सवैया छन्दों का अधिक प्रयोग किया है।

शब्दार्थ

भीर=विपत्ति, दुःख। **चीर**=साड़ी। **नरहरि**=नृसिंह। **बूड़त**= डूबते। **नारायण**=भगवान, कृष्ण। **बावरी**=पागल। **नासी**=नष्ट करने वाली। **चरणा**=पैर, चरण। **बैन**=वाणी। **सानी**=सुनते हैं। (जो भगवान की वाणी सुनते है।) **अनुजानी**=अनुसरण करते है। **लकुटी**=लाठी। **कामरिया**=कम्बल। **तिहूपुर**=त्रैलोक्य (स्वर्ग,मर्त्य,पाताल)। **तड़ाग**=तालाब। **कलधौत**=स्वर्ण।

प्रश्न अभ्यास

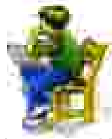

कुछ करने को

(क) भक्ति काल के कुछ कवियों के नाम और उनकी रचनाएं लिखिए।

(ख) मीराबाई का एकतारा (वाद्ययंत्र) लिए हुए चित्र बनाइए।

कविता से

1- मीरा प्रभु से क्या प्रार्थना कर रही है ?

2- द्रौपदी की सहायता ईश्वर द्वारा किस प्रकार की गई ?

3- कवि रसखान ने वाणी की क्या विशेषता बताई है ?

4- कवि रसखान ने तीनों लोको के राज्य को कृष्ण की किन वस्तुओं से तुच्छ कहा है ?

5- ल्यौ रसखानि वही रसखानि जु है रसखानि सो है रसखानि पंक्ति का आशय है- ''भगवान श्री कृष्ण ऐसे हैं जो अपने भक्तों को कभी भी नाराज नहीं करते हैं और उनसे बहुत प्रेम करते हैं। वह तो आनन्द की खान हैं, उनसे नाता जोड़ने मे सुख ही सुख है। इसी प्रकार आप निम्नांकित पक्तियों के आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) कोटिक हौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

(ख) जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।

6- नीचे दिए गए भावों से मिलती जुलती पंक्ति लिखिए-

(अ) कान वही अच्छे हैं, जो हर पल भगवान श्री कृष्ण की वाणी सुनते हैं।

(ब) भक्त की रक्षा करने के लिए आप (ईश्वर) ने नरसिंह का रूप धारण किया।

भाषा की बात

1- वर्णों के ऊपर लगे बिंदु(ं) को अनुस्वार तथा चन्द्र बिंदु(ँ) को अनुनासिक कहते हैं। अनुस्वार का प्रयोग क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग, के पाँचवे वर्ण के स्थान पर किया जाता है।

बिन्दु (ं) या चन्द्र बिंदु (ँ) लगाकर शब्दों लिखिए-

आख-	गाव-	मुह-	पाच-
गगा-	गदा-	कपन-	चचल-

2- पढ़िए समझिए और कुछ अन्य शब्द लिखिए-

र् (गर्मी) - - -द्र (द्रुम) - - ट्र (ट्रक) -

3- दिए गए शब्दों के मानक रूप लिखिए-

सरीर, लाज, प्रान, आपनो, गुन

4- ब्रजभाषा के शब्द - बैन, सानी, गत, उही, करै, अरू, को खड़ी बोली हिन्दी के रूप में लिखिए

इसे भी जानें

आठहुँ सिद्धि-(आठ सिद्धियाँ)- अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

नवहुँ निधि-(नौ निधियाँ)- पद्म निधि, महापदम् निधि, शंख निधि, मकर निधि, कच्छप निधि, मुकुन्द निधि, नन्द निधि, नील निधि, खर्व निधि।

रसखान "सवैया छन्द में कृष्ण लीला का गान करने वाले प्रथम कवि है।'

पाठ 11

आत्मनिर्भरता

(प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने युवकों को स्वयं पर निर्भर रहने की प्रेरणा दी है।)

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतन्त्रता परम आवश्यक है-चाहे उस स्वतन्त्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे। ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है - हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर की और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मन्द हो जाती है, जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच, अपनी राह आप निकालती है।

अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वासपात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतन्त्रता को दृढ़तापूर्वक बनाये रखना चाहिए। जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर नहीं होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतन्त्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़चित्त मनुष्य हो गये हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चन्द्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आयीं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही रही-

'चन्द टरै, सूरज टरै, टरै जगत ब्यौहार।
पै दृढ़ श्रीहरिचन्द को, टरै न सत्य विचार।।'

महाराणा प्रताप जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परन्तु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिन्ता जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं। एक बार एक रोमन राजनीतिक बलवाइयों के हाथ में पड़ गया। बलवाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा, 'अब तेरा किला कहाँ है?' उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया, 'यहाँ।' ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए यही बड़ा भारी गढ़ है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्मसंस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। उन्हें स्वयं विचार करना, अपनी सम्मति आप स्थिर करना, दूसरों की उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अन्धभक्त न होना सीखना चाहिए। एक इतिहासकार कहता है- 'प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन-निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। यही मैंने किया है और यदि अवसर मिले तो यही करूँ।' इसे चाहे स्वतन्त्रता कहो, चाहे आत्म-निर्भरता कहो, चाहे स्वावलम्बन कहो, जो कुछ कहो, यह वही भाव है जिससे मनुष्य और दास में भेद जान पड़ता है, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से राम-लक्ष्मण ने घर से निकल बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों पर विजय प्राप्त की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से हनुमान ने अकेले सीता की खोज की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से कोलम्बस ने अमरीका समान बड़ा महाद्वीप ढूँढ़ निकाला।

इसी चित्तवृत्ति की दृढ़ता के सहारे दरिद्र लोग दरिद्रता और अपढ़ लोग अज्ञता से निकलकर उन्नत हुए हैं तथा उद्योगी और अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है। इसी चित्तवृत्ति के आलम्बन से पुरुष-सिंहों को यह कहने की क्षमता हुई है, 'मैं राह ढूँढूँगा या राह निकालूँगा।' यही चित्तवृत्ति थी जिसकी उत्तेजना से शिवाजी ने थोड़े वीर मराठे सिपाहियों को लेकर औरंगजेब की बड़ी भारी सेना पर छापा मारा और उसे तितर-बितर कर दिया। यही चित्तवृत्ति थी जिसके सहारे एकलव्य बिना किसी गुरु या संगी-साथी के जंगल के बीच निशाने पर तीर पर तीर चलाता रहा और अन्त में एक बड़ा धनुर्धर हुआ। यही चित्तवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों को ग्रहण करने योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है, वह जीवन और कर्म-क्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है। प्रसिद्ध उपन्यासकार स्टॉक एक बार ऋण के बोझ से बिलकुल दब गये। मित्रों ने उनकी सहायता करनी चाही, पर उन्होंने यह बात स्वीकार नहीं की और स्वयं अपनी प्रतिभा का सहारा लेकर अनेक उपन्यास थोड़े समय के बीच लिखकर लाखों रुपये का ऋण अपने सिर पर से उतार दिया।

-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में सन् 1884 ई० को हुआ था। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। हिन्दी के प्रख्यात समीक्षक और हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक के रूप में शुक्ल जी की प्रसिद्धि है। **'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'चिन्तामणि', 'गोस्वामी तुलसीदास'** आदि आप के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनका निधन सन् 1941 ई० को हुआ।

शब्दार्थ

आत्म संस्कार = अपना सुधार। **आत्म मर्यादा** = अपनी सीमा में रहना, स्वयं को सदाचार में रखना। **उच्चाशय** = ऊँचा लक्ष्य, ऊँचा अभिप्राय। **बलवाई** = दंगा करने वाले। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा। **अन्धभक्ति** = बिना विचारे किसी पर श्रद्धा करना। **निर्द्वन्द्वता** = सब तरह से स्वच्छन्द। **अध्यवसायी** = लगातार यत्न करने वाला, उद्यमशील, उत्साही। **चित्तवृत्ति** = मन का भाव।

प्रश्न-अभ्यास

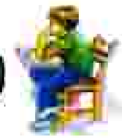

कुछ करने को

1- सच्ची लगन से ही एकलव्य बिना किसी गुरु के बहुत बड़ा धनुर्धर बन गया। सच्ची लगन से कठिन कार्य आसानी से पूर्ण हो जाते हैं। आपकी पाठ्यपुस्तक में कुछ अंश अवश्य आये होंगे, जो एक बार में आपकी समझ में नहीं आते होंगे। बार-बार पढ़कर आप उन्हें स्पष्टतः समझ सकते हैं। पाठ में आये ऐसे अंशों को खोजकर लिखिए।

2- अपने शिक्षक से राजा हरिश्चन्द्र, कोलम्बस, महाराणा प्रताप, शिवाजी, एकलव्य, हनुमान के बारे में जानकारी कीजिए।

विचार और कल्पना

1- आपके विचार में आदर्श व्यक्ति के चरित्र में कौन-कौन से गुण होना आवश्यक हैं?

2- नम्रता और दब्बूपन में क्या अन्तर होता है ?

3- आत्मनिर्भरता व्यक्ति का बहुत बड़ा गुण होता है। इससे कुछ करने की शक्ति का विकास होता है। आप अपने किन-किन कार्यों के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं हैं तथा किन-किन कार्यों के लिए आप दूसरों पर निर्भर रहते हैं। अलग- अलग सूची बनाइए।

निबन्ध से

1- इस पाठ का उद्देश्य क्या है? सही कथनों पर सही का चिह्न (✓) लगाइए।

(क) युवाओं में नयी स्फूर्ति भरना।

(ख) युवाओं को कर्म में लगाना।

(ग) जितना ही मनुष्य अपना लक्ष्य नीचे रखता है उतना ही तीर उसका ऊपर जाता है।

(घ) युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देना।

(ङ.) युवाओं को महापुरुषों के जीवन के प्रेरक-प्रसंगों की जानकारी देना।

2- निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।

(ख) युवाओं को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं।

(ग) मनुष्य का बेड़ा उसके हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये।

(घ) अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है।

3- उपन्यासकार स्टॉक ने अपना ऋण किस तरह उतारा ?

4- समूह 'ख' का कौन-सा शब्द या वाक्यांश समूह 'क' में दिये गये किन से सम्बन्धित है ? छाँटकर समूह 'क' के सम्मुख लिखिए -

समूह 'क'		समूह 'ख'
हरिश्चन्द्र	-	छापामार युद्ध
महाराणा प्रताप	-	अमेरिका की खोज
हनुमान	-	धनुर्धर
कोलम्बस	-	सत्यवादी
शिवाजी	-	अधीनता नहीं स्वीकार की
एकलव्य	-	सीता की खोज

भाषा की बात

1- 'आत्मसंस्कार' शब्द में 'संस्कार' के पूर्व 'आत्म' शब्द जुड़ा हुआ है। दिये गये शब्दों के पूर्व 'आत्म' लगाकर नये शब्दों की रचना कीजिए -

परिचय, चिन्तन, निर्भर, बोध, कथन।

2- निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -

मुँह ताकना, अपने पैरों के बल खड़ा होना, दृष्टि नीची होना, सिर ऊपर होना, अपने हाथ में अपना भाग्य होना, कठपुतली बनना, हृदय पर हाथ रखना।

3- 'जीवननिर्वाह' समास पद का विग्रह है-'जीवन का निर्वाह'। सामासिक शब्द बनाने पर 'का' कारकचिह्न का लोप हो गया है। 'का' सम्बन्ध कारक का चिह्न है। अतः यह **सम्बन्ध कारक तत्पुरुष समास** है। नीचे लिखे समास पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए -

अहंकारवृत्ति, आत्मसंस्कार, आत्ममर्यादा, चित्तवृत्ति, राम-लक्ष्मण ।

4- निम्नलिखित में से प्रधान उपवाक्य तथा आश्रित उपवाक्य को अलग-अलग लिखिए -

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।

सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में .... अपनी राह आप निकालती है।

5- 'स्वतंत्रता' का विपरीतार्थक है -

(क) आजादी

(ख) परतन्त्रता

(ग) स्वावलम्बन

(घ) स्वराज्य

6- जब दो पदों में समास होता है तो प्रायः उनके बीच सामासिक चिह्न (-) लगा दिया जाता है किन्तु आवश्यकतानुसार दो पदों में सन्धि भी की जाती है, जैसे- विद्यालय, विद्यार्थी। ध्यान रहे कि द्वन्द्व समास जैसे-माता-पिता, राम-लक्ष्मण आदि में सामासिक चिह्न अनिवार्य है अन्यथा सीताराम (सीता के राम) तथा सीता-राम (सीता और राम) समास में अन्तर नहीं हो सकेगा। अन्य सामासिक पदों को संयुक्त रूप में लिखा जा सकता है।

7- प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और अपने विचार अपनी पुस्तिका में लिखिए। साथ ही उसका शीर्षक भी दीजिए-

इसे भी जानें

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं (असमिया, ओड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलगु, नेपाली, पंजाबी, बंग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिन्दी) को बोलने वालों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत है।

पहरुए सावधान रहना

(प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के रक्षकों और सीमा के पहरेदारों को देश की सुरक्षा और नवनिर्माण के लिए प्रेरित किया है।)

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।

प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन-मन्थन से उठ आयी
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की
विगत साँवली कोर

ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग बन्दिनी हवाएँ
प्रश्नचिह्न बन खड़ी हो गयीं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इन्दु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी

छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नयी जिन्दगी
यह विश्वास अमर है

जनगंगा में ज्वार,
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना ।

-गिरिजाकुमार माथुर

गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1918 ई० को अशोक नगर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। आप एक प्रसिद्ध कवि, नाटककार और समालोचक के रूप में जाने जाते हैं। 'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', 'शिला पंख चमकीले' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। इनकी कविताओं में देश-प्रेम, प्रकृति प्रेम और मानव प्रेम समाहित है। वर्ष 1991 में आपको कविता संग्रह **'मैं वक्त के हूँ सामने'** के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया। 10 जनवरी सन् 1994 ई० में आपका निधन हो गया।

शब्दार्थ

पहरुए = पहरेदार, देश के रक्षक, सीमा के प्रहरी। **अचल** = अटल, अडिग। **मंजिल** =पड़ाव। **जन मन्थन** = जनता द्वारा किये गये आन्दोलन से। **रत्न हिलोर** = रत्न से भरी जल तरंग। **शेष** = बाकी बचा हुआ। **मुक्ता** = मोती। **विगत** = अतीत, बीता हुआ। **साँवली** = परतन्त्रता के समय की दुःखद परिस्थितियाँ। **कोर** = किनारा कोना। **पतवार** = नाव में पीछे लगी हुई तिकोनी लकड़ी जिसके द्वारा नाव को इधर-उधर मोड़ते या घुमाते हैं। **अम्बुधि** = समुद्र।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- अपने आस-पास में रहने वाले किसी सैनिक से मिलकर उसके कार्यों के बारे में साक्षात्कार लीजिए।

2- देश-प्रेम के इस गीत को कक्षा में पाँच-पाँच का समूह बनाकर प्रस्तुत कीजिए और देखिए कि किस समूह की प्रस्तुति बहुत अच्छी रही।

3- दी गयी पंक्तियों के आधार पर कविता को आगे बढ़ाइए -

सुनो-सुनो हे भाई-बहना।
हरदम सावधान तुम रहना।
........................।
........................।

विचार और कल्पना

1- नये युग की पतवार किनके हाथों में है ?

2- स्वतन्त्रता के बाद आज भी अनेक ऐसी समस्याएँ हैं, जो देश को तोड़ने में लगी हुई हैं। बताइए-

- ये समस्याएं कौन-कौन सी हैं ?
- आप इनको सुलझाने में क्या सहयोग दे सकते हैं ?

3- हमें अपने जीवन में कई चीजों से सावधान रहने के लिए कहा जाता है। सोचकर लिखिए आपको किन-किन बातों के प्रति सावधान रहने को कहा जाता है ?

कविता से

1- 'जीत की रात' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

2- 'ले युग की पतवार' किसके लिए कहा गया है ?

3- निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना।

(ख) क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत साँवली कोर।

(ग) ले युग की पतवार बने अम्बुधि महान रहना।

4- कवि पहरुओं को सावधान रहने के लिए क्यों कह रहा है ?

5- कविता की रिक्त पंक्तियों को पूरा कीजिए -

ऊँची हुई मशाल हमारी

....

शत्रु हट गया, लेकिन उसकी

....

शोषण से मृत है समाज

....

किन्तु आ रही नयी जिन्दगी

....

भाषा की बात

'दीप्तिमान' में 'दीप्ति' शब्द में 'मान' प्रत्यय जुड़ा है। मान/मती, वान/वती प्रत्यय जुड़ने से संज्ञा शब्द विशेषण बन जाता है। शब्द के अन्त में 'इ' रहने पर 'मान' अन्यत्र 'वान' जोड़ते हैं। नीचे लिखे शब्दों में मान/वान जोड़कर नया शब्द बनाइए -

बुद्धि, गति, गुण, शक्ति, रूप।

पाठ 13

जंगल

(प्रस्तुत कहानी में लेखक ने बच्चों में जीव-जन्तुओं के प्रति संवेदना का सजीव वर्णन किया है)

रीडर अणिमा जोशी के मोबाइल पर फोन था मांडवी दीदी की बहू तविषा का। आवाज उसकी घबराई हुई-सी थी। कह रही थी, ''आंटी बहुत जरूरी काम है। अम्मा से बात करवा दें।'' अणिमा दीदी ने असमर्थता जताई-मांडवी दीदी कक्षा ले रही हैं। काम बता दें। उनके कक्षा से बाहर आते ही वह संदेश उन्हें दे देंगी। बल्कि अपने सामने ही मांडवी दीदी से उसकी बात करवा देंगी। वैसे हुआ क्या है? तविषा, इतनी घबराई हुई-सी क्यों है ? घर में सब कुशल -मंगल तो है ?

परेशानी का कारण बताने की बजाय तविषा ने उनसे पुनः आग्रह किया, ''आंटी, अम्मा से बात हो जाए तो .....''

अणिमा जोशी को स्वयं उसे टालना बुरा लगा।

''उचित नहीं लगेगा, तविषा। अनुशासन भंग होगा। कक्षा का समय विद्यार्थियों के पढ़ने का समय है। मुझे बताओ, तविषा! मुझे बताने में झिझक कैसी।''

''नहीं आंटी, ऐसी बात नहीं है।'' तविषा का स्वर भर्रा-सा आया।

तविषा ने बताया, ''घर में जो जुड़वां खरगोश के बच्चे पाल रखे हैं उन्होंने, सोनू-मोनू, उनमें से सोनू नहीं रहा।''

साढ़े दस के करीब कामवाली कमला घर में झाडू-पोंछा करने आई तो बैठक बुहारते हुए उसकी नजर सोफे के नीचे सो रहे सोनू पर पड़ी। जगाने के लिए उसने सोनू को हिलाया, ताकि सोफे के नीचे वह ठीक से सफाई कर सके। उसके जगाने की सोनू पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह बुदबुदाई- कैसे घोड़े बेचकर सो रहा है शैतान! अबकी उसने उसे लगभग झकझोरा, बल्कि उसकी टांग पकड़कर उसे सोफे के नीचे से बाहर घसीट लिया। सोनू-मोनू की चौकड़ियां, छुप्पा-छुप्पावल, साफ-सफाई के काम में कम नहीं खिझाती उसे। घर में कौन पियूष कम बिखराहट करता था, जो इनकी कमी थी। मगर सोनू की देह में कोई हरकत नहीं हुई। उसे लगा था, बाहर खींचते ही वह उसकी पकड़ से छूट एकदम से दौड़ लेगा। कमला ने चीखकर तविषा को पुकारा, ''छोटी बीजीsss''

तविषा अचेत सोनू को देख घबड़ा गई। उसने सोनू की पीठ-पेट को सहलाया-पुचकारा। उसने कान खींचकर छेड़ा। कान खींचना सोनू को बड़ा नागवार गुजरता था। अपनी रिस जाहिर करते हुए वह बड़ी देर तक उनसे दूर-दूर बना रहता था। पुचकारने पर भी गोदी में न आता था। मगर इस बार न सोनू ने अपनी रिस प्रकट की, न उससे दूर भागा। गोदी में उठाया तो उसकी रेशमी-सी देह हाथों में टूटी कोंपल-सी झूल गई ।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था, वह क्या करें ? आस-पास जानवरों का कोई डॉक्टर है नहीं। बी. ब्लॉक की श्रेया ने अपने यहाँ कुत्ता पाल रखा है। इंटरकाम से उसने श्रेया से बात करनी चाही। संयोग से श्रेया घर पर नहीं है। नौकर को जानवरों के डॉक्टर के विषय में कोई जानकारी नहीं। वह नया ही उनके घर पर लगा है। अपनी समझ से उसने बच्चों के डॉक्टर को घर बुलाकर सोनू को दिखाया। डॉक्टर ने देखते ही कह दिया,''प्राण नहीं अब सोनू में। हो सकता है, इसे किसी जहरीले कीड़े ने काट लिया हो। बिल्ली तो नहीं आती घर में ? नीचे गार्डन में घुमाने तो नहीं ले गए ?''

''आंटी, आप अम्मा को जल्दी से जल्दी घर भेज दें। घंटे-भर में प्ले स्कूल से पियूष घर आ जाएगा। बहुत प्यार करता है वह सोनू-मोनू को। उसे समझाना-संभालना मुश्किल हो जाएगा। मोनू भी भौंचक-सा सोनू की निस्पंद पड़ी देह के इर्द-गिर्द मंडरा रहा है।''

मांडवी दी घर पहुंची तो बैठक में काली बदली ठिठकी-सी तनी हुई थी।

सोफों के बीच के खाली पड़े फर्श पर सोनू निचेष्ट पड़ा हुआ था। झुकीं तो पाया, आँख ठहरी हुई थी उसकी, मानो नींद में आँखे खुली रह गई हों। पियूष उसी के निकट गुमसुम बैठा हुआ था। मोनू-सोनू की परिक्रमा-सा करता कभी दाएं ठिठक उसे गौर से ताकने लगता, कभी बाएं से। कभी मुँह उठाकर पियूष की ओर देखता। उससे पूछने की मुद्रा में-भैया, ये सोनू उठकर हमारे साथ खेलता क्यों नहीं ? पियूष की स्तब्धता तोड़ना उन्हें-जरूरी लगा। नन्हीं-सी जिंदगी में वह मौत से पहली बार मिल रहा है। मौत उसकी समझ में नहीं आ रही है। ऐसा कभी हुआ नहीं कि उन्होंने घर की घंटी बजाई हो और तीनों लपककर दरवाजा खोलने न दौड़े हों। खोल तो पियूष ही पाता था, मगर मुँह दरवाजे की ओर उठाए वे दोनों भी पियूष के नन्हे हाथों में अपने अगले पंजे लगा देते हों जैसे।

पियूष का सिर उन्होंने अपनी छाती से लगा लिया। पियूष रोने लगा है-''दादी, दादी! ये सोनू को क्या हो गया ? दादी, सोनू बीमार है तो डॉक्टर को बुलाकर दिखाओ न ...... दादी! मम्मी गंदी है न! बोलती है-सोनू मर गया......''

वह अपनी उमड़ी चली आ रही आँखों को भीतर-ही-भीतर घुटकते हुए, रूंधे स्वर को साधती हुई उसे समझाने लगती हैं, ''रोते नहीं, पियूष। सोनू को दुःख होगा। सोनू तुम्हें हमेशा हँसते देखना चाहता था न! इसीलिए तो तुम्हारे साथ खूब धमाचौकड़ी मचाता था। उसके पीछे तुम नीचे जाकर अपने हमजोलियों के संग खेलना भी भूल जाते थे।''

मोनू उनकी गोदी में मुँह सटाए उनके चेहरे को देख रहा है, बिटर-बिटर दृष्टि, आँसुओं से भरी हुई। जानवर भी रोते हैं। पहली बार उन्होंने किसी जानवर को रोते हुए देखा है। बचपन में गांव की काली चित्तेवाली गाय याद है। गाय की आँखों की कीच-भर याद है। अम्मा बताती थी-'बछड़ा जब नहीं रहा था चितकबरी का, अजीब तरीके से रंभा-रंभाकर रोती थी। कलेजा मुँह को आ जाता था।''

अणिमा जोशी के मोबाइल से उन्होंने बेटे शैलेश को दफ्तर में खबर कर देना उचित समझा था। न जाने परेशान तविषा ने शैलेश को फोन किया हो, न किया हो। शैलेश ने कहा था, "ऐसा करें, अम्मा, घर पहुँच रही हैं आप। नीचे सोसाइटी में चौकीदार को कह दें। ढाई-तीन से पहले जमादारों का काम निपटता नहीं। एक को ऊपर भेज दें और सोनू को उठवाकर समाचार अपार्टमेंट्स से लगे नाले में फिंकवा दें। कुत्ते-बिल्ली सफाचट कर जाएंगे। गरमी में ज्यादा देर घर में रखने से बदबू आने लगेगी। पियूष वैसे भी बड़ी जल्दी बीमार पड़ जाता है। सावधानी बरतना जरूरी है, अम्मा।"

"और अम्मा, बेहतर है यह काम पियूष के प्ले स्कूल से लौटने के पहले ही हो जाये। उसके कोमल मन मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ेगा। बहुत सवाल करता है पियूष। जवाब देते नहीं बन पड़ेगा।"

उन्होंने शैलेश से स्पष्ट कह दिया था-छुट्टी लेकर वह फौरन घर पहुंचे। उनके घर पहुँचने तक पियूष घर पहुँच चुका होगा। अपनी घड़ी पर निगाह डाल ले वह। नाले में वह सोनू को हरगिज नहीं फिंकवा सकती। पियूष सोनू को बहुत प्यार करता है। स्थिति से भागने की बजाय उसका सामना करना ही बेहतर है। सोनू को घर में न पाकर उसके अबोध मन के जिन सवालों से पूरे घर को टकराना होगा-उसे संभालना कठिन होगा। जमादार को घर पहुँचते ही वे खबर कर देंगी। उनकी इच्छा है, घर के बच्चे की तरह सोनू का अंतिम संस्कार किया जाए। आस-पास ही कहीं जमादार से मिट्टी खुदवाकर उसे जमीन में गाड़ दिया जाए।

बेटे शैलेश को उनकी बात सुसंगत लगी हो या न लगी हो, पर उसे मालूम है कि अम्मा से बहस एक सीमा तक ही खिंच सकती है। तब तो और नहीं, जब वे किसी बात को लेकर निर्णय ले चुकी होती हैं।

"पहुँचता हूँ।" शैलेश ने कहा था।

उन्होंने पियूष को समझा दिया था-"तुम्हारे सोनू को जमीन में गाड़ने ले जा रहें हैं, तुम्हारे पापा। नन्हें बच्चों की मौत होती हैं तो उन्हें जमीन में गाड़ दिया जाता हैं, ताकि बच्चा कहीं और जन्म ले सके...... न न, जमीन से बच्चा पेड़ की भाँति नहीं उगता पगले। वहाँ से किसी मां के पेट में पहुँच जाता है। नौ महीने उस मां के पेट में रहता है और फिर दूसरे बच्चे के रूप में जन्म ले लेता है। तुम मोनू के पास ही रहो। तुम्हें मोनू को संभालना है। पापा के साथ जाने की जिद न करो।"

"मेरा जन्म भी ऐसे ही हुआ ?"

"शायद!"

"दादी, पर सोनू मर क्यों गया ?"

सवाल के जवाब देने ही होंगे- "उसके दिल में गहरा दु:ख था, पियूष।" "दादी, उसके दिल में दु:ख क्यो था ?"

"उसे अपने मां-बाप से अलग जो कर दिया गया।"

"किसने किया, दादी ?"

"उस दुकानदार ने, जिससे हम उसे खरीदकर लाए थे। दुकानदार पशु-पक्षियों को बेचता हैं न! उसने कुछ लोगों से कह रखा है, वे जंगल में घात लगाकर घूमें। मौका मिलते ही नन्हें पशु-पक्षियों को अपने जाल में फँसा लें। उन्हें शहर लाकर उसे बेच दें। तुम्हीं बताओं, माँ-बाप से दूर होकर बच्चे दु:खी होते है कि नहीं ?"

"होते हैं, दादी। मम्मी, चार दिन के लिए मुझे छोड़कर नानू के पास मुंबई गई थीं तो मुझे भी बहुत दु:ख हुआ था।"

तविषा और शैलेश के संग महरौली शैलेश के मित्र के बच्चे के जन्मदिन पर गया था पियूष! उन लोगों ने बंगले के पिछले हिस्से में पशु-पक्षियों का छोटा-सा सुंदर बगीचा बना रखा था। मंझोले नीम के पेड़ की डाल पर तोते का पिंजरा लटका रखा था। जालीदार बड़े से बांकड़े में उन्होंने खरगोश पाल रखे थे। एक अन्य जालीदार बांकड़े में किस्म-किस्म की रंग-बिरंगी फुदकती चिड़ियां और नन्हें से पोखर में कछुए। पियूष को खरगोश और तोता इतने भाए कि घर आकर उसने जिद पकड़ ली-उसे भी घर में खरगोश और तोता चाहिए। तविषा और शैलेश ने बहुत समझाया-फ्लैट में पशु-पक्षी पालना कठिन है। कहाँ रखेंगे उन्हें ?

"बालकनी में।" पियूष ने जगह ढूंढ़ ली। तविषा ने उसकी बात काट उसे बहलाना चाहा-"पूरे दिन खरगोश बांकड़े में नही बंद रह सकते। उन्हें कुछ समय के लिए खुला छोड़ना होगा। छोटे-से घर में वे भागा-दौड़ी करेंगे। उनकी देखभाल कौन करेगा ?"

"दादी करेंगी।"

"दादी पढ़ाने कॉलेज जाएंगी तो उनके पीछे कौन करेगा ?"

"स्कूल से आकर मैं कर लूंगा।"

सारा घर हँस पड़ा।

सब लोग तब और चकित रह गए, जब पियूष ने दादी को पटाने की कोशिश की कि दादी उसके जन्मदिन पर कोई-न-कोई उपहार देती ही है। क्यों न इस बार वे उसे खरगोश और तोता लाकर दे दें। दादी हँसी। जन्मदिन तो पियूष का आकर चला गया। अब जब आएगा, तब देखा जाएगा। लेकिन पियूष पर किसी के तर्क का कोई असर नहीं हुआ।

उसका हठ न टला तो न टला। निरुत्तर दादी उसे लेकर लाजपत नगर चिड़ियों की दुकान पर गईं। तोता और खरगोश में से उन्होंने पियूष को कोई एक चीज चुनने के लिए कहा। पियूष ने खरगोश का जोड़ा पसंद किया। तत्काल उनका नामकरण भी कर दिया-सोनू-मोनू! सोनू-मोनू के साथ उनका घर भी खरीदा गया-जालीदार बड़ा-सा बांकड़ा। उस सांझ सोसाइटी के उसके सारे हमजोली बड़ी देर तक बॉलकनी में डटे खरगोशों को देखते-सराहते रहे और पियूष के भाग्य से ईर्ष्या करते रहें।

दूसरे रोज भी मोनू सामान्य नहीं हो पाया। पियूष को भी दादी ने प्ले स्कूल भेजना मुनासिब न समझा। पियूष घर में रहेगा तो दोनों एक-दूसरे को देख ढांढ़स महसूस करेंगे। उन्होंने स्वयं भी कॉलेज जाना स्थगित कर दिया। सुबह मोनू ने दूध के कटोरे को छुआ तक नहीं। बगल में रखे सोनू के खाली दूध के कटोरे को रह-रह कर सूँघता रहा। बांकड़े का दरवाजा खोलते ही वह बैठक में ठीक उसी स्थान पर आकर फर्श सूँघता हुआ मंडराने लगा, जिस स्थान पर उसने सोनू को निस्पंद पड़ा हुआ देखा था। उन्हें मोनू की चिंता होने लगी। पियूष ने तो फिर भी दादी के मनाने पर कुछ खा-पी लिया।

तविषा अपराध-बोध से भरी हुई थी। मांडवी दी से उसने उपना संशय बांटा। चावल की टंकी में घुन हो रहे थे। उस सुबह उसने घुन मारने के लिए डाबर की पारे की गोलियों की शीशी खोली थी चावलों में डालने के लिए। शीशी का ढक्कन मरोड़कर जैसे ही उसने ढक्कन खोलना चाहा, कुछ गोलियाँ छिटककर दूर जा गिरी। गोलियाँ बटोर उसने टंकी में डाल दी थी। फिर भी उसे शक है कि एकाध गोली ओने-कोने में छूट गई होंगी और...

"दादी........."

"हाँ , पियूष !"

"दादी......मोनू मेरे साथ खेलता क्यों नहीं ?"

"बेटा, सोनू जो उससे बिछुड़ गया है। वह दुःखी है। दोनों को एक-दूसरे के साथ रहने की आदत पड़ गई थी न!"

"मुझे भी तो सोनू के जाने का दुःख है...... दादी, "क्या हम दोनों भी मर जाएंगे ?"

मांडवी दी ने तड़पकर पियूष के मुँह पर हाथ रख दिया। डांटा-"ऐसे अपशकुनी बोल क्यों बोल रहा है ?"

पियूष ने प्रतिवाद किया, "आपने ही तो कहा था, दादी, मोनू दुःख से मर गया।"

"कहा था। उसे अपने माँ-बाप से बिछुड़ने का दुःख था। जंगल उसका घर है। जंगल में उसके माँ-बाप हैं। तुम तो अपने माँ-बाप के पास हो।"

"दादी, हम मोनू को उसके माँ-बाप से अलग रखेंगे तो वह भी मर जाएगा दुःख से ?"

मांडवी दी निरुत्तर हो आईं।

"दादी,हम मोनू को जंगल में ले जाकर छोड़ दें तो वह अपने मम्मी-पापा के पास पहुँच जाएगा। फिर तो वह मरेगा नहीं न ?"

"नहीं मरेगा.....पर तू मोनू के बिना रह लेगा न ?" मांडवी दी का कंठ भर आया।

"रह लूंगा।"

"ठीक है। शैलेश से कहूंगी कि वह रात को गाड़ी निकाले और हमें जंगल ले चले। रात में ही खरगोश दिखाई पड़ते हैं। शायद मोनू के माँ-बाप भी हमें दिखाई पड़ जाएंगे।"

"दादी..."

"बोल, पियूष!"

"दादी, मैंने आपसे कहा था न, मुझे तोता भी चाहिए ?"

"कहा था।"

"अब मुझे तोता नहीं चाहिए, दादी।"

मांडवी दी ने पियूष को सीने से भींच लिया और दनादन उसका मुँह चूमने लगीं।

-चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल का जन्म 10 दिसम्बर सन् 1944 ई0 को चेन्नई (तमिलनाडु) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित निहाली खेड़ा में और उच्च शिक्षा मुंबई विश्वविद्यालय में हुई। इनकी अब तक तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, चार बाल कथा संग्रह, पाँच सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बहुचर्चित उपन्यास **'आवाँ'** के लिए इन्हें 'व्यास सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है।

शब्दार्थ

बांकड़ा=जानवरों को रखने वाला पिंजरा। **नागवार**=जो अच्छा न लगे, अप्रिय। **हमजोली**=साथी, सहयोगी। **रिस**=क्रोध। **मुनासिब**=उचित, वाजिब। **इंटरकाम**=कार्यालयों में कमरों के बीच संचार व्यवस्था। **ढांढ़स**=आश्वासन, हिम्मत। **निस्पंद**=जो हिलता -डुलता नहीं। **बिटर-बिटर**=दुकुर-दुकुर। **अपशकुन**=बुरा शकुन, अशगुन। **प्रतिवाद**=विरोध, विवाद।

प्रश्न-अभ्यास

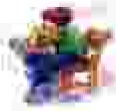

कुछ करने को

1-दिए गये शब्दों के बहुवचन लिखिए-

उपवन- बीमारी- पक्षी- पशु-

प्रश्न- सोफा- तोता- चिड़ियाँ-

2-दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाकर उन्हें दोबारा लिखिएं-

अबर- आटी-

जगल- नही-

पख- पिजरे-

3-दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए-

(i) प्रतिक्रिया - (ii) धमाचौकड़ी -

(iii) सफाचट - (iv) हमजोली -

विचार और कल्पना

1-पशु-पक्षियों को पालना सही है। यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ? अपने विचार लिखिए।

2- यदि आपको पिंजरे में बन्द कर रखा जाय तो आपको कैसा लगेगा ? अपने विचार लिखिए।

3-जानवरों की बीमारियों को डॉक्टर (जानवरों के) कैसे ज्ञात करते हैं ? पता करके लिखिए।

कहानी से

1-तविषा घबराई हुई क्यों थी ? वह मांडवी दीदी से क्यों बात करना चाह रही थी ?

2-तविषा एवं शैलेश ने क्यों कहा-फ्लैट में पशु-पक्षी पालना कठिन है ?

3-मोनू ने दूध के कटोरे को क्यों नहीं छुआ ?

4-पियूष क्यों मोनू (खरगोश) को जंगल में वापस छोड़ने के लिए तैयार हो गया ?

मेरा कोना

NCPCR (National Commission for Protection of child Rights)

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग-

1- आयोग का प्रमुख कार्य बाल अधिकार के उल्लंघन संबंधी शिकायत की जाँच करता है।

2- आयोग के समक्ष शिकायत संविधान की 8वीं अनुसूची में वर्णित किसी भी भाषा में की जा सकती है।

3- शिकायत दर्ज कराने के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

4- शिकायत व्यक्तिगत रूप से, डाक से या अन्य व्यक्ति के माध्यम से भेजा जा सकता है-

ई-मेल पता- cp.ncpcr@nic.in

director.ncpcr@nic.in

complaints.ncpcr@gmail.com

पत्र भेजने का पता-

चेयर पर्सन, नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स, 5वी मंजिल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली-110001

फोन : 011-2373-1583/2372-4023

बाल अधिकार-

बाल अधिकारों को चार भागों में बाँटा गया है-

(1) जीवन जीने का अधिकार

(2) संरक्षण का अधिकार

(3) सहभागिता का अधिकार

(4) विकास का अधिकार

पाठ 14

कर्मवीर

(प्रस्तुत गीत के माध्यम से कवि कर्मवीरों की विशेषताओं को व्याख्यायित कर रहे हैं। कर्म एवं समय के सदुपयोग को संदर्भित किया गया है)

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते हैं 'जो कुछ कर दिखाते हैं' वही।।
मानते जो भी हैं 'सुनते हैं' सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए

वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।
व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठो पहर
गर्जते जल-राशि की उठती हुई ऊँची लहर
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लवर
ये कँपा सकती कभी जिसके कलेजे को नही
भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।

–अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म सन 1865 ई0 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान में हुआ था। सन 1932 ई0 में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण कर इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् 1941 तक अवैतनिक शिक्षक के रूप में काम किया। इन्होंने विविध विषयों पर काव्य रचना की। **वैदेही वनवास, रस–कलश, चुभते–चौपदे, अधखिला फूल, पारिजात तथा ठेठ हिन्दी का ठाठ** इनकी प्रमुख रचनाएँ है। प्रिय प्रवास हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। सन् 1947 ई0 को निजामाबाद में इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

विघ्न = बाधा, अड़चन। **यत्न** = उपाय। **आन**=मर्यादा, शपथ। **दुर्गम** = कठिन। **नमूना**= उदाहरण। **जलराशि** = समुद्र। **भयदायिनी** = डराने वाली। **व्योम**=आकाश। **लवर** = अग्नि की लपट, ज्वाला।

प्रश्न–अभ्यास

कुछ करने को

1- इस कविता में कवि ने जीवन संघर्ष में लगे रहने की प्रेरणा दी है। इसी भाव की अन्य कविताओं का संकलन कीजिए।

2- अपनी शिक्षिका की सहायता से विश्व में शान्ति कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वालों की सूची बनाइए।

3- यदि आप अपने कार्यों को सही समय पर नहीं करते तो आप को जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा ? इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

विचार और कल्पना

1-जीवन में किसी कार्य की सफलता के लिए क्या-क्या आवश्यक है ? इस बिन्दु पर अपने विचार लिखिए।

2- 'कर्मठ व्यक्ति अपने जीवन में सदैव सफल होते है', इस विषय पर अपने विचार मौखिक रुप में प्रस्तुत कीजिए।

कविता से-

1- कविता में कवि ने किस की प्रशंसा की हैं ?

2- कर्मवीर दुःख मिलने पर भी क्यों नहीं पछताते ?

3- "सब जगह सब काल में फूलने फलने से" कवि का क्या तात्पर्य है ?

4- कर्मवीर दूसरों के लिए किस प्रकार नमूना बन जाते हैं ?

5- निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।

(ख) काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।

भाषा की बात

1- दिए गए शब्द स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग ? लिखिए-

चित्र- -------	बाधा -----
लताएं- -------	नदी -----
जंगल- ------	बात ------

2- कुछ शब्द उपसर्ग और प्रत्यय दोनों के योग से बनते हैं।

जैसे पर+ अधीन+ता = पराधीनता

आप भी इस प्रकार के शब्द बनाइए-

सम् + कल्प + ना =

दुर् + बल + ता =

अ + विश्वसनीय + ता =

अ + सम्बद्ध + ता =

नोबेल पुरस्कार

नोबेल फाउंडेशन द्वारा स्वीडन के वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की याद मे वर्ष 1901ई० में इसकी शुरूआत की गयी। यह शान्ति, साहित्य, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा विज्ञान और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार है। इस पुरस्कार के लिए बनी समिति और चयनकर्ता प्रत्येक वर्ष अक्टूबर में नोबेल पुरस्कार विजेताओं की घोषणा करते हैं, लेकिन पुरस्कारों का वितरण अल्फ्रेड नोबेल की पुण्य तिथि 10 दिसम्बर को किया जाता है।

1-**रवीन्द्र नाथ टैगोर**-सन् 1913 ई० में इन्हें **'साहित्य'** का नोबेल पुरस्कार इनकी पुस्तक 'गीतांजलि' के लिए दिया गया।

2-**चन्द्रशेखर वेंकट रमन**-इनकी खोज **'रमन प्रभाव'** के लिए इन्हें सन् 1930 ई० में **भौतिक** का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

3-**हरगोविन्द खुराना**-इन्हें सन् 1968 ई० में **'कृत्रिम जीन के संश्लेषण'** के लिए **चिकित्सा** का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

4-**मदर टेरेसा**-इन्हें सन् 1979 ई० में इनके 'समाज सेवा संबंधी कार्यों' के लिए **शान्ति** का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

5-**सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर**-इन्हें सन् 1983 ई० में इनकी खोज 'चन्द्रशेखर सीमा' के लिए **भौतिकी** का नोबेल पुरस्कार मिला।

6-**अमर्त्य सेन**-इन्हें सन् 1998 ई० में 'कल्याणकारी अर्थशास्त्र' के लिए **अर्थशास्त्र** का नोबेल पुरस्कार मिला।

7-**वी०एस० नायपाल**-इन्हें सन् 2001 ई० में **साहित्य** का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

8-**वेंकटरामन रामकृष्णन**-इन्हें सन् 2009 ई० में **रसायन विज्ञान** के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

9-**कैलाश सत्यार्थी**-इन्हें सन् 2014 ई० में **शान्ति** का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

पाठ 15

एक स्त्री का पत्र

(प्रस्तुत पाठ में बिन्दू के माध्यम से नारी-जीवन के सामाजिक बन्धन, उसके शोषण और दर्द को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है।)

पूज्यवर,

आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को। हम तब से साथ ही रहे। अब तक चिट्ठी लिखने का मौका नहीं मिला। तुम्हारे घर की मझली बहू जगन्नाथपुरी आयी थी, तीर्थ करने आयी तो जाना कि दुनिया और भगवान के साथ मेरा एक और नाता भी है। इसलिए आज चिट्ठी लिखने का साहस कर रही हूँ। इसे मझली बहू की चिट्ठी न समझना।

वह दिन याद आता है, जब तुम लोग मुझे देखने आये थे। मुझे बारहवाँ साल लगा था। सुदूर गाँव में हमारा घर था। पहुँचने में कितनी मुश्किल हुई तुम सबको। मेरे घर के लोग आव-भगत करते-करते हैरान हो गये।

विदाई की करुण धुन गूँज उठी। मैं मझली बहू बनकर तुम्हारे घर आयी। सभी औरतों ने नयी दुल्हन को जाँच परखकर देखा। सबको मानना पड़ा- बहू सुन्दर है।

मैं सुन्दर हूँ, यह तो तुम लोग जल्दी भूल गये। पर मुझमें बुद्धि है, यह बात तुम लोग चाहकर भी न भूल सके। माँ कहती थी, औरत के लिए तेज दिमाग भी एक बला है।

लेकिन मैं क्या करूँ। तुम लोगों ने उठते बैठते कहा, 'यह बहू तेज है।'

लोग बुरा भला कहते हैं सो कहते रहें। मैंने सब माफ कर दिया।

मैं छिप-छिप कर कविता लिखती थी। कविताएँ थीं तो मामूली, लेकिन उनमें मेरी अपनी आवाज थी। वे कविताएँ तुम्हारे रीति-रिवाजों के बन्धनों से आजाद थीं।

मेरी नन्हीं बेटी को छीनने के लिए मौत मेरे बहुत पास आयी। उसे ले गयी, पर मुझे छोड़ गयी। माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी।

इस हादसे को भी पार किया। फिर से जुट

गयी रोज-मर्रा के काम काज में। गाय-भैंस, सानी-पानी में लग गयी। तुम्हारे घर का माहौल रूखा और घुटन भरा था। यह गाय-भैंस ही मुझे अपने से लगते थे। इसी तरह शायद जीवन बीत जाता।

आज का यह पत्र लिखा ही नहीं जाता। लेकिन अचानक मेरी गृहस्थी में जिन्दगी का एक बीज आ गिरा। यह बीज जड़ पकड़ने लगा और गृहस्थी की पकड़ ढीली होने लगी। जेठानी जी की बहन, बिन्दू अपनी माँ के गुजरने पर, हमारे घर आ गयी।

मैंने देखा तुम सभी परेशान थे। जेठानी जी के पीहर की लड़की, न रूपवती न धनवती। जेठानी दीदी इस समस्या को लेकर उलझ गयी। एक तरफ बहन का प्यार तो एक तरफ ससुराल की नाराजगी।

अनाथ लड़की के साथ ऐसा रूखा बर्ताव होते देख मुझसे रहा न गया। मैंने बिन्दू को अपने पास जगह दी। जेठानी दीदी ने चैन की साँस ली। गलती का बोझ मुझ पर आ पड़ा।

पहले मेरा स्नेह पाकर बिन्दू सकुचाती थी। पर धीरे-धीरे वह मुझे बहुत प्यार करने लगी। बिन्दू ने प्रेम का विशाल सागर मुझ पर उड़ेल दिया। मुझे कोई इतना प्यार और सम्मान दे सकेगा, यह मैंने सोचा भी न था।

बिन्दू को जो प्यार दुलार मुझसे मिला वह तुम लोगों को फूटी आँखों न सुहाया। याद आता है वह दिन, जब बाजूबन्द गायब हुआ। बिन्दू पर चोरी का इल्जाम लगाने में तुम लोगों को पल भर की झिझक न हुई।

बिन्दू के बदन पर जरा-सी लाल घमोरी क्या निकली, तुम लोग झट बोले- चेचक। किसी इल्जाम का सुबूत न था। सुबूत के लिए उसका 'बिन्दू' होना ही काफी था।

बिन्दू बड़ी होने लगी। साथ-साथ तुम लोगों की नाराजगी भी बढ़ने लगी। जब लड़की को घर से निकालने की हर कोशिश नाकाम हुई तब तुमने उसका ब्याह तय कर दिया।

लड़के वाले लड़की देखने तक न आये। तुम लोगों ने कहा, ब्याह लड़के के घर से होगा। यही उनके घर का रिवाज है।

सुनकर मेरा दिल काँप उठा। ब्याह के दिन तक बिन्दू अपनी दीदी के पाँव पकड़कर बोली, 'दीदी मुझे इस तरह मत निकालो। मैं तुम्हारी गौशाला में पड़ी रहूँगी। जो कहोगी सो करूँगी..।'

बेसहारा लड़की सिसकती हुई मुझसे बोली, 'दीदी क्या मैं सचमुच अकेली हो गयी हूँ ?'

मैंने कहा, 'ना बिन्दी ना। तुम्हारी जो भी दशा हो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।' जेठानी दीदी की आँखों में आँसू थे। उन्हें रोककर वह बोली, 'बिन्दिया, याद रख, पति ही पत्नी का परमेश्वर है।'

तीन दिन हुए बिन्दू के ब्याह को। सुबह गाय-भैंस को देखने गौशाला में गयी तो देखा एक कोने में पड़ी थी बिन्दू। मुझे देखकर फफककर रोने लगी।

बिन्दू ने कहा कि उसका पति पागल है। बेरहम सास और पागल पति से बचकर वह बड़ी मुश्किल से भागी।

गुस्से और घृणा से मेरे तन-बदन में आग लग गयी। मैं बोल उठी, 'इस तरह का धोखा भी भला कोई ब्याह है ? तू मेरे पास ही रहेगी। देखूँ तुझे कौन ले जाता है।'

तुम सबको मुझ पर बहुत गुस्सा आया। सब कहने लगे, 'बिन्दू झूठ बोल रही है।' कुछ ही देर में बिन्दू के ससुराल वाले उसे लेने आ पहुँचे।

मुझे अपमान से बचाने के लिए बिन्दू खुद ही उन लोगों के सामने आ खड़ी हुई। वे लोग बिन्दू को ले गये। मेरा दिल दर्द से चीख उठा।

मैं बिन्दू को रोक न सकी। मैं समझ गयी कि चाहे बिन्दू मर भी जाए वह अब कभी हमारी शरण में नहीं आयेगी।

तभी मैंने सुना कि बड़ी बुआ जी जगन्नाथपुरी तीर्थ करने जायेंगी। मैंने कहा, 'मैं भी साथ जाऊँगी।' तुम सब यह सुनकर खुश हुए।

मैंने अपने भाई शरत को बुला भेजा। उससे बोली, 'भाई अगले बुधवार को मैं पुरी जाऊँगी। जैसे भी हो बिन्दू को भी उसी गाड़ी में बिठाना होगा।'

उसी दिन शाम को शरत लौट आया। उसका पीला चेहरा देखकर मेरे सीने पर साँप लोट गया। मैंने सवाल किया, 'उसे राजी नहीं कर पाये ?'

'उसकी जरूरत नहीं। बिन्दू ने कल अपने आपको आग लगाकर आत्महत्या कर ली।' शरत ने उत्तर दिया। मैं स्तब्ध रह गयी। मैं तीर्थ करने जगन्नाथपुरी आयी हूँ। बिन्दू को यहाँ तक आने की जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन मेरे लिए यह जरूरी था।

जिसे लोग दुःख-कष्ट कहते हैं, वह मेरे जीवन में नहीं था। तुम्हारे घर में खाने-पीने की कमी कभी नहीं हुई। तुम्हारे बड़े भैया का चरित्र जैसा भी हो, तुम्हारे चरित्र में कोई खोट न था। मुझे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन अब मैं लौटकर तुम्हारे घर नहीं जाऊँगी। मैंने बिन्दू को देखा। घर गृहस्थी में लिपटी औरत का परिचय मैं पा चुकी। अब मुझे उसकी जरूरत नहीं। मैं तुम्हारी चौखट लाँघ चुकी। इस वक्त मैं अनन्त नीले समुद्र के सामने खड़ी हूँ।

तुम लोगों ने अपने रीति-रिवाजों के परदे में मुझे बन्द कर दिया था। न जाने कहाँ से बिन्दू ने इस परदे के पीछे झाँक कर मुझे देख लिया और उसी बिन्दू की मौत ने हर परदा गिराकर मुझे आजाद किया। मझली बहू खत्म हुई।

क्या तुम सोच रहे हो कि मैं अब बिन्दू की तरह मरने वाली हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ ऐसा पुराना मजाक नहीं करूँगी।

मीराबाई भी मेरी तरह औरत थी। उसके बन्धन भी कम नहीं थे। उनसे मुक्ति पाने के लिए उसे आत्महत्या तो नहीं करनी पड़ी। मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

– तुम लोगों के आश्रय से मुक्त

मृणाल

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

स्त्री का पत्र उन्हीं कथाओं में से एक है। सन् 1941 ई० में उनकी मृत्यु हुई।

रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के महान कथाकारों में से एक हैं। कविता, चित्रकला और संगीत की दुनिया में भी उनका अपना विशेष स्थान है। लिखने का अति सरल ढंग अपनाते हुए उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और जमींदारों के विषय में लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं का अभिन्न अंग बनी रहीं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म सन् 1861 ई० में पश्चिमी बंगाल के एक धनी जमींदार परिवार में हुआ था। अपने लम्बे लेखन काल में उन्होंने 90 से अधिक लघुकथाओं की रचना की। स्त्री का पत्र उन्हीं कथाओं में से एक है। सन् 1941 ई० में उनकी मृत्यु हुई।

शब्दार्थ

आवभगत = आदर-सत्कार। **पीहर** = मायका। **बाजूबन्द** = एक आभूषण जो बाँह में पहना जाता है। **नाकाम** = असफल। **जगन्नाथपुरी** = उड़ीसा राज्य में है जो हिन्दुओं के मान्य चारों धाम में से एक है।

प्रश्न-अभ्यास

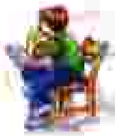

कुछ करने को

1- महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिवर्ष **8 मार्च** को **अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस** मनाया जाता है। इस अवसर पर आपके आसपास कोई आयोजन हो तो उसमें शामिल होकर देखिए कि वहाँ क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं। उन कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

2- अपने क्षेत्र की किसी सफल नारी का साक्षात्कार लेकर जानिए कि किन गुणों के कारण उसे जीवन में सफलता मिली।

3- महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों में दहेज, हत्या, मारपीट, छेड़छाड़, बलात्कार, अपहरण आदि के लिए भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में कैद, जुर्माना या दोनों के साथ-साथ, कठोर कारावास से लेकर आजीवन कारावास तक की सजाएँ निर्धारित की गयी हैं। इस विषय में अपने शिक्षक/शिक्षिका से और जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी के आधार पर महिलाओं के साथ होने वाले अपराध और उनके लिए निर्धारित दंड का पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

विचार और कल्पना

1- 'नारी-सम्मान एवं उसकी सुरक्षा' विषय पर कक्षा में चर्चा करके एक 'सुझाव-पत्र' तैयार कीजिए तथा अपनी कक्षा में टाँग दीजिए।

2- बालिकाओं की शिक्षा और उनके अधिकार की रक्षा के लिए आप अपने स्तर पर अपने परिवार में क्या-क्या करना चाहेंगे? एक सूची तैयार कीजिए।

3- प्रस्तुत पाठ पत्र-शैली में है। आप भी पत्र लिखिए -

(क) अपनी माता के नाम, जिसमें घरेलू समस्याओं का जिक्र हो।

(ख) अपने शिक्षक/शिक्षिका को, जिसमें विद्यालय को स्वच्छ-सुन्दर बनाने के तरीकों पर चर्चा हो।

4- समाचार-पत्रों में नारी-शोषण की विभिन्न घटनाएं प्रकाशित होती रहती है। दहेज प्रथा भी एक ऐसी कुरीति है जिससे नारी-शोषण होता है। दहेज प्रथा उचित है अथवा अनुचित इस बारे में अपने विचार लिखिए।

पत्र से

1- बिन्दू को लेकर मझली बहू के घरवाले क्यों चिन्तित हो उठे ?

2- बिन्दू का विवाह तय करते समय क्या धोखा किया गया ?

3- बिन्दू को दोबारा बलात् ससुराल भेजने का क्या परिणाम निकला ?

4- मझली बहू ने पत्र के अन्त में क्या निश्चय व्यक्त किया ?

5- कथन के भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कविताएँ थीं तो मामूली लेकिन उनमें मेरी आवाज थी।

(ख) माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी।

(ग) मैं तुम्हारी चौखट लाँघ चुकी हूँ।

(घ) मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

भाषा की बात

1- दिये गये मुहावरों के अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए-

(क) चैन की साँस लेना। (ख) फूटी आँखों न सुहाना। (ग) सीने पर साँप लोटना।

2- 'दूर' शब्द का अर्थ होता है- 'जो निकट न हो।' परन्तु इसी 'दूर' शब्द के पहले 'सु' उपसर्ग जुड़कर नया शब्द बनता है- 'सुदूर', जिसका अर्थ होता है - जो बहुत दूर हो। इसी प्रकार 'सु' उपसर्ग जोड़कर चार अन्य शब्द बनाइए।

3- 'आज <u>पन्द्रह</u> साल हुए हमारे ब्याह को।'

'मुझे <u>बारहवाँ</u> साल लगा था।'

ऊपर के वाक्यों में आये 'पन्द्रह' और 'बारहवाँ' शब्द को देखिए। दोनों शब्द 'साल' की विशेषता बता रहे हैं। दोनों शब्द संख्यावाची विशेषण हैं- एक गणनाबोधक है, दूसरा क्रमबोधक। दो अन्य संख्यावाची विशेषण शब्द लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इसे भी जानें

श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर को सन् 1913 ई० में साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था।

पाठ 16

सोना

5GT2VP

(प्रस्तुत रेखाचित्र 'मेरा परिवार' से लिया गया है। इसमें लेखिका ने एक हिरनी के बच्चे का बड़ा मार्मिक शब्द-चित्र खींचा है।)

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डाक्टर धीरेन्द्र नाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है 'गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों से हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं, परन्तु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल में सम्बद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी ? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी, क्योंकि आप जानती हैं मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भलीभाँति देखभाल हो सकेगी।'

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरण नहीं पालूँगी, परन्तु आज उस नियम को भंग किये बिना इस कोमल प्राण जीव की रक्षा सम्भव नहीं है।

सोना इसी प्रकार अचानक आयी थी, परन्तु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग की रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। लम्बे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल, शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चम्पकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गये।

परन्तु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजन प्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।

प्रशान्त वनस्थली में जब अलस भाव से रोमन्थन करता हुआ बैठा मृग-समूह शिकारियों के आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्यः प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्यः जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था, अतः मृगी माँ ने अपनी सन्तान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दिये।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाये। उनमें से किसी के परिवार की सदय गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन जीवित रखा।

सुस्मिता वसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्षु अवस्था में मेरे पास ले आयी। शावक अवांछित तो था ही उसके बचने की आशा

भी धूमिल थी, परन्तु उसे मैंने स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरम्भ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती मानों वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाये से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गन्दा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर ही वह बाहर निकलती।

उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परन्तु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गयी, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। वह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता, क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरान्त दूसरी आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखने वालों को भय होता था कि मेरे सिर पर चोट न लग जाय, परन्तु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई सम्भावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आँखों से ऐसे अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

अनेक विद्यार्थिनियों की भारी भरकम गुरुजी से सोना को क्या लेना देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगायी थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक

लगेगा तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए सम्भव नहीं था।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अन्तर जानता है और स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्गद होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है, पर हिरन यह अन्तर नहीं जानता। अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा, मानो पूछता हो क्या यह उचित है। वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति बताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमन्त-वसन्त, कुतिया फ्लोरा सबसे पहले इस नये अतिथि को देखकर रुष्ट हुए, परन्तु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते और बिल्ली उस पर उछलते कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर, और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते।

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोयें ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गयी। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गयी। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखायी देने लगी। परन्तु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकान्त कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूल कर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गयी। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसको इतने लघु जीवों से घिरा देख उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गम्भीर विस्मय से भर गयी।

एक दिन देखा फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गयी है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिन्त लेटी है। पिल्ले आँखें बन्द रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमन्त, बसन्त या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी परन्तु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

सम्भवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गयी थी। पिल्लों के बड़े

होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमनेवाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनन्दोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर से आर-पार चौकड़ी भरती रही।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप आदि तो साथ जाने वाले थे ही। पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकती थी।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था न प्रत्यावर्तन का, उसी से उसकी निराश जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। जुलाई को लौटकर जब मैं बंगले के द्वार पर आ खड़ी हुई तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूली मेरे कन्धे पर आ बैठी। हेमन्त, बसन्त मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे। पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती। सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक दूसरे का मुख देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुःखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परन्तु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गयी थी कि इधर-उधर कुछ खोजती सी वह प्रायः कम्पाउंड से बाहर, निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परन्तु उसका खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लम्बी रस्सी से बाँधना आरम्भ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बन्धन की सीमा भूल कर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अन्तिम साँस और अन्तिम उछाल थी।

सब सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आये और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण कथा का अन्त हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है।

– महादेवी वर्मा

हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान रचनाकारों में से एक महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० को फर्रुखाबाद में हुआ था। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में सुन्दर रचनाएँ की हैं। **'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार',** आदि इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। सन् 1987 ई० को प्रयाग में इनका निधन हो गया। मरणोपरान्त 1988 में पद्मविभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया।

शब्दार्थ

प्रसुप्त = सोयी हुई, छिपी हुई। **चम्पकवर्णा** = चम्पा के वर्ण वाली, पीले रंग वाली। **सुवर्णा** = सुन्दर वर्ण (रंग) वाली। **हरिण-शावक** = हिरन का बच्चा। **अरण्य परिवेश** = जंगल के वातावरण, वन-प्रदेश। **रोमन्थन** = जुगाली, पागुर। **सद्यःप्रसूता** = जिसने तुरन्त ही बच्चे को जन्म दिया हो। **सद्यःजात** = जो तुरन्त पैदा हुआ हो। **सदय** = दयालु, दया भाव से युक्त। **मुमूर्षु** = मरणासन्न, जो मर रहा हो। **अनिर्वचनीय** = अकथनीय, जिसे वाणी द्वारा न कहा जा सके। **परिक्रमा** = फेरा लगाना। **कम्पाउंड** = आँगन, प्रांगण, परिसर।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- अपने आस-पास के पालतू पशुओं के स्वभाव की जानकारी प्राप्त कीजिए। यह भी बताइए कि किन-किन जंगली जानवरों को प्रायः लोग पालते हैं।

2- आपके घर में कोई पालतू जानवर होगा। उसकी बहुत सी आदतें आप को बहुत अच्छी लगती होंगी, जबकि कुछ आदतों पर आप नाराज हो जाते होंगे। उन आदतों को लिखिए और अपने साथियों को बताइए।

विचार और कल्पना

1- यह पाठ एक रेखाचित्र है जिसे शब्दचित्र भी कहते हैं। सोना हिरनी थी जिसे लेखिका पालती थी और उस पर एक रेखा चित्र लिखा। आपके यहाँ भी कोई पशु पाला जाता होगा। पाठ के आधार पर आप भी उस पशु पर रेखा चित्र लिखिए।

2- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उन अन्तरों को बताइए जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करते हैं।

रेखाचित्र से

1- सोना जंगल के परिवेश से गाँव में कैसे आ गयी ?

2- सोना को छोटे बच्चे क्यों अधिक प्रिय थे ?

3- लेखिका के अन्य पालतू पशु कौन-कौन थे ? वे सोना के प्रति क्या भाव रखते थे ?

4- मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ थी जिनके कारण महादेवी जी को अपना निश्चय बदलना पड़ा?

5- फ्लोरा, सोना के संरक्षण में अपने बच्चों को सुरक्षित क्यों मानती थी ?

भाषा की बात

1- ग्रीष्मावकाश शब्द ग्रीष्म + अवकाश की सन्धि से बना है। इसमें अ+अ = आ हो गया है। नीचे लिखे गये शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए -

शैशवावस्था, छात्रावास, मध्यावकाश, शीतावकाश।

2- 'भीतर-बाहर' और 'स्नेह-प्रदर्शन' समस्त पद हैं। इनके विग्रह और समास के नाम है- भीतर और बाहर = द्वन्द्व समास तथा स्नेह का प्रदर्शन = तत्पुरुष समास। निम्नलिखित शब्दों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए-

मृग-समूह, हाथ-मुँह, उतार-चढ़ाव, व्यथा-कथा।

3- 'कौतुक' में 'प्रिय' शब्द जोड़कर 'कौतुकप्रिय' शब्द बनता है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दो में 'प्रिय' शब्द जोड़कर अन्य शब्द बनाइए और उनके अर्थ भी लिखिए -

अनुशासन, जन, लोक, न्याय, सत्य।

4- 'प्रत्यावर्तन' शब्द प्रति+आवर्तन की सन्धि से बना है। इ+आ=या हो गया है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करके नया शब्द बनाइए -

प्रति+एक, अति+आचार, प्रति+उपकार, इति+आदि, उपरि+उक्त।

इसे भी जानें

- महादेवी वर्मा को सन् 1982 ई० में उनकी काव्यकृति 'यामा' के लिए भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया था।
- महादेवी वर्मा को उनकी साहित्यिक प्रतिभा हेतु 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
- 16 सितम्बर 1991 को भारत सरकार के डाक-तार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ महादेवी वर्मा के सम्मान में 2 रुपये का युगल टिकट जारी किया।

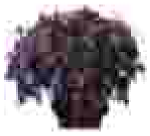

पाठ 17

अमरकंटक से डिंडौरी

5H2XXC

(प्रस्तुत यात्रावृत्तांत में नर्मदा नदी के सौन्दर्य के साथ-साथ उसके तट के जन-जीवन की अन्तरंग झलक भी मिलती है।)

गंगोत्री, यमुनोत्री या फिर नर्मदाकुंड- ये वे स्थान हैं, जहाँ नदी पहाड़ की कोख से निकलकर पहाड़ की गोद में आती है। पहाड़ के गर्भ में छुपा हुआ पानी यहाँ अवतरित होता है। नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है।

यहाँ से हमारी यात्रा का नया अध्याय शुरू हुआ। अभी तक हम नर्मदा के उत्तर-तट पर थे, यहाँ से दक्षिण-तट पर आ गये। अभी तक उद्गम की ओर चलते थे, आज से संगम की ओर चलेंगे।

कोई दो घंटे में कपिलधारा पहुँच गये। अधिकांश परकम्मावासी यहाँ से सड़क पकड़कर

कबीरचौरा होते हुए डिंडौरी निकल जाते हैं। लेकिन हमें तो नर्मदा के किनारे-किनारे ही जाना था, पर कपिलधारा के सामने की गहरी घाटी को देखकर ठिठक कर खड़े हो गये। वहाँ से कोई नहीं जाता। वहाँ पगडंडी तो क्या, पगडंडी की चुटिया तक नहीं थी। बहुत चिरौरी करने पर भी कोई हमारे साथ आने को तैयार न हुआ। उलटे डरा दिया कि गर्मी के दिन हैं, साँप-बिच्छू नदी के किनारे आ जाते हैं, वहाँ से जाना खतरे से खाली नहीं। लेकिन जायेंगे तो नर्मदा के संग-संग, इसी घाटी में से, चाहे जो हो।

रक्षा करना माँ। ऐन कपिलधारा से नीचे उतरना संभव नहीं था। थोड़ा आगे बढ़कर नीचे उतरे।

प्रपात के आसपास मधुमक्खी के सैकड़ों छत्तों को देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। दीपावली के समय एक भी छत्ता नहीं था। मधुमक्खियों को गरमी में शायद यहाँ की ठंडक भाती हो।

दूधधारा से भी नीचे उतरे। चट्टानों पर से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। कहीं-कहीं तो समझ में नहीं आता था कि कहाँ से बढ़ें। गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे। थक जाते तो बैठ लेते, फिर तुरंत चल देते। इस सुनसान घाटी में हम अनावश्यक विलंब करना नहीं चाहते थे।

विलंब नर्मदा भी नहीं चाहती थी। तेज गति से कूदती-दौड़ती नीचे उतर रही थी। अमरकंटक कोई बड़ा पहाड़ नहीं। आते समय हम इसे दो घंटे मे चढ़ गये थे। उस समय नर्मदा का साथ छोड़ दिया था, सीधे पगडंडी से चढ़े थे। इस बार नर्मदा के किनारे-किनारे, बिना पगडंडी के उतर रहे थे।

नर्मदा की उँगली पकड़कर चल रहे थे। आमने-सामने ऊँचे हरे-भरे पहाड़ और बीच में गहरी और सँकरी घाटी में से बहती हुई तन्वंगी नर्मदा। तीसरे पहर घाटी चौड़ी होने लगी। मैं समझ गया कि पहाड़ खत्म होने को है, मैदान आ गया। हमारी खुशी का क्या कहना।

अमरकंटक का नाम मेकल भी है। इसलिए नर्मदा का नाम मेकलसुता भी है। मेकल अपनी बिटिया को वनाच्छादित घाटी में से किस हिफाजत से नीचे छोड़ गया है, इसे आज हमने अपनी आँखों से देखा।

आगे जाने पर पगडंडी मिल गयी। इक्के-दुक्के ग्रामीण भी दिखाई देने लगे। शाम होते-होते पकरीसोंढा पहुँचे। खूब सबेरे आगे बढ़े। सामने के सूखे खेतों में से बहती नर्मदा साफ दिखाई दे रही थी। अभी तक तंग घाटी के घने शाल वन में नर्मदा छुपी थी, मुश्किल से ही नजर आती थी, लेकिन यहाँ से वह दूर से भी साफ-साफ दिखाई देती है। नर्मदा का जन्म मानों गौरैया की तरह हुआ है। ऊपर कुंड के घोंसले में अंडे की तरह अवतरित हुई है। अंडे में से बाहर वह यहाँ नीचे निकली है।

आगे एक पेड़ की छाया में भोजन बनाने बैठे। पास में किरंगी गाँव है। वहाँ का एक ग्रामीण नहाने आया था। हमारे बारे में जानकर बहुत खुश हुआ। कहने लगा, 'गुरु जी, हमारे गाँव में अखंड कीर्तन हो रहा है, जरूर आइए, मेरे घर पर ही ठहरिए।'

उसके घर पहुँचे। पड़ोस में अखंड कीर्तन चल रहा था। दूसरे दिन आम का विवाह था, तो वहाँ दो दिन रह गये। उसके पड़ोसी ने घर के आँगन में आम का पेड़ लगाया था। दो साल से उसमें आम लग रहे थे। लेकिन जब तक वह उस पेड़ का विवाह नहीं कर देता, तब तक उसके फल नहीं खा सकता। ऐसा रिवाज है यहाँ। सो चमेली की बेल के साथ आम का विवाह रचाया है।

पंडित जी आये हैं, विधिवत विवाह हो रहा है। हम यह सब रसपूर्वक देखते रहे ! गाँव के कठोर जीवन में ऐसे अनुष्ठान रस घोलते हैं।

गारकामट्टा में गोपी कोटवार के घर रहे। गाँव में एक जगह शादी हो रही थी। हम भी शामिल हुए। भाँवरें पड़ रही थीं। सभी ने दूल्हा-दुलहन के पैर पूजे। मैंने भी पूजे। दुलहन के हाथ में दो रुपये रखे तो तहलका मच गया। सभी दस्सी-दस्सी जो दे रहे थे !

एक मजे की बात यह थी कि यह लड़की का नहीं, लड़के का घर था।

यहाँ चार भाँवरे लड़की के घर पड़ती हैं, तीन लड़के के घर। यहाँ से चलने पर नर्मदा का एक प्रपात देखने को मिला। नर्मदा के बीसियों प्रपातों में सबसे लहुरा- कोई एक मीटर ऊँचा। पानी ने पथरीले पाट को काट-छाँट कर खोखला बना दिया है, मानो नदी में कोठियाँ बनी हों। इसलिए इसका नाम है कोठीघुघरा। घुघर या घुघरा यानी प्रपात।

श्रीहीन धरती पर से आगे बढ़ रहे थे। दीवाली के समय जब सामने तट से चले थे, तब कैसी हरियाली थी ! उसकी जगह अब है सूरज की ज्वाला से चटखी हुई भूरी, सूखी जमीन। छाया के लिए कहीं पेड़ तक नहीं। डिंडौरी तक ऐसा ही उजाड़ रहेगा। इसलिए बड़े सबेरे चल देते और नौ-दस बजे तक जो गाँव आ जाता, वहीं ठहर जाते।

अगला पड़ाव बंजरटोला। इसके बाद सिवनीसंगम। यहाँ सिवनी नदी नर्मदा में आ मिली है। संगम पर बने मंदिर में रहने की बढ़िया व्यवस्था हो गयी और यहाँ का एकांत भी मन को छू गया, तो यहाँ चार दिन रह गये। शादियों के दिन थे। मंदिर में सामने की पगडंडी से बारातें निकलती रहती थीं।

अद्‌भुत आकर्षण है माँ नर्मदा में।

वैसाखी पूर्णिमा के दिन खूब बारातें देखने को मिलीं। शहनाई, निशान, नगाड़े, टिमकी और झुमका के स्वर दिन भर गूँजते रहे। दूल्हा-दुलहन हाथ में पंखा लिये घोड़े पर सवार रहते। एक काँवर में दहेज रहता। पगडंडी पर चलते एक के पीछे एक दस-पंद्रह बाराती रहते। बस हो गयी बारात !

तोताराम पास के गोरखपुर बाजार में मनिहारी का सामान बेचता है। रोज नर्मदा नहाने आता है। साथ में रहता है उसका तोता- पिंजड़े में नहीं, उसके कंधे पर, लेकिन उड़ नहीं पाता। तोते से बड़ा प्यार है उसे। अकेला जीव, न घर न घाट। न कोई आगे, न पीछे। थोड़े-बहुत पैसे इकट्ठे होते ही तीरथ करने निकल पड़ता है। एक दिन मैंने पूछा, 'तोताराम, तुमने शादी नहीं की ?'

'सगाई तो तीन बार हुई, लेकिन शादी एक बार भी नहीं हुई। किसी न किसी कारण से सगाई टूट जाती है।'

तीन-तीन सगाई के बावजूद कुँवारे तोताराम की व्यथा-कथा सुनकर मन उदास हो गया। लेकिन उसने अपने मन को मना लिया है। तोते में मन लगाया है।

एक दिन गोरखपुर का बाजार कर आये, फिर चल दिये। गरमी के दिन थे, खेतों में फसल नहीं थी। पहाड़ नहीं, जंगल नहीं। जंगल तो दूर, छाया के लिए एक पेड़ नहीं। सामने का गाँव दूर से ही दिखता रहता। रास्ता भटक जाने का कोई भय नहीं। सो पगडंडी की परवाह किये बिना नर्मदा के किनारे-किनारे ही चलते।

धूप के कारण बुरा हाल था, पर आज आकाश में बादल थे। पथरकुचा तक पहुँचते-पहुँचते आकाश बादलों से घिर गया। यहाँ नदी के पाट में बहुत-सी चट्टाने थीं। वरना यहाँ तक नदी केवल मिट्टी में होकर बहती है। कपड़े धोने तक के लिए पत्थर नहीं था। दोपहर का भोजन हमने नदी के पथरीले पाट में बनाया। भोजन करके चले ही थे कि तेज वर्षा के कारण भागकर गाँव में शरण लेनी पड़ी। थोड़ी देर की वर्षा में गाँव में इतना कीचड़ हो गया कि चलना मुश्किल हो गया। इसलिए रात वहीं रह गये।

पौ फटते ही कुछ दूर चलने पर लिखनी गाँव में एक वृद्धा से पीने के लिए पानी माँगा तो उसने कहा, 'आओ बेटा, पानी देती हूँ। लेकिन ऐसा करो, रोटी खाकर पानी पीओ। धूप में से आ रहे हो। खाकर पानी पीओगे तो ठीक रहेगा।'

माँ जैसे बच्चे को फुसलाती है, दुलराती है, बिलकुल वही भाव। उसके नेह को टाल नहीं सके। वह रोटियाँ ले आयी, उन पर शक्कर रखी थी। 'लो, खा लो बेटा।'

कैसा तृप्ति का भाव था उसके चेहरे पर !

अगला पड़ाव मझियाखार, फिर गोमतीसंगम। फिर लछमनमड़वा। लछमनमड़वा में एक साध्वी रहती है। मैंने उनसे कहा कि नौकरी के कारण पूरी परिक्रमा एक साथ नहीं कर सकता, छुट्टियों में थोड़ी-थोड़ी करके करता हूँ, तो उन्होंने कहा, 'बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है। इसका दुःख न करना।

दोपहर को डिंडौरी पहुँचे। डिंडौरी बड़ा कस्बा है। यहाँ नर्मदा पार करने वाले ग्रामीणों का क्रम अबाध गति से चलता रहता है। सिर पर गठरी या कंधे पर काँवर लिये पुरुष तथा सिर पर लकड़ी का गट्ठर और पीठ पर बच्चे को बाँधे स्त्रियाँ। पहले 'नर्मदा मैया की जय !' बोलकर प्रणाम करतीं, फिर नदी में उतरतीं। फिसलन और तेज प्रवाह के कारण बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है। मुख्य धारा आने पर सभी चौकस और चौकन्ने हो जाते हैं, सधे हुए पाँवों से या एक-दूसरे की बाँह पकड़ कर धीरे-धीरे बढ़ते हैं। कैसा रोमांच है इसमें !

यह दृश्य मुझे मगन रखता है। तीन दिन तक यही देखते रहे, फिर आ गये। अमरकंटक से डिंडौरी तक की यह यात्रा सबसे कठिन होनी चाहिए थी, लेकिन यही सबसे आसान थी। आधे दिन का पहाड़, एक दिन का जंगल, फिर कुछ दिनों का सँकरा मैदान। नर्मदा जैसी असामान्य नदी भला सामान्य नियम को क्यों कर मानने चली।

-अमृतलाल बेगड़

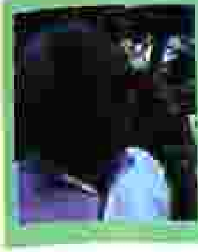

इस यात्रावृत्तांत के लेखक श्री अमृतलाल वेगड़ का जन्म 03 अक्टूबर 1928 को जबलपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। नर्मदा नदी के प्रति विशेष लगाव के कारण ये नर्मदा तट की 1800 किलोमीटर से अधिक की कठिन पदयात्रा कर चुके हैं। लेखन के साथ कला में भी रुचि रखने वाले श्री वेगड़ के **नर्मदा-परिक्रमा** पर आधारित अनेक चित्र विभिन्न प्रदर्शनियों में आमंत्रित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हें वर्ष 2004 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनका निधन 6 जुलाई 2018 ई० को हुआ।

शब्दार्थ

परकम्मावासी = प्रति वर्ष नर्मदा नदी की परिक्रमा करने वाले लोग। **तन्वंगी** = दुबले-पतले शरीर वाली। **वनाच्छादित** = चारों तरफ वन से घिरा हुआ। **दस्सी-दस्सी** = दस-दस पैसा। **लहुरा** = छोटा। **श्रीहीन** = शोभा रहित।

प्रश्न-अभ्यास

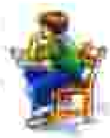

विचार और कल्पना

1- नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थान अमरकंटक है। हिमालय पर्वत से हमारे देश की अनेक नदियाँ निकलती हैं। नीचे दी गयी नदियों के नाम से उनके उद्‌गम स्थल का मिलान कीजिए -

नदियाँ	उद्‌गम स्थल
गंगा	यमुनोत्री
यमुना	गंगोत्री
सतलज	शेषनाथ झील
झेलम	राकस ताल

2- यदि लेखक की तरह आपको किसी लम्बी पैदल यात्रा पर जाना पड़े तो सूची बनाइए कि आप अपने साथ क्या-क्या सामान ले जायेंगे।

कुछ करने को

1- जहाँ दो या दो से अधिक नदियाँ मिलती हैं, उस स्थान को **संगम** कहते हैं। हमारे देश में कई संगम स्थल हैं। निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत कुछ संगम स्थलों का विवरण तैयार करें।

क्रमांक	संगमस्थल का नाम	नदियों का नाम जो मिलती हैं।
जैसे -	सिवनीसंगम	नर्मदा-सिवनी

2- यात्रा देश के अंदर भी की जाती है और विदेशों की भी। विदेश की यात्रा के समय कुछ प्रपत्रों की भी आवश्यकता पड़ती है जैसे- 'पासपोर्ट' और 'वीज़ा'। इनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

3- आपके घर के आसपास भी कोई न कोई नदी होगी। पता कीजिए-उसका उद्गम स्थल कहाँ से है और वह कहाँ तक जाती है।

4- हमारी नदियाँ हमारे ही द्वारा निरंतर प्रदूषित की जा रही हैं जिससे इनके अस्तित्व पर संकट पैदा हो गया है। कक्षा में शिक्षक की मदद से चर्चा कीजिए कि-

-नदियाँ किन-किन कारणों से प्रदूषित हो रही हैं ?

– आप इनके बचाव के लिए क्या-क्या कर सकते हैं ?

5- अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का विस्तार से वर्णन कीजिए।

पाठ से

1- नर्मदाकुंड से आगे की यात्रा को लेखक ने नया अध्याय क्यों कहा है ?

2- लेखक ने विवाह और उससे सम्बन्धित जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उसे लिखिए ?

3- लिखनी गाँव में पहुँचने पर लेखक न चाहने पर भी रोटी क्यों खा लेता है ?

4- "बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है।" साध्वी ने ऐसा क्यों कहा ?

5- यात्रावृत्त में आये सभी गाँवों व स्थानों की सूची बनाइए।

भाषा की बात

1- 'नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है।' इस पंक्ति में नर्मदा नदी की तुलना नवजात शिशु से की गयी है। इस प्रकार के अन्य वाक्य पाठ से चुनकर लिखिए।

2- निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

गंगा, नदी, पर्वत, बेटी,

3- 'गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे।' इस वाक्य में तीन प्रकार के शब्द-युग्मों का प्रयोग हुआ है। नीचे लिखे शब्द-युग्मों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

इक्का-दुक्का, दस्सी-दस्सी, हरे-भरे, आमने-सामने,

4- अद्‌भुत आकर्षण में 'अद्‌भुत' शब्द 'विशेषण' है। पाठ में आये पाँच विशेषण और विशेष्य शब्द छाँटकर लिखिए।

पाठ 18

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

(प्रस्तुत कविता में कवि के जीवन का उल्लास और उत्साह छलक रहा है। कविता द्वारा कवि ने जीवन की कठिनाइयों से लड़ने और सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी फिर से नया निर्माण करने की प्रेरणा दी है।)

नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
बह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया, फिर
रात आयी और काली
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण,

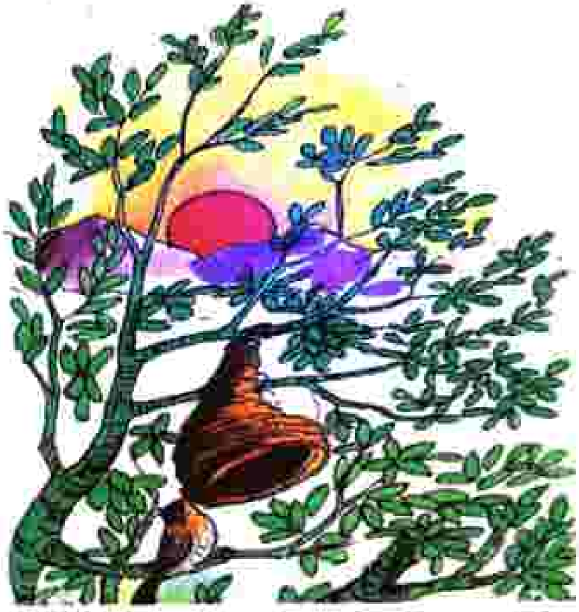

किन्तु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
बह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़-पुखड़ कर,
गिर पड़े, टूटे विटप वर,
हाय तिनकों से विनिर्मित
घोसलों पर क्या न बीती,

डगमगाये जबकि कंकड़
ईंट पत्थर के महल पर
बोल, आशा के विहंगम
किस जगह पर तू छिपा था,
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज वक्ष फिर-फिर।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर !

-हरिवंश राय 'बच्चन'

डा० हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 ई० को प्रयाग में हुआ। इनकी रचनाओं में 'मधुशाला', 'मधुकलश', 'निशानिमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'सतरंगिणी', 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। इनका निधन 18 जनवरी सन् 2003 ई० को मुम्बई में हो गया।

शब्दार्थ

नीड़ = चिड़ियों का घोंसला। **नेह** = स्नेह, प्रेम। **आह्वान** = आमन्त्रण, बुलाहट। **भीत** = भयभीत, डरा हुआ। **प्राची** = पूर्व दिशा। **भीम कायावान भूधर** = विशाल आकार वाले पहाड़। **विनिर्मित** = बने हुए। **विहंगम** = पक्षी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- 'आशावान व्यक्ति कभी पराजित नहीं होता है' -विषय पर कक्षा में भाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

2- किसी पक्षी अथवा घोंसले का चित्र बनाइए।

विचार और कल्पना

1- जैसे चिड़िया अपना घोंसला बनाती है वैसे ही मनुष्य अपने घर बनाता है। बताइए एक घर के निर्माण में किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

2- 'आशा ही जीवन है' विषय पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

3- आपके जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते होंगे जब आप बहुत निराश हो जाते होंगे। विचार करें और लिखें कि निराशा के क्षणों में आप स्वयं को किस प्रकार संभालते हैं ?

कविता से

1- 'नेह का आह्वान फिर-फिर' से कवि का क्या आशय है ?
2- निराशा में आशा का संचार किस रूप में होता है ?
3- निम्नलिखित भाव किन पंक्तियों में आये हैं ? लिखिए -
   (क) घोर तूफान और रात्रि के कष्टों से भयभीत जन में उषा अपनी सुनहली किरणों से नयी आशा भर देती है।

   (ख) तेज आँधी के झोंकों के चलने से जब बड़े-बड़े पेड़-पर्वत काँपने लगते हैं, बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं, तब तिनकों से बने हुए घोंसलों की क्या स्थिति होगी ?

4- सतत संघर्ष और निर्माण की क्रियाओं की उपमा कवि ने किससे दी है ?

5- निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

   (क) रात-सा दिन हो गया, फिर रात आयी और काली।

   (ख) बोल, आशा के विहंगम किस जगह पर तू छिपा था।

भाषा की बात

1- 'धूलि धूसर बादलों ने भूमि को इस भाँति घेरा' में ध-ध और भ-भ की आवृत्ति हुई है। इससे पंक्ति में एक सरसता आ गयी है। बताइए यहाँ किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

2- कविता में 'फिर-फिर', 'जन-जन' तथा 'कण-कण' (पुनरुक्त शब्द) का प्रयोग हुआ है। 'फिर-फिर' निर्माण करने की 'क्रिया' की विशेषता प्रकट कर रहा है जबकि 'जन-जन' से 'प्रत्येक जन' और 'कण-कण' से 'प्रत्येक कण' का बोध हो रहा है। इसी प्रकार नीचे लिखे पुनरुक्त शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए -

घर-घर, क्षण-क्षण, धीरे-धीरे, भाई-भाई।

3- इस कविता को पढ़िए-

"दुख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान;
यही दुख-सुख-विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।"

(क) कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढकर लिखिए।

(ख) इस कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) कविता पर अपने साथियों से पूछने के लिए प्रश्न बनाइए।

(घ) कविता को उचित शीर्षक दीजिए।

इसे भी जानें

- हरिवंश राय बच्चन की गिनती हिन्दी के लोकप्रिय कवियों में होती है।
- इनकी कृति 'दो चट्टाने' को सन् 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में आपको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

पाठ 19

जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

5HKQ1H

(इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।)

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधी जी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी', और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए - 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थीं परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आते थे पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है ? सत्य क्या है ? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देतीं। चिन्तित रहतीं कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा। कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो ? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ अतः स्कूल में मेरा नाम तब लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया

और सर पर हाथ रख कर बोले – 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे। उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया। माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं-कितने प्रकार के होते हैं, कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिन्दगी कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ ह्वेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि- किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चन्दा चुकाने का पैसा नहीं था, अतः वहीं बैठकर किताबें निकलवा कर पढ़ता रहता था। अपने छोटे से हरि भवन में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनन्द मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', विक्टर ह्यूगो का 'पेरिस का कुबड़ा', गोर्की की 'मदर' और सबसे मनोरंजक सर्वा-रीज का 'विचित्र वीर' (यानी डान क्विक्जोट) हिन्दी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्ल जी कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बन्द करना है तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधूरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बन कर किताब ईश्यू करा लाता, या काश इस किताब को खरीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पायेगा। पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिए मत, फिर भी मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था। पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेच कर बी०ए० की पाठ्य पुस्तकें लेने सेकेंड हैंड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्यपुस्तकें खरीद कर भी दो रुपये बच गये थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगी थी न्यू थियेटर्स वाले। बहुत चर्चा थी उसकी।

लेकिन मेरी माँ को सिनेमा देखना बिल्कुल नापसन्द था। माँ का मानना था उसी से बच्चे बिगड़ते हैं, लेकिन उसके गाने सिनेमा गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दुःख के दिन अब बीतत नाहीं' उसे अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते आँखों से आँसू भी आ जाते थे जाने क्यों ?

एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल। एक दिन बोली-दुःख के दिन बीत जायेंगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है, धीरज से काम ले। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फिल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा- अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी। मैंने माँ को बताया कि किताबें बेच कर दो रुपये मेरे पास बचे हैं।' वे दो रुपये लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउन्टर पर एक पुस्तक रक्खी है- 'देवदास', लेखक-शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, दाम केवल एक रुपया। मैंने पुस्तक उठा कर उलटी-पलटी तो पुस्तक-विक्रेता बोला- 'तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।' मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रुपये में पिक्चर ? दस आने में 'देवदास' खरीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से बचे एक रुपया छः आना माँ के हाथ में रख दिये।'

अरे तू लौट कैसे आया ? पिक्चर नहीं देखी ?' माँ ने पूछा। 'नहीं माँ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया देखो।' माँ की आँखों में आँसू आ गये। खुशी के थे, या दुःख के यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से खरीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

– धर्मवीर भारती

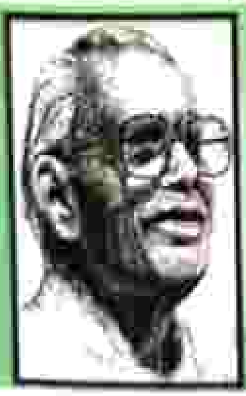

पद्मश्री धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई० को इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए०, डी० फिल० करने के पश्चात् वे वहीं हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए. फिर धर्मयुग साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक होकर मुम्बई चले गये। धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार हैं। **'अन्धायुग'** इनका गीतिनाट्य तथा **'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा'**, इनके काव्यसंग्रह हैं। **'गुनाहों का देवता'** और **'सूरज का सातवाँ घोड़ा'** जैसे इनके उपन्यासों की हिन्दी में बहुत चर्चा हुई है। **'गुलकी बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान'** आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान है। इनका निधन 4 सितम्बर सन् 1997 ई० को मुम्बई में हुआ।

शब्दार्थ

आह्वान = बुलावा। **अदम्य** = जो दबाया न जा सके, प्रबल। **रोमांचित** = पुलकित, जिसके रोंये खड़े हों। **टॉलस्टाय** = रूसी कथाकार। **विक्टर ह्यूगो** = फ्रांसीसी कथाकार। **मैक्सिम गोर्की** = एक रूसी कथाकार। **ईजाद कराना** = निर्गत कराना।

प्रश्न-अभ्यास

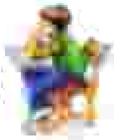

कुछ करने को

1- आर्य समाज संस्था ने भारतीय समाज में फैली रूढ़ियों एवं आडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया। यह भारत का नव जागरण काल था। आर्य समाज के अतिरिक्त ब्रह्म समाज, प्रार्थनासमाज, थियोसॉफिकल सोसाइटी जैसी अनेक संस्थाओं ने भी समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया था। इन संस्थाओं के संस्थापकों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

2- वर्तमान समय में प्रकाशित होने वाली किन्हीं चार बाल पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

3- पाठ में आई पुस्तकों को अपने पुस्तकालय से खोजकर पढ़िए।

विचार और कल्पना

1- 'अपने बचपन से जुड़ी किसी घटना/अनुभव' पर दस वाक्य लिखिए।

2- अपने द्वारा पुस्तकालय से पढ़ी गई किसी किताब के बारे में लिखिए- कि औरों को उस किताब को क्यों पढ़ना चाहिए ?

संस्मरण से

1- बचपन में लेखक के घर कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थीं ?

2- बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्द जी की जीवनी क्यों पसन्द थी ?

3- लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन-सी दो पुस्तकें मिली थीं और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई ?

4- पुस्तकों को पढ़ना एक अच्छी आदत है। बच्चों का मन कहानियों में खूब लगता है। आजकल दूसरी भाषाओं के उपन्यास और कहानियों के हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध हैं। नीचे लिखी पुस्तकों के लेखकों के नाम बताइए।

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
आनन्द मठ	....
अन्ना कॅरेनिना	....
पेरिस का कुबड़ा	....
मदर	....
विचित्र वीर	....
सत्यार्थ प्रकाश	....

सूरज का सातवाँ घोड़ा ....
देवदास ....
कपाल कुण्डला ....

5. लेखक ने देवदास फिल्म क्यों नहीं देखी ?
6. क्या आपने कोई फिल्म देखी है ? कौन सी ? उस फिल्म में आपको क्या अच्छा लगा, क्या नहीं ?

भाषा की बात

1. 'वेदोदय' तथा 'दुर्गेश' शब्द क्रमशः वेद+उदय तथा दुर्ग+ईश की सन्धि से बने हैं। इसमें अ+उ=ओ तथा अ+ई=ए हो गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विग्रह कीजिए -

   वीरोचित, देवोचित, रमेश, सुरेश।

2. इस पाठ में लाइब्रेरी, इंडिया, थियेटर, पिक्चर आदि अंग्रेजी के शब्द आये हैं। इनके लिए प्रयुक्त होने वाले हिन्दी शब्दों को लिखिए।

3. नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित-तीनों प्रकार के वाक्य हैं। उन्हें पहचान कर उनके सामने वाक्य का प्रकार लिखिए-

   (क) मेरे पिता आर्य समाज, रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

   (ख) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थीं।

   (ग) जल्दी -जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपया छह आना माँ के हाथ में रख दिये।

   (घ) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवे दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

   (ङ) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

4. निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि इसमें कर्ता, क्रिया, कर्म में से किसका लोप है-

   लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रखकर बोले- वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे।

इसे भी जानें

स्टैचू ऑफ यूनिटी (सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा) भारत के गुजरात प्रान्त में है।

पाठ 20

5HUL3A

झाँसी की रानी

(प्रस्तुत पाठ वृन्दावनलाल वर्मा के प्रसिद्ध उपन्यास 'झाँसी की रानी' से लिया गया है। इसमें अंग्रेजों के साथ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अन्तिम युद्ध का वर्णन है।)

• • • • •

'मुन्दरबाई' रघुनाथसिंह, ने कहा,'रानी साहब का साथ एक क्षण के लिए भी न छूटने पावे। आज अन्तिम युद्ध लड़ने जा रही हैं।'

मुन्दर-'आप कहाँ रहेंगे ?'

रघुनाथसिंह-'जहाँ उनकी आज्ञा होगी। वैसे आप लोगों के समीप ही रहने का प्रयत्न करूँगा।'

मुन्दर-'मैं चाहती हूँ आप बिल्कुल निकट ही रहें। मुझे लगता है, मैं आज मारी जाऊँगी। आपके निकट होने से शान्ति मिलेगी।'

रघुनाथसिंह- 'मैं भी नहीं बचूँगा। रानी साहब को किसी प्रकार सुरक्षित रखना है। मैं तुम्हें तुरन्त ही स्वर्ग में मिलूँगा। केवल आगे-पीछे की बात है। वह सूखी हँसी हँसा।'

मुन्दर ने रघुनाथसिंह की ओर आँसू भरी आँखों से देखा। कुछ कहने के लिए होंठ हिले। रघुनाथसिंह की आँखें भी धुँधली हुईं।

दूर से दुश्मन के बिगुल के शब्द की झाईं कान में पड़ी। मुन्दर ने रघुनाथसिंह को मस्तक नवाकर प्रणाम किया और उसके ओट में जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ डाले। रघुनाथसिंह ने मुन्दर को नमस्कार किया और दोनों शर्बत लिये हुए रानी के पास पहुँचे ।

मुन्दर ने जूही को पिलाया, रघुनाथसिंह ने रानी को। अंग्रेजों के बिगुल का साफ शब्द सुनायी दिया। तोप का धड़ाका हुआ, गोला सन्ना कर ऊपर से निकल गया। रानी दूसरा कटोरा नहीं पी सकीं ।

रानी ने रामचन्द्र देशमुख को आदेश दिया, 'दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुँचा देना। तुमको आज मेरे प्राणों से बढ़कर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को छू न पायें। बस। घोड़ा लाओ।'

मुन्दर घोड़े ले आयी। उसकी आँखें छलछला रही थीं। पूर्व दिशा में अरुणिमा फैल गयी। अबकी बार कई तोपों का धड़ाका हुआ।

रानी मुस्करायीं। बोलीं, 'यह तात्या की तोपों का जवाब है।'

मुन्दर की छलछलाती हुई आँखों को देखकर कहा, 'यह समय आँसुओं का नहीं है मुन्दर! जा, तुरन्त अपने घोड़े पर सवार हो। अपने लिए आये हुए घोड़े को देखकर बोली 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है। परन्तु अब दूसरे को चुनने का समय ही नहीं है। इसी से काम

निकालूँगी।'

जूही के सिर पर हाथ फेरकर कही, 'जा जूही अपने तोपखाने पर। छका तो दे इन बैरियों को आज।'

जूही ने प्रणाम किया। जाते हुए कह गयी, 'इस जीवन का यथोचित अभिनय आपको न दिखला पायी। खैर।'

इतने में सूर्य का उदय हुआ।

सूर्य की किरणों ने रानी के सुन्दर मुख को प्रदीप्त किया। उनके नेत्रों की ज्योति दुहरे चमत्कार से भासमान हुई। लालवर्दी के ऊपर मोती-हीरों का कंठा दमक उठा और चमक पड़ी म्यान से निकली हुई तलवार।

रानी ने घोड़े को एड़ लगायी। पहले जरा हिचका फिर तेज हो गया।

उत्तर और पश्चिम की दिशाओं में तात्या और राव साहब के मोर्चे थे। दक्षिण में बाँदा के नवाब का, रानी ने पूर्व की ओर झपट लगायी।

गत दिवस की हार के कारण अंग्रेज जनरल सावधान और चिन्तित हो गये थे। इन लोगों ने अपनी पैदल पल्टनें पूर्व और दक्षिण की बीहड़ में छिपा लीं और हुजर सवारों को कई दिशाओं में आक्रमण की योजना की। तोपें पीठ पर रक्षा के लिए थीं। हुजर सवारों ने पहला हमला कड़ाबीन बन्दूकों से किया। बन्दूकों का जवाब बन्दूकों से दिया गया। रानी ने आक्रमण पर आक्रमण करके हुजर सवारों को पीछे हटाया। दोनों ओर के सवारों की बेहिसाब दौड़ से धूल के बादल छा गये। रानी के रणकौशल के मारे अंग्रेज जनरल थर्रा गये। काफी समय हो गया परन्तु अंग्रेजों को पेशवाई मोर्चा से निकल जाने की गुंजायश न मिली ।

जूही की तोपें गजब ढा रही थीं। अंग्रेज नायक ने इन तोपों का मुँह बन्द करना तय किया। हुजर सवार बढ़ते जाते थे, मरते जाते थे, परन्तु उन्होंने इस तरफ की तोपों को चुप करने का निश्चय कर लिया था। रानी ने जूही की सहायता के लिए कुमुक भेजी। उसी समय उनको खबर मिली कि पेशवा की अधिकांश ग्वालियरी सेना और सरदार 'अपने महराज' की शरण में चले गये। मुन्दर ने रानी से कहा, 'सवेरे अस्तबल का प्रहरी रिस-रिस कर अपने सरकार का स्मरण कर रहा था। मुझे सन्देह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगे।'

'गाँठ में समय न होने के कारण कुछ नहीं किया जा सकता था।', रानी बोलीं, 'अब जो कुछ सम्भव है वह करो।'

इनकी लालकुर्ती अब तलवार खींचकर आगे बढ़ी। उस धूल धूसरित प्रकाश में भी तलवारों की चमचमाहट ने चकाचौंध पैदा कर दी। कुछ ही समय उपरान्त समाचार मिला कि ग्वालियरी सेना के पर पक्ष में मिल जाने के कारण रावसाहब के दो मोर्चे छिन गये हैं और अंग्रेज उनमें से घुसने लगे हैं। रानी के पीछे पैदल पल्टन थी। उसको स्थिति सँभालने की आज्ञा देकर वह एक ओर बढ़ी। उधर-सवार जूही के तोपखाने पर जा टूटे। जूही तलवार से भिड़ गयी। घिर गयी और मारी गयी। परन्तु शत्रु की तलवार जिसे चीरने में असमर्थ रही वह थी जूही की क्षीण मुस्कुराहट जो उसके होठों पर अनन्त दिव्यता की गोद में खेल गयी।

वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने देखा कि तोपखाने का अफसर गोरे रंग की एक सुन्दर युवती थी और उसके होठों पर मुस्कुराहट थी!

समाचार मिलते ही रानी ने इस तोपखाने का प्रबन्ध किया।

इतने में ही ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने छिपे हुए पैदलों को छिपे हुए स्थानों से निकाला। वे संगीनें सीधी किये रानी के पीछे वाली पैदल पल्टन पर दो पार्श्वों से झपटे। पेशवा की पैदल पल्टन घबरा गयी। उसके पैर उखड़े। भाग उठी। रानी ने प्रोत्साहन, उत्तेजन दिया। परन्तु उनके और उस भागती हुई पल्टन के बीच में गोरों की संगीनें और हुजरों के घोड़े आ चुके थे।

अंग्रेजों की कड़ाबीनें, संगीनें और तोपें पेशवाई सेना का संहार कर उठीं । पेशवा की दो तोपें भी उन लोगों ने छीन लीं। अंग्रेजी सेना बाढ़ पर आयी हुई नदी की तरह बढ़ने और फैलने लगी।

रानी की रक्षा के लिए लालकुर्ती सवार अटूट शौर्य और अपार विक्रम दिखलाने लगे। न कड़ाबीन की परवाह, न संगीन का भय और तलवार तो मानो उनको ईश्वरीय देन थी। उस तेजस्वी दल ने घंटों अंग्रेजों का प्रचंड सामना किया। रानी धीरे-धीरे पश्चिम दक्षिण की ओर अपने मोर्चे की शेष सेना से मिलने के लिए मुड़ी। यह मिलान लगभग असम्भव था, क्योंकि उस भागती हुई पैदल पल्टन और रानी के बीच में बहुसंख्यक हुजर सवार और संगीन बरदार पैदल थे। परन्तु उन बचे-खुचे लालकुर्ती वीरों ने अपनी तलवारों की आड़ बनायी।

रानी ने घोड़े की लगाम अपने दाँतों में थामी और दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाना आरम्भ कर दिया । दक्षिण-पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। आगे चलकर बाबा गंगादास की कुटी के पीछे दक्षिण और पश्चिम की ओर हटती हुई पेशवाई पैंदल पल्टन।

मुन्दर रानी के साथ थी। अगल-बगल रघुनाथ सिंह और रामचन्द्र देशमुख। पीछे कुँवर गुलमुहम्मद और केवल बीस-पच्चीस अवशिष्ट लाल सवार। अंग्रेजों ने थोड़ी देर में इन सबके चारों तरफ घेरा डाल दिया। सिमट-सिमट कर उस घेरे को कम करते जा रहे थे।

परन्तु रानी की दुलत्थू तलवारें आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थीं। पीछे के वीर सवारों की संख्या घटते-घटते नगण्य हो गयी। उसी समय तात्या ने रुहेली और अवधी सैनिकों की सहायता से अंग्रेजों के व्यूह पर प्रहार किया। तात्या कठिन से कठिन व्यूह में होकर बच निकलने की रणविद्या का पारंगत पंडित था। अंग्रेज थोड़े से सवारों को लालकुर्ती का पीछा करने के लिए छोड़कर तात्या की ओर मुड़ गये। सूर्यास्त होने में कुछ विलम्ब था।

लालकुर्ती का अन्तिम सवार मारा गया। रानी के साथ केवल चार सरदार और उनकी तलवारें रह गयीं। पीछे से कड़ाबीन और तलवार वाले दस-पन्द्रह गोरे सवार। आगे कुछ संगीन वाले गोरे पैदल।

रानी ने पीछे की तरफ देखा- रघुनाथसिंह और गुलमुहम्मद तलवार से अंग्रेज सैनिकों की संख्या कम कर रहे थे। एक ओर रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव की रक्षा की चिन्ता में बरकाव करके लड़ रहा था। रानी ने देशमुख की सहायता के लिए मुन्दर को इशारा किया और वह स्वयं संगीनबरदारों को दोनों हाथों की तलवारों से खटाखट साफ करके आगे बढ़ने लगीं। एक संगीनबरदार की हूल रानी के सीने के नीचे पड़ी। उन्होंने उसी समय तलवार से उस संगीनबरदार को खत्म कर दिया। हूल करारी थी, परन्तु आँतें बच गयीं।

रानी ने सोचा, स्वराज्य की नींव बनने जा रही हूँ। रानी का खून बह निकला।

उस संगीनबरदार के खत्म होते ही बाकी भागे। रानी आगे निकल गयी। उनके साथी भी दायें-बायें और पीछे। आठ दस गोरे घुड़सवार उनको पछियाते हुए।

रघुनाथ सिंह पास थे। रानी ने कहा, "मेरी देह को अंग्रेज न छूने पावें।"

गुलमुहम्मद ने भी सुना- और समझ लिया। वह और भी जोर से लड़ा।

एक अंग्रेज सवार ने मुन्दर पर पिस्तौल दागी। उसके मुँह से केवल ये शब्द निकले। 'बाईसाहब, मैं मरी। मेरी देह ...... भगवान्।'

अन्तिम शब्द के साथ उसने एक दृष्टि रघुनाथ सिंह पर डाली और वह लटक गयी। रानी ने मुड़कर देखा। रघुनाथ सिंह से कहा, 'सँभालो उसे। उसके शरीर को वे न छूने पावें।' और वे घोड़े को मोड़कर अंग्रेज सवारों पर तलवारों की बौछार करने लगीं। कई कटे। मुन्दर को मारने वाला मारा गया।

रघुनाथ सिंह फुर्ती के साथ घोड़े से उतरा। अपना साफा फाड़ा। मुन्दर के शव को पीठ पर कसा और घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा।

गुलमुहम्मद बाकी सवारों से उलझा। रानी ने फिर सोन रेखा नाले की ओर घोड़े को बढ़ाया। देशमुख साथ हो गया।

अंग्रेज सवार चार-पाँच रह गये थे। गुलमुहम्मद उनको बहकावा देकर रानी के साथ हो लिया। रानी तेजी के साथ नाले पर आ गयीं।

घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया- बिल्कुल अड़ गया। रानी ने पुचकारा। कई प्रयत्न किये परन्तु सब व्यर्थ।

वे अंग्रेज सवार आ पहुँचे ।

एक गोरे ने पिस्तौल निकाली और रानी पर दागी। गोली उनकी बायीं जंघा में पड़ी। वे गले में मोती-हीरों का दमदमाता हुआ कंठा पहने हुए थीं। उस अंग्रेज सवार ने रानी को कोई बड़ा सरदार समझकर विश्वास कर लिया कि अब कंठा मेरा हुआ। रानी ने बायें हाथ की तलवार फेंक कर घोड़े की लगाम पकड़ी और दूसरे जाँघ तथा हाथ की सहायता से अपना आसन सँभाला। इतने में वह सवार और भी निकट आया। रानी ने दायें हाथ के वार से उसको समाप्त कर दिया। उस सवार के पीछे से एक और सवार निकल पड़ा।

रानी ने आगे बढ़ने के लिए फिर एक पैर की एड़ लगायी।

घोड़ा बहुत प्रयत्न करने पर भी अड़ा रहा। वह दो पैरों से खड़ा हो गया। रानी को पीछे खिसकना पड़ा। एक जाँघ काम नहीं कर रही थी। बहुत पीड़ा थी। खून के फव्वारे पेट और जाँघ के घाव से छूट रहे थे।

गुलमुहम्मद आगे बढ़े हुए अंग्रेज सवार की ओर लपका।

परन्तु अंग्रेज सवार ने गुलमुहम्मद के आ पहुँचने के पहले ही तलवार का वार रानी के सिर पर किया।

वह उनकी दायीं ओर पड़ा। सिर का वह हिस्सा कट गया और आँख बाहर निकल पड़ी इस पर भी उन्होंने अपने घातक पर तलवार चलायी और उसका कन्धा काट दिया।

गुलमुहम्मद ने उस सवार के ऊपर कसकर अपना भरपूर हाथ छोड़ा। उसके दो टुकड़े हो गये

बाकी दो तीन अंग्रेज सवार बचे थे। उन पर गुलमुहम्मद बिजली की तरह टूटा। उसने एक को घायल कर दिया। दूसरे के घोड़े को लगभग अधमरा कर दिया। वे तीनों मैदान छोड़कर भाग गये। अब वहाँ कोई शत्रु न था। जब गुलमुहम्मद मुड़ा तो उसने देखा रामचन्द्र देशमुख घोड़े से गिरती हुई रानी को साधे हुए हैं।

दिन भर के थके माँदे, भूखे-प्यासे, धूल और खून में सने हुए गुलमुहम्मद ने पश्चिम की ओर मुँह फेर कर कहा, 'खुदा, पाक परवरदिगार, रहम रहम।'

रघुनाथ सिंह और देशमुख ने रानी को घोड़े पर से सँभाल कर उतारा।

रघुनाथ सिंह ने देशमुख से कहा, 'एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करना चाहिए। अपने घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर चलो। सूर्यास्त होना ही चाहता है।'

देशमुख का गला रुँधा था। बालक दामोदरराव अपनी माता के लिए चुपचाप रो रहा था।

रामचन्द्र ने पुचकार कर कहा, 'इनकी दवा करेंगे, अच्छी हो जायेंगी, रो मत।'

रामचन्द्र ने रघुनाथ सिंह की सहायता से रानी को सँभाल कर अपने घोड़े पर रखा।

रघुनाथ सिंह ने गुलमुहम्मद से कहा, 'कुँवर साहब, इस कमजोरी से काम और बिगड़ेगा याद कीजिए, अपने मालिक ने क्या कहा था। अंग्रेज अब भी मारते काटते दौड़ धूप कर रहे हैं। यदि आ गये तो रानी साहब की देह का क्या होगा।'

गुलमुहम्मद चौंक पड़ा। साफे के छोर से आँसू पोंछे। गला बिल्कुल सूख गया था। आगे बढ़ने का इशारा किया। वे सब द्रुतगति से बाबा गंगादास की कुटी पर पहुँचे।

– वृन्दावनलाल वर्मा

पद्मभूषण वृन्दावन लाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी सन् 1889 ई० को मऊरानीपुर झाँसी में हुआ था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने झाँसी में ही रह कर वकालत आरम्भ की। छात्र जीवन से ही उन्होंने लिखना आरम्भ किया और जीवन पर्यन्त लिखते रहे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएं-**'गढ़ कुंडार', 'लगन', 'संगम', 'विराटा की पद्मिनी', 'मुसाहिब जू', 'झाँसी की रानी', 'मृगनयनी' (उपन्यास) 'धीरे-धीरे', 'राखी की लाज', 'जहाँदारशाह', 'मंगलसूत्र' (नाटक), 'शरणागत', 'कलाकार का दंड' (कहानी संग्रह)** हैं। वृन्दावनलाल वर्मा को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए भारत सरकार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राज्यों के साहित्य पुरस्कार, डालमिया साहित्यकार संसद, हिन्दुस्तानी अकादमी प्रयाग आदि के सर्वोत्तम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनकी मृत्यु 23 फरवरी सन् 1969 को हुई।

शब्दार्थ

बिगुल = सेना या पुलिस में सिपाहियों को एकत्र करने के लिए बजाया जाने वाला तुरही के ढंग का बाजा। **नवाकर** = झुका कर। **विधर्मी** = स्वधर्म के विपरीत आचरण करने वाला। **भासमान** = प्रकाशित। **कंठा** = बड़े मनकों की माला जो गले से सटी रहती है। **कुंवर** = अश्वारोही, घुड़सवार। **कुमुक** = किसी सेना के सहायतार्थ भेजी हुई सेना। **संगीन** = एक प्रकार का नोकदार हथियार। **पार्श्व** = दायें-बायें का भाग, अगल-बगल। **अवशिष्ट** = बचा हुआ, बाकी। **नगण्य** = जो गणना में न आ सके, तुच्छ, छुद्र। **व्यूह** = सैनिकों को युद्धभूमि में उपयुक्त स्थान पर रखना, विधिपूर्वक रखना। **पारंगत** = निपुण, दक्ष। **बरकाव** = बचाव। **हूल** = लम्बी कटार, दो धारा छुरा। **आवेश** = जोश, गुस्सा। **विलम्ब** = देर। **द्रुतगति** = तेज रफ्तार।

प्रश्न-अभ्यास

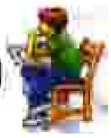

कुछ करने को

1- इस पाठ में कुछ वीरांगनाओं के नाम आये हैं। पुस्तकों से और अपने बड़े-बुजुर्गों से कुछ और वीरांगनाओं के बारे में जानकारी एकत्र करके कक्षा में या बालसभा में चर्चा कीजिए।

2- झाँसी की रानी से सम्बन्धित कविताएँ व लेख पढ़िए।

3- विद्यालय में शिक्षक की सहायता से आवश्यकतानुसार लालकुर्ती ब्रिगेड, लक्ष्मीबाई ब्रिगेड, सुभाष ब्रिगेड, आजाद ब्रिगेड आदि का गठन करें और विद्यालय सम्बन्धी क्रिया-कलापों, जैसे- प्रार्थना, खेलकूद, स्वच्छता, मिड-डे-मील, सांस्कृतिक गतिविधियों में अपने दायित्व का निर्वहन उत्कृष्टता के साथ कीजिए।

विचार और कल्पना

1- पाठ में किस समय की घटना का वर्णन किया गया है। इससे देश की दशा के बारे में क्या पता चलता है ?

2- झाँसी की रानी के जीवन की कहानी संक्षेप में लिखिए।

3- युद्ध के अन्तिम क्षणों में जब नया घोड़ा सोनरेखा नाले पर अड़ गया, उस समय रानी लक्ष्मीबाई के मन में क्या विचार आये होंगे ?

4- रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों द्वारा अपने अधिकार-क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप के कारण युद्ध किया। यदि आपके दैनिक कार्यों और विद्यालयीय क्रिया-कलापों में कोई अनावश्यक हस्तक्षेप करे तो आपको कैसा लगेगा और आप उसके लिए क्या करेंगे ?

पाठ से

1- मुन्दरबाई उदास क्यों थी ?
2- रानी ने रामचन्द्र देशमुख को क्या आदेश दिया ?
3- 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है।' रानी ने घोड़े के लिए यह वाक्य क्यों कहा?
4- जूही ने अंग्रेज सेना का मुकाबला कैसे किया ?
5- अंग्रेज जनरल ने रानी से युद्ध के लिए क्या योजना बनायी थी ?
6- अन्तिम समय में रानी की पराजय क्यों हुई ?
7- नीचे दिये गये वाक्यों में रिक्त स्थानों को कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त शब्दों की सहायता से पूरा कीजिए-
   (क) मेरी देह को ....छूने न पाये। (पेशवा के सैनिक, अंग्रेज सैनिक, तात्या के सैनिक)
   (ख) लालकुर्ती सैनिक............ रक्षा कर रहे थे। (अंग्रेजों की, रानी की, पेशवा की)
   (ग) दामोदार राव रानी का............ था। (सगा पुत्र, छोटा भाई, दत्तक पुत्र)
   (घ) अंग्रेजों से युद्ध में............ रानी का साथ दे रहे थे। (तात्या और पेशवा, तात्या और राजपूत, पेशवा और हुजर)

भाषा की बात

1- निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए-
   अन्तिम, सुरक्षित, सूर्यास्त, विलम्ब ।
2- निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-
   आसमान, कुमुक, अवशिष्ट, नगण्य, प्रोत्साहन।
3- निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए-
   (क) रघुनाथ फुर्ती से घोड़े से उतरा और अपना साफा फाड़ा।
   (ख) घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर चलो।
   (ग) मुझे सन्देह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगे।
   (घ) रानी ने कहा कि यदि मैं मारी जाऊँ तो दामोदर को सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देना।
4- निम्नलिखित शब्दों में क्रम से इत, आई, मान और ई प्रत्यय लगे हैं-
   सुरक्षित, पेशवाई, आसमान, कमजोरी
   इन प्रत्ययों से युक्त अन्य शब्द इस पाठ से चुनिए।

इसे भी जानें

वृन्दावनलाल वर्मा को ऐतिहासिक उपन्यासकार होने के कारण 'सर वाल्टर स्काट' कहा जाता है।

पाठ 21

बस की यात्रा

(प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक ने पुरानी बस को सजीव रूप में देखते हुए बस यात्रा को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है)

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएंगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था, इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं ? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उस बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा-"यह बस चलती भी है ?" वह बोले-"चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा-"वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।

हम आगा -पीछा करने लगे । डॉक्टर मित्र ने कहा-"डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं। "आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा-राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे, जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुजर रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतजार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें की पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे-"बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे बस की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती- "निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।"

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत जोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहे पसारे उसका इंतजार करते। कहते-"वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।"

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंजिल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी–मजाक चालू हो गया।

– हरिशंकर परसाई

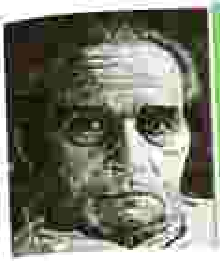

हरिशंकर परसाई का जन्म सन् 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक ग्राम में हुआ था। आप हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार है। अपने यथार्थमूलक व्यंग्य में आपने भ्रष्टाचार, स्वार्थ, घूसखोरी, आदि पर चुटीली भाषा में चोट की है। **पगडंडियों का जमाना, जैसे-उनके दिन फिरे, सदाचार का ताबीज, निठल्ले की डायरी, तट की खोज** आदि आपके द्वारा लिखी पुस्तके है। इनका देहावसान 10 अगस्त सन् 1995 को जबलपुर में हुआ था।

शब्दार्थ

निमित्त = कारण, साधन। **डाकिन** = डाकू का स्त्रीलिंग। **वयोवृद्ध** = बड़ा बूढ़ा। **रंक** = धनहीन गरीब। **ग्लानि** = अपने किसी कार्य पर उत्पन्न खेद, पश्चाताप। **गोता** = डुबकी लगाना। **कूच करना** = जाना। **इत्तफाक** = संयोग। **बियावान** = निर्जन स्थान। **अन्त्येष्टि** = दाह कर्म। **प्रयाण** = प्रस्थान। **बेताबी** = बेचैनी। **फकीर** = संसार त्यागी। **क्षीण** = घटा हुआ, जो कम हो गया हो। **उत्सर्ग** = त्याग, छोड़ना। **बेताबी** = बेचैनी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- अधिक धुआँ फेंकने वाले, जर्जर और बहुत पुराने वाहन वायु प्रदूषण और अन्य खतरों को बढ़ावा देते हैं। वायु प्रदूषण के अन्य घटक कौन से हैं ? इसका उल्लेख करते हुए वायु प्रदूषण पर एक लेख तैयार कीजिए।

2- वायु प्रदूषण तथा अन्य प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए पोस्टर नारे तैयार कीजिए। पोस्टर अपने विद्यालय में लगाइए और लोगों को भी जागरूक कीजिए।

विचार और कल्पना

1- लेखक ने बस को सजीव रूप में देखा है। अनुमान लगाइए कि अगर लेखक बस से बातचीत करते तो उनके और बस के बीच में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या बातें होतीं ?

2- आपने भी कहीं न कहीं की यात्रा अवश्य की होगी। अपनी किसी यात्रा के रोचक अनुभवों पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

व्यंग्य से

1- लोगों ने शाम वाली बस से सफ़र नहीं करने की सलाह क्यों दी थी ?

2- लेखक के मन में बस को देखकर श्रद्धा का भाव क्यों उमड़ पड़ा ?

3- बस तक लेखक और उनके मित्रों को छोड़ने आये हुए लोगों के मन में क्या-क्या भाव आ रहे थे ?

4- ''बस सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौर से गुजर रही थी।'' इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

5- ''उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है।'' लेखक ने यह किसके लिए, क्यों और किस संदर्भ में कहा ?

भाषा की बात

1- पाठ में कुछ शब्द जैसे-हाजिर, सफर उर्दू भाषा के शब्द हैं। ऐसे ही पाठ में आये अन्य भाषाओं के शब्दों को छाँटकर लिखिए।

2- जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, उसे **प्रश्नवाचक वाक्य** कहते हैं। प्रश्नवाचक वाक्य में क्या, कहाँ, क्यों, कैसे आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु पाठ में कुछ ऐसे वाक्य हैं जिनके उत्तर में इन शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे-वह बोले चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी। हाँ जी, और कैसे चलेगी ?

इस प्रकार के पाँच वाक्य आप भी बनाइये।

3- जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें **अनेकार्थी शब्द** कहते हैं। जैसे-बस-यातायात के साधन के अर्थ में और पर्याप्त के अर्थ में प्रयुक्त होता है। नीचे दिये गये अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कर	कर
पत्र	पत्र
सोना	सोना
मन	मन

इसे भी जानें

बी०एस० का पूर्ण नाम 'भारत स्टेज' है। किसी भी गाड़ी के प्रदूषण सीमा की जानकारी इसी से प्राप्त होती है। बी०एस० का मानक समय-समय पर बदलता रहता है। इसे पॉल्यूशन कण्ट्रोल बोर्ड निर्धारित और नियमित करता है। बी०एस० के साथ लगने वाली संख्या मुख्य रूप से प्रदूषण की सीमा तय करती है। ये संख्या जितनी अधिक होगी प्रदूषण स्तर उतना ही कम होगा। गाड़ियों से पर्यावरण कम से कम प्रदूषित हो इसको ध्यान में रखते हुए भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 29 मार्च 2017 बुधवार को एक आदेश दिया जिसके आधार पर अप्रैल 2017 से बी०एस० 3 की गाड़ियों की बिक्री पर पूर्णतः रोक लग गया। देश में बी०एस० 4 का नियम लागू हो गया है।

पाठ 22

खान-पान की बदलती तस्वीर

5IDD6K

(इस पाठ में लेखक ने समयानुसार मनुष्य के खान-पान में आए आधुनिक तथा मिश्रित शैली के परिवर्तनों को बताया है।)

पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में हमारी खान-पान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली-डोसा, बड़ा-साँभर, रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं है। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध हैं और अब तो उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हों, उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएँगे। 'फास्ट फूड' (शीघ्रता से तैयार किया जा सकने वाला खाद्य पदार्थ) का चलन भी बड़े शहरों में खूब बढ़ा है।

इस 'फास्ट-फूड' में बर्गर, नूडल्स जैसी कई चीजें शामिल हैं। एक जमाने में कुछ ही लोगों तक सीमित 'चाइनीज नूडल्स' अब संभवतः किसी के लिए अजनबी नहीं रहे। इसी तरह नमकीन के कई स्थानीय प्रकार अभी तक भले मौजूद हों, लेकिन आलू-चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेजी से घर-घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

गुजराती ढोकला-गठिया भी अब देश के कई हिस्सों में स्वाद ले कर खाए जाते हैं और बंगाली मिठाइयों की केवल रसभरी चर्चा ही नहीं होती, वे कई शहरों में पहले की तुलना में अधिक उपलब्ध हैं। यानी स्थानीय व्यंजनों के साथ ही अब अन्य प्रदेशों के व्यंजन-पकवान भी प्रायः हर क्षेत्र में मिलते हैं और मध्यमवर्गीय जीवन में भोजन-विविधता अपनी जगह बना चुकी है।

कुछ चीजें और भी हुई हैं। मसलन अंग्रेजी राज तक जो ब्रेड केवल साहबी ठिकानों तक सीमित थी, वह कस्बों तक पहुँच चुकी है और नाश्ते के रूप में लाखों, करोड़ों भारतीय घरों मे सेंकी-तली जा रही है। खानपान की इस बदली हुई संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित नई पीढ़ी हुई है, जो पहले के स्थानीय व्यंजनों के बारे में बहुत कम जानती है, पर कई नए व्यंजनों के बारे में बहुत-कुछ जानती है। स्थानीय व्यंजन भी तो अब घटकर कुछ ही चीजों तक सीमित रह गए हैं। बंबई की पाव-भाजी और दिल्ली के छोले-कुलचों की दुनिया पहले की तुलना में बढ़ी जरूर है पर अन्य स्थानीय व्यंजनों की दुनिया छोटी हुई है। जानकार यह भी बताते हैं कि मथुरा के पेड़ों और आगरा के पेठे-नमकीन में अब वह बात कहाँ रही! यानी जो चीजें बची भी हुई हैं उनकी गुणवत्ता में फर्क पड़ा है। फिर मौसम और ऋतुओं के अनुसार फलों-खाद्यानों से जो व्यंजन और पकवान बना करते थे, उन्हें बनाने की फुरसत भी अब कितने लोगों को रह गई है। अब गृहणियों या कामकाजी महिलाओं के लिए खरबूजे के

बीज सुखाना-छीलना और फिर उनसे व्यंजन तैयार करना सचमुच दुःसाध्य है।

यानी हम पाते हैं कि एक ओर तो स्थानीय व्यंजनों में कमी आई है, दूसरी ओर वे ही देसी-विदेशी व्यंजन अपनाए जा रहे हैं, जिन्हें बनाने-पकाने में सुविधा हो। जटिल प्रक्रियाओं वाली चीजें तो कभी-कभार व्यंजन-पुस्तिकाओं के आधार पर तैयार की जाती है। अब शहरी जीवन में जो भागमभाग है, उसे देखते हुए यह स्थिति स्वाभाविक लगती है। फिर कमरतोड़ महँगाई ने भी लोगों को कई चीजों से धीरे-धीरे वंचित किया है। जिन व्यंजनों में बिना मेवे के स्वाद नहीं आता, उन्हें बनाने-पकाने के बारे में भला कौन चार बार नहीं सोचेगा।

खानपान की जो एक मिश्रित संस्कृति बनी है, इसके अपने सकारात्मक पक्ष भी हैं। गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध हैं। नयी पीढ़ी को देश-विदेश के व्यंजनो को जानने का सुयोग मिला है-भले ही किन्हीं कारणों से और किन्हीं खास रूपों में (क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि ये विविध व्यंजन इन्हें निखालिस रूप में उपलब्ध नहीं है।)

आजादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं। बड़े शहरों के मध्यमवर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के वक्त बच्चों के 'टिफिन'-डिब्बे खुलते हैं तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की एक खुशबू उठती है।

हम खानपान से भी एक-दूसरे को जानते हैं। इस दृष्टि से देखें तो खान-पान की नई संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभाँति तभी अंकुरित होंगे जब हम खानपान से जुड़ी हुई दूसरी चीजों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली-बानी, भाषा-भूषा आदि को भी किसी-न-किसी रूप में ज्यादा जानेंगे, जो किसी खान-पान-विशेष से जुड़ी हुई है।

इसी के साथ ध्यान देने की बात यह है कि 'स्थानीय' व्यंजनों का पुनरुद्धार भी जरूरी है जिन्हें अब 'एथनिक' कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है। ऐसे स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचारार्थ नहीं छोड़ दिये जाने चाहिए। पाँच सितारा होटलों में वे कभी कभार मिलते रहें, पर घरों- बाजारों से गायब हो जाएँ तो यह एक दुर्भाग्य ही होगा। अच्छी तरह बनाई-पकाई पूड़िया-कचौड़िया- जलेबियाँ भी अब बाजारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्जियों से भरे हुए समोसे भी अब कहाँ मिलते है ? उत्तर भारत में उपलब्ध व्यंजनों की भी दुर्गति हो रही है।

अचरज नहीं कि पहले उत्तर भारत में जो चीजें गली-मुहल्लों की दुकानो में आम हुआ करती थी, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है। यह भी एक कड़वा सच है कि कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथा कथित आधुनिकता के चलते छोड़ दिया है और पश्चिम की नकल में बहुत सी ऐसी चीजें अपना ली हैं, जो स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के मामले में हमारे बहुत अनुकूल नहीं है।

हो यह भी रहा है कि खानपान की मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का असली और अलग स्वाद नहीं ले पा रहे। अक्सर प्रीतिभोजों और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीजें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्डमड्ड होता रहता है। खानपान की मिश्रित या विविध संस्कृति हमें कुछ चुनने का अवसर देती है, हम उसका लाभ प्रायः नहीं उठा रहे हैं। हम अक्सर एक ही प्लेट में कई तरह के और कई बार तो बिलकुल विपरीत प्रकृति वाले व्यंजन परोस लेना चाहते हैं।

इसलिए खानपान की जो मिश्रित-विविध संस्कृति बनी है-और लग यही रहा है कि यह और अधिक विकसित होने वाली है उसे तरह-तरह से जाँचते रहना जरूरी है।

–प्रयाग शुक्ल

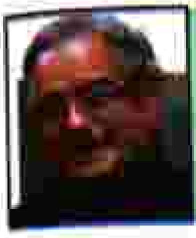

28 मई सन 1940 ई0 को कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में जन्मे प्रयाग शुक्ल हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, कला-समीक्षक, अनुवादक एवं कहानीकार है। इन्हें साहित्य अकादमी के अनुवाद पुरस्कार, शरद जोशी सम्मान एवं द्विजदेव सम्मान से अलंकृत किया जा चुका है।

शब्दार्थ

संस्कृति=आचरणगत परम्परा। **ढोकला-गठिया**=बेसन से बने नमकीन भोज्य पदार्थ। **गुणवत्ता**=विशिष्टता। **फुरसत**=अवकाश, खाली वक्त। **दुःसाध्य**=जो कठिनता से सिद्ध किया जा सके, दुष्कर। **वंचित**=रहित, विमुख। **दुर्गति**=दुर्दशा। **मिश्रित**=मिली-जुली। **सुयोग**=सुन्दर योग, बढ़िया मौका। **निखालिस**=बिना मिलावट का, विशुद्ध। **तबादला**=स्थानान्तरण। **पुनरुद्धार**=फिर से ठीक करना। **दुर्गति**=दुर्दशा। **आधुनिकता**=आधुनिक होने का भाव।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- आपको जो व्यंजन अत्यधिक स्वादिष्ट लगता हो उसकी निर्माण विधि लिखिए तथा चित्र बनाइए।

2- किन्हीं चार पैकेट बन्द भोज्य पदार्थों के पीछे लिखे आवश्यक निर्देशों को पढ़कर लिखिए तथा काट कर उत्तर पुस्तिका में चिपकाइए। अब लिखिए कि हर निर्देश का क्या तात्पर्य है?

3-यदि आपके घर कोई मेहमान आते हैं और वह आपके यहाँ का प्रसिद्ध भोजन करना चाहते हैं तो आप उन्हें क्या खिलाएंगे ? वह कैसे बनेगा ?

4- फास्ट फूड अब शहरों के अलावा गांव के गली-मुहल्लों में भी मिलने लगा है। यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है अथवा लाभदायक। इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद कीजिए।

विचार और कल्पना

1- घर के भोजन और बाजार के फास्ट फूड में से आपको कौन सा रुचिकर लगता है और क्यों ?

2- खानपान के निर्माण से लेकर भोजन ग्रहण करने तक की प्रक्रिया में स्वच्छता तथा सफाई की जो-जो बातें ध्यान देने योग्य हैं, उन्हें लिखिए।

निबन्ध से

1- स्थानीय व्यंजनों को बनाने में कमी क्यों आई है ?

2- आजादी के बाद से नौकरियों-तबादलों का नया विस्तार हम किस रूप में देखते है ?

3- खानपान के द्वारा राष्ट्रीय एकता का बीज किस प्रकार अंकुरित होगा ?

4- स्थानीय व्यंजनों के पुनरुद्धार की आवश्यकता क्यों है ?

5- हम खानपान की मिश्रित संस्कृति का भरपूर आनन्द क्यों नही ले पा रहे हैं ?

6- खानपान की मिश्रित संस्कृति के लाभ तथा हानि लिखिए ?

भाषा की बात

1- सु, वि तथा प्र उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए।

2- जब किसी शब्द के अर्थ में विशेषता लाने के लिए उसी के समान दूसरा शब्द लगाया जाता है, तो उसे **शब्द युग्म** कहते हैं। युग्म का अर्थ होता है-जोड़ा। शब्द-युग्म कई प्रकार से बनाए जाते हैं; जैसे एक ही शब्द का दो बार प्रयोग करके, विलोम शब्दों, समानार्थी शब्दों से, सार्थक व निरर्थक शब्दों से। शब्द-युग्म बनाते समय दोनों शब्दों के बीच योजक चिन्ह (-) लगाया जाता है। जैसे-बार-बार, देशी-विदेशी। दिए गए शब्दों से उचित शब्द-युग्म बनाइए:-

देश-	नई-	हँसते-
खान-	स्वाद-	लाल-
शहरी-	घर-	अपना-

वन्दना

ईशं विश्व-निधानं वन्दे
निगम-गीत-गुण-गानं वन्दे।
परितो वितत-वितानं वन्दे
शोभा-शक्ति-निधानं वन्दे ॥1॥

मन्दिर-मस्जिद-वासं वन्दे
गिरजाभवन-निवासं वन्दे।
जन-जन-हृदय-विलासं वन्दे
कण-कण-कलित-प्रकाशं वन्दे ॥2॥

नव-लतिकासु लसन्तं वन्दे
कुसुमेष्वपि विकसन्तं वन्दे।
शिशु-वदनेषु हसन्तं वन्दे
शुचि-हृदयेषु वसन्तं वन्दे ॥3॥
ईशं विश्व-निधानं वन्दे ॥

शब्दार्थ

विश्व-निदानम्= संसार के कारण। **वन्दे**= वन्दना करता हूँ। **निगमः**= वेद। **गीतम्**= गाया है। **परितः**= चारों तरफ। **विततम्**= फैला हुआ। **वितानम्**= चन्दोवा (चाँदनी)। **निधानम्**= जो भण्डार है, (उसको)। **कलितम्**= शोभित। **लसन्तम्**= शोभा पाते हुए। **कुसुमेषु अपि**= पुष्पों में भी। **विकसन्तम्**= खिलते हुए को । **हसन्तम्**= हँसते हुए को। **शुचिः**= पवित्र। **वसन्तम्**= निवास करने वाले को।

अन्वय

विश्वनिदानं ईशं वन्दे। निगमगीतगुणगानं वन्दे। परितो विततवितानम् वन्दे।
शोभाशक्तिनिधानं वन्दे।। 1 ।।

मन्दिर - मस्जिदवासं वन्दे। गिरजाभवन - निवासं वन्दे ।
जन-जन-हृदय-विलासं वन्दे। कण-कण-कलित-प्रकाशं वन्दे।।2।।

नव-लतिकासु लसन्तं वन्दे। कुसुमेष्वपि विकसन्तं वन्दे। शिशु-वदनेषु हसन्तं वन्दे।
शुचि - हृदयेषु वसन्तं वन्दे । ईशं विश्व - निदानं वन्दे।। 3 ।।

भावार्थ

(1)

सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाले, वेदों द्वारा वर्णित गुणों वाले, चारों ओर अपना प्रकाश फैलाने वाले, शोभा और शक्ति के भण्डार, हे ईश्वर ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं।

(2)

मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर तथा जन-जन के हृदय में समान रूप से रहने वाले, अपनी सुन्दर आभा से कण-कण को आलोकित करने वाले, हे ईश्वर ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं।

(3)

नवीन लताओं में सुशोभित होने वाले, पुष्पों में खिलने वाले, शिशु मुख में मुस्कान करने वाले, सज्जनों के हृदय में निवास करने वाले, सम्पूर्ण संसार को उत्पन्न करने वाले, हे ईश्वर ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं।

शिक्षण संकेत-

इन पद्यों का सस्वर समूह गान का अभ्यास कराएँ।

भोजस्य राज्यप्राप्तिः

5IM59V

पुरा धाराराज्ये सिन्धुलनामकः राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वृद्धावस्थायां भोजः इति पुत्रः अजायत। स यदा पञ्चवर्षीयः आसीत् तदा तस्य पिता आत्मनः जरां ज्ञात्वा अनुजं महाबलं मुञ्जमवदत्– "त्वं मम पुत्रं भोजं परिपालय। अपि च यावद् असौ राज्यभारं वोढुम् अक्षमः तावत् त्वमेव राज्यं कुरु।"

दिवङ्गते राजनि राज्यं शासतः मुञ्जस्य पापबुद्धिः उत्पन्ना यद् अयं बालो यदा युवा भविष्यति तदा अहं राजा न भविष्यामि इति। ततः स भोजं हन्तुं निश्चित्य स्वमित्रं वत्सराजं प्राह– "त्वं भुवनेश्वरीविपिने निशायां भोजं हत्वा तस्य शिरः मह्यम् देहि।" वत्सराजः रात्रौ भोजं भुवनेश्वरीमन्दिरं नीत्वा अवोचत्– राजा भवतः वधः आदिष्टः इति। तस्मिन् काले भोजः स्वरक्तेन वटपत्रे एकं श्लोकम् अलिखत्। तेन श्लोकेन वैराग्यमापन्नः वत्सराजः भोजं भूमिगृहान्तरे सुरक्षितवान् । स्वयं च कृत्रिमं मस्तकं राजानं दर्शयित्वा प्राह "श्रीमता यद् आदिष्टं तत् साधितम्" इति। ततः भोजस्य तत्पत्रं राज्ञेऽददात्। राजा पत्राक्षराणि अवाचयत्–

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः,
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशस्यान्तकः।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते !
नैकेनापि समं गता वसुमती मुञ्ज! त्वया यास्यति ।। (भोजप्रबन्धः)

राजा श्लोकस्यार्थं विचार्य अत्यन्तं लज्जितः सन् प्रायश्चित्तस्वरूपेण अग्नौ शरीरं दग्धुं समुद्यतः। तस्मिन्नेव काले 'भोजः जीवति' इति रहस्यं वत्सराजः उद्घाटितवान्। तेन अतीव प्रसन्नः मुञ्जः भोजं राजसिंहासने स्थापयित्वा स्वयं पत्न्या सह तपोवनं जगाम।

(बल्लालसेनस्य भोजप्रबन्धात् रचितम्)

शब्दार्थ

पुरा=प्राचीन काल में। **चिरम्**=बहुत काल तक। **पर्यपालयत**=शासन किया। **पञ्चवर्षीय**=पाँच वर्ष की अवस्था वाला। **जराम्**=बुढ़ापा को। **परिपालय**=पालन-पोषण करो। **वोढुम्**=वहन करने में। **विपिने**=वन में। **नीत्वा**=ले जाकर। **वैराग्यम्**=विरक्ति को। **आपन्नः**=प्राप्त हुआ। **भूमिगृहान्तरे** = भूमिगृह में, तहखाने में। **सुरक्षितवान्**=छिपा दिया। **कृत्रिमम्**=बनावटी। **दग्धुम्**=जलाने के लिए।

श्लोकार्थ

सत्युग के आभूषण राजा मान्धाता भी पृथ्वी से चले गये। जिन्होंने समुद्र पर सेतु का निर्माण कराया, दशानन का वध करने वाले वे राम कहाँ हैं ? अर्थात् वे भी धरती पर नहीं रहे। हे राजन्! युधिष्ठिर आदि अन्य प्रसिद्ध राजा दिवंगत हो गये। इस प्रकार हे मुञ्ज! किसी एक के भी साथ धरती नहीं गयी तो क्या तुम्हारे साथ वह जायेगी ? नहीं।

अभ्यास

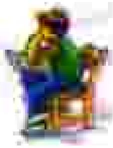

1- उच्चारण करें–

वृद्धावस्थायाम्	वोढुम्	अक्षमः	पत्राक्षराणि
भुवनेश्वरीविपिने	वैराग्यमापन्नः	प्रायश्चित्तस्वरूपेण	स्थापयित्वा

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) राजा सिन्धुलः कुत्र राज्यम् अकरोत् ?
(ख) मुञ्जस्य कीदृशी बुद्धिः उत्पन्ना ?
(ग) वत्सराजः भोजं कुत्र अनयत् ?
(घ) वत्सराजः भोजं कुत्र रक्षितवान् ?
(ङ) मुञ्जः भोजं राजसिंहासने स्थापयित्वा स्वयं पत्न्या सह कुत्र जगाम ?

3- किसने किससे कहा–

(क) त्वं मम पुत्रं भोजं परिपालय।
(ख) भोजं हत्वा तस्य शिरः मह्यम् देहि।
(ग) राजा भवतः वधः आदिष्टः।
(घ) श्रीमता यद् आदिष्टं तत् साधितम्।

4- निम्नलिखित पदों का सन्धि–विच्छेद करें–

पद		सन्धि–विच्छेद
पर्यपालयत्	=	.... + ...
वृद्धावस्थायाम्	=	.... + ...
नैकेनापि	=	.... + ...

5- संस्कृत में अनुवाद करें–

(क) रमेश तेरह वर्ष का है ।

(ख) जब वह आयेगा तब पुस्तक पाएगा ।

(ग) पहले भोजपत्र पर ग्रन्थ लिखा जाता था ।

(घ) तुम भाई के साथ यहाँ आओ ।

6- मञ्जूषा से उचित पदों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

सिन्धुलनामकः वटपत्रे भोजं तपोवनं

(क) पुरा धाराराज्ये...................... राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्।

(ख) वत्सराजः ....भूमिगृहान्तरे सुरक्षितवान्।

(ग) भोजः स्वरक्तेन.................एकं श्लोकम् अलिखत्।

(घ) मुञ्जः स्वयं पत्न्या सह...............तपोवनं जगाम ।

शिक्षण संकेत–

कहानी को अपने शब्दों में सुनाने तथा लिखने का अवसर दें।

द्वितीयः पाठः

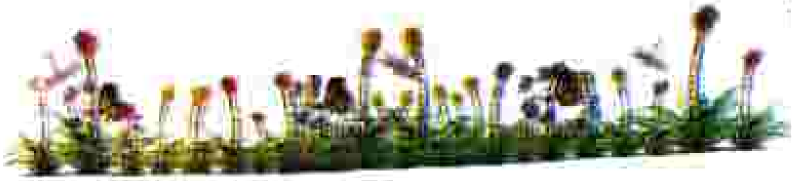

बाल–प्रतिज्ञा

(भविष्यत् काल / विधिलिङ्)

करिष्यामि नो सङ्गतिं दुर्जनानाम्
करिष्यामि सत्सङ्गतिं सज्जनानाम्।
धरिष्यामि पादौ सदा सत्यमार्गे
चलिष्यामि नाहं कदाचित् कुमार्गे।।

हरिष्यामि वित्तानि कस्यापि नाऽहम्
हरिष्यामि चित्तानि सर्वस्य चाऽहम्।
वदिष्यामि सत्यं न मिथ्या कदाचित्
वदिष्यामि मिष्टं न तिक्तं कदाचित्।।

भविष्यामि धीरो भविष्यामि वीरः
भविष्यामि दानी स्वदेशाभिमानी।
भविष्याम्यहं सर्वदोत्साहयुक्तः
भविष्यामि चालस्ययुक्तो न वाऽहम्।।

सदा ब्रह्मचर्य–व्रतं पालयिष्ये
सदा देशसेवा–व्रतं धारयिष्ये।
न सत्ये शिवे सुन्दरे जातु कार्ये
स्वकीये पदे पृष्ठतोऽहं करिष्ये।।

सदाऽहं स्वधर्मानुरागी भवेयम्
सदाऽहं स्वकर्मानुरागी भवेयम्।
सदाऽहं स्वदेशानुरागी भवेयम्
सदाऽहं स्ववेषानुरागी भवेयम्।।

–वासुदेव द्विवेदी 'शास्त्री'

शब्दार्थ

धरिष्यामि = रखूँगा। **पादौ** = दोनों पैरों को। **हरिष्यामि** = हरण करूँगा। **वित्तानि** = धनों को। **तिक्त** = कड़वा। **धारयिष्ये** = धारण करूँगा। **जातु** = कभी। **पृष्ठतः** = पीछे से। **भवेयम्** = होऊँ।

अभ्यास

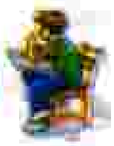

1- उच्चारण करें–

सत्सङ्गतिम्   धरिष्यामि   सर्वदोत्साहयुक्तम्

पालयिष्ये   स्ववेषानुरागी   भवेयम्

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) कस्य सङ्गतिं न करिष्यामि ?

(ख) अहं सदा कुत्र पादौ धरिष्यामि ?

(ग) अहं किं न वदिष्यामि ?

(घ) अहं कस्य वित्तानि हरिष्यामि ?

(ङ) अहं किं वदिष्यामि ?

3- कोष्ठक से उचित क्रिया–पदों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

(क) अहं सज्जनानां सत्सङ्गतिं.......................... (करिष्यति, करिष्यसि, करिष्यामि)

(ख) अहं कस्यापि वित्तं न ....(हरिष्यामि, हरिष्यावः, हरिष्यामः)

(ग) अहं सदा उत्साहयुक्तः ....(भविष्यति, भविष्यामि, भविष्यसि)

(घ) अहं सदा स्वधर्मानुरागी ....(भवेव, भवेम, भवेयम्)

4- रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न–निर्माण करें–

(क) <u>लता</u> कदाचित् कुमार्गे न चलिष्यति।

(ख) अहं कस्यापि <u>वित्तानि</u> न हरिष्यामि।

(ग) <u>वयं</u> स्वदेशानुरागी भवेम।

5- वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) मैं सदा सत्य बोलूँगा।

(ख) हम सब कड़वी बात नहीं बोलेंगे।

(ग) मैं सदा देश–सेवा करूँगा।

(घ) मैं सदा स्वदेशानुरागी होऊँगा।

6- नीचे दिये गए चक्र को ध्यान से देखिए, बीच के गोले में कुछ क्रियापद दिए गए हैं। उचित क्रिया पदों को लेकर उसमें ऊपर दिए गए अधूरे वाक्यों को पूर्ण कीजिए–

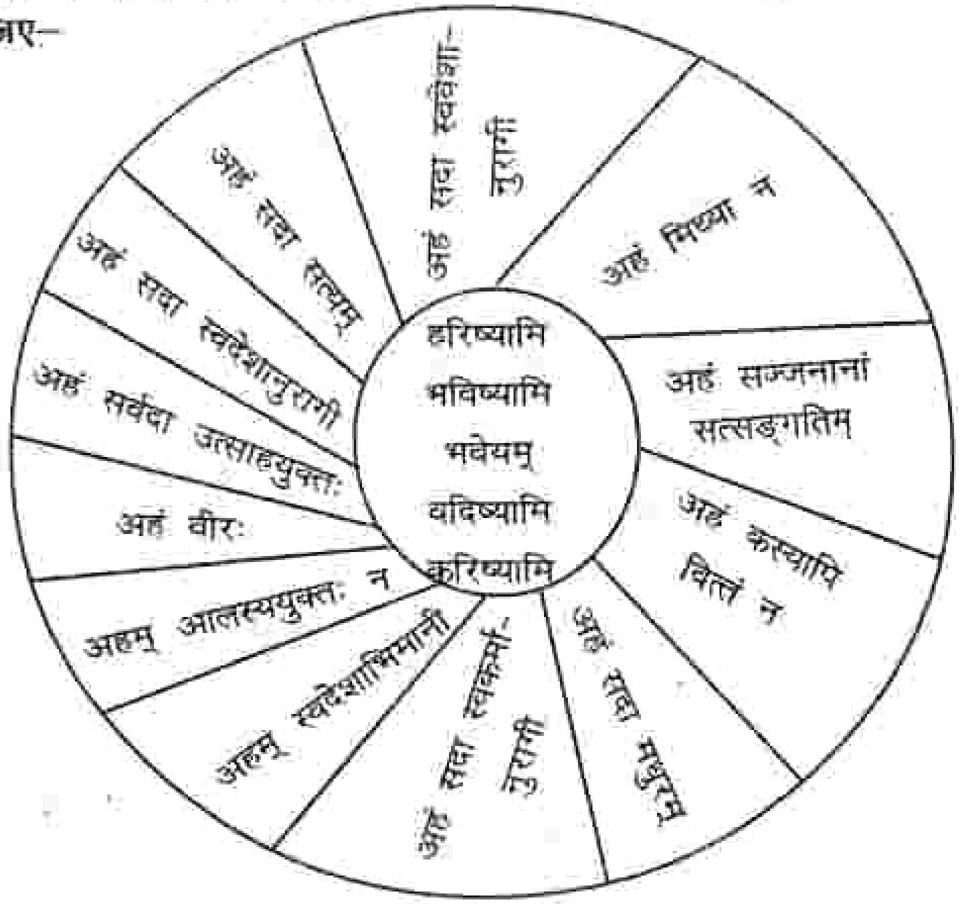

(क) .... (क) ....

(ख) .... (ख) ....

(ग) .... (ग) ....

(घ) .... (घ) ....

(ङ) .... (ङ) ....

(च) .... (च) ....

7- 'कृ' धातु का अर्थ 'करना' है। इस धातु के रूप लृट् लकार में तीनों पुरुषों एवं तीनों वचनों में इस प्रकार होते हैं –

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

इसी प्रकार 'धृ' एवं 'हृ' धातु के रूप होते हैं। इसे अपनी अभ्यास–पुस्तिका में लिखिए।

शिक्षण संकेत–

1- इन श्लोकों का सस्वर वाचन कराएँ।

2- बाल–प्रतिज्ञा में की गई प्रतिज्ञा से अपने–अपने व्यवहारों की समीक्षा करने के लिए अभिप्रेरित करें।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

तृतीयः पाठः

5JEMD6

महादानम्

सुधा :- दीपक! अत्र किं भवति ?

दीपकः :- सुधे! अत्र जनाः रक्तदानं नेत्रदानं च कुर्वन्ति। शरीरस्य कृते रक्तम् आवश्यकम् भवति।

सुधा :- दीपक! रक्तनिर्माणं तु बहुपरिश्रमेण भवति, तर्हि जनाः कथं रक्तदानं कुर्वन्ति? किं रक्तदानेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति ?

दीपकः :- सुधे! रक्ताल्पतायाः कारणं तु अन्यत् भवति। अस्वस्थाः जनाः रक्तदानं न कुर्वन्ति। यदा कोऽपि स्वस्थः जनः रक्तदानं करोति तदा तस्य शरीरे क्षिप्रमेव रक्तनिर्माणं भवति।

सुधा :- एका अन्या अपि शंका वर्तते यत् यथा रक्तदाने चिकित्सकाः रक्तदानाय उत्सुकजनानां केवलं सामान्यं रक्तवर्गपरीक्षणं कृत्वा त्वरितमेव सूचिकायन्त्रेण रक्तं निस्सारयन्ति, किं तथैव नेत्रदानेऽपि नेत्रे सद्यः एव निस्सारयन्ति?

दीपकः :- नहि, नहि, नेत्रदाने तु नेत्रदानाय उत्सुकजनानां शिविरे पञ्जीकरणं भवति। यदा नेत्रदानोत्सुक-जनानां मरणं भवति तदा परिवारजनाः संस्थाने सूचनां ददति। संस्थाने नियुक्ताः चिकित्सकाः तत्र गच्छन्ति। बहु आदरेण सम्मानेन च नेत्रयोः निस्सारणं कुर्वन्ति।

सुधा :- किं मरणानन्तरम् अपि नेत्रं जीवति?

दीपकः :- आम्! किञ्चित्कालं तु जीवति। चिकित्सकाः सूचनाम् अवाप्य ततः सद्यः एव नेत्रे निस्सारयन्ति।

सुधा :- अद्य अहम् अतिप्रसन्ना अस्मि। जीवनसन्दर्भे तु अध्यापकाः बहु उपदिशन्ति किन्तु मृत्योरनन्तरमपि कोऽपि स्वकीयैः अङ्गैः समाजस्य उपकारं कर्तुं क्षमः इति अद्य मया ज्ञातम्।

शब्दार्थ

रक्ताल्पता=खून की कमी। अपरः=दूसरा। शीघ्रम्=शीघ्र। आशङ्का=सन्देह। त्वरितमेव=तुरन्त ही। सूचिका=सूई। निस्सारयन्ति=निकालते हैं। अवाप्य=पाकर। नेत्रे=दोनों आँखों को। क्षमः=समर्थ।

अभ्यास

1- उच्चारण करें-

रक्ताल्पतायाः	निस्सारयन्ति	नेत्रदानोत्सुक-जनानाम्
निस्सारणम्	मरणानन्तरम्	मृत्योरनन्तरमपि

2- एक पद में उत्तर दें-

(क) किम् अस्वस्थाः जनाः रक्तदानं कुर्वन्ति?
(ख) केन यन्त्रेण रक्तं निस्सारयन्ति?
(ग) नेत्रदानशिविरे सर्वप्रथमं किं भवति?
(घ) किं मरणानन्तरम् अपि नेत्रं जीवति?
(ङ) चिकित्सकाः सूचनाम् अवाप्य सद्यः किं निस्सारयन्ति ?

3- पाठ से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) रक्तनिर्माणं तु बहु ...... भवति।
(ख) तस्य शरीरे .... रक्तनिर्माणं भवति।
(ग) संस्थाने नियुक्ताः .... तत्र गच्छन्ति।
(घ) जीवनसन्दर्भे तु अध्यापकाः...... ।

4- निम्नलिखित पदों में विभक्ति एवं वचन बताएँ-

	विभक्ति	वचन
(क) परिश्रमेण	......	......
(ख) नेत्रदानाय	......	......
(ग) सूचनाम्	......	......

5- निम्नलिखित में लकार, पुरुष एवं वचन स्पष्ट करें-

	लकार	पुरुष	वचन
(क) भवति	....	....	....
(ख) कुर्वन्ति	....	....	....
(ग) भविष्यामि	....	....	....

6- संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) यहाँ लोग रक्तदान और नेत्रदान करते हैं।
(ख) शरीर के लिए रक्त आवश्यक होता है।
(ग) आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
(घ) रक्ताल्पता का कारण दूसरा होता है। नेत्रदान महादान है।

7- किसने किससे कहा अपनी पुस्तिका पर लिखिए-

(क) किं मरणानन्तरम् अपि नेत्रं जीवति?

(ख) अद्य अहं अतिप्रसन्ना अस्मि।

(ग) किं रक्तदानेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति ?

शिक्षण संकेत-

बच्चों से अपने रक्त समूह के बारे में जानकारी प्राप्त करने को कहें।

महाजनो येन गतः स पन्थाः।

5JNSET

विभक्तीनां प्रयोगाः

प्रथमा

कुलं शीलं च सत्यं च प्रज्ञा तेजो धृतिर्बलम्।
गौरवं प्रत्ययः स्नेहो, दारिद्र्येण विनश्यति।।

प्रथमा–द्वितीया

गुणो भूषयते रूपं शीलं भूषयते कुलम्।
सिद्धिर्भूषयते विद्यां भोगो भूषयते धनम्।।

प्रथमा–तृतीया

मृगाः मृगैः साकमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समान–शील–व्यसनेषु सख्यम्।।

चतुर्थी–प्रथमा

दानाय लक्ष्मीः सुकृताय विद्या, चिन्ता परब्रह्म–विनिश्चयाय।
परोपकाराय वचांसि यस्य, वन्द्यस्त्रिलोकीतिलकः स एव।।

पञ्चमी–प्रथमा

विषादप्यमृतं ग्राह्यम् अमेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमा विद्या स्त्री–रत्नं दुष्कुलादपि।।

षष्ठी – प्रथमा

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्।।

सप्तमी

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

शब्दार्थ

प्रज्ञा= बुद्धि, ज्ञान। **धृतिः**= धैर्य। **प्रत्ययः**= विश्वास। **शीलम्**= सदाचार, अच्छा स्वभाव। **साकम्** =साथ।। **सुधी**= विद्वान। **व्यसनम्**= किसी बात या कार्य का शौक, विपत्ति। **त्रिलोकीतिलकः**= श्रेष्ठ (तीनों लोकों में अलङ्कार स्वरूप)। **अमेध्यात्**=अपवित्र स्थान से।

अभ्यास

1- उच्चारण करें–

धृतिर्बलम्,   भूषयते,   गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः,
विनिश्चयाय,   वन्द्यस्त्रिलोकीतिलकः,   राष्ट्रविप्लवे।

2- एक वाक्य में उत्तर दें–

(क) दारिद्र्येण किं विनश्यति?

(ख) वन्द्यः कः भवति ?

(ग) श्रोत्रस्य भूषणं किं भवति ?

(घ) बान्धवः कः भवति ?

3- अधोलिखित पदों में लगी विभक्तियों को बताएँ।

पद	विभक्ति
दानाय –	....
वचांसि –	....
विषात् –	....
श्रोत्रस्य –	....

4- 'पुष्प' शब्द की अलग–अलग विभक्तियों के सात रूप दिए गए हैं। उचित रूप का चयन कर वाक्य पूरा करें–

पुष्पाणि,   पुष्पैः,   पुष्पेभ्यः,   पुष्पाणाम्,   पुष्पेषु,   पुष्पम्,   पुष्पात्।

(क) .... विकसति।

(ख) .... आनय।

(ग) .... सुगन्धं प्रसरति।

(घ) .... आपणं गच्छ।

(ङ) .... मधु गृहीत्वा भ्रमरः उड्डयते।

(च) .... माला आकर्षकं भवति।

(छ) .... भ्रमराः गुञ्जन्ति।

5- संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) दरिद्रता से बल नष्ट होता है।

(ख) गुण से रूप की शोभा होती है।

(ग) सोने को अपवित्र स्थान से भी ग्रहण कर लेना चाहिए।

(घ) हाथ की शोभा दान से होती है।

(ङ) परोपकारी पूज्य होता है।

6- हिन्दी में अनुवाद करें–

(क). शीलं भूषयते कुलम्।

(ख) समान–शील–व्यसनेषु सख्यम्।

(ग). विषादप्यमृतं ग्राह्यम्।

(घ) हस्तस्य भूषणं किम् अस्ति ?

(ङ) बान्धवः कः भवति ?

7- सही जोड़े बनाइए–

विद्याम्	तृतीया
मृगैः	सप्तमी
व्यसने	द्वितीया
दानाय	षष्ठी
कण्ठस्य	चतुर्थी

शिक्षण संकेत–

वाक्य–प्रयोगों द्वारा भी कारक और विभक्ति की पहचान कराएँ।

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।

masterjeeonline.com

पञ्चमः पाठः

सहसा विदधीत न क्रियाम्

ईस्वीयवर्षस्य सप्तमशताब्द्यां महाराष्ट्रप्रान्ते आसीद् राजा विष्णुवर्धनः। तस्य राजसभायां महाकविः भारविः राजकविः आसीत्। तस्य महाकाव्यं किरातार्जुनीयं पुराकालादेव अत्यन्तं प्रसिद्धं वर्तते।

भारविः बाल्यकाले महता परिश्रमेण विद्याम् अर्जितवान्। तस्य विलक्षणा प्रतिभा काव्यरचनायामपि प्रवृत्ता। स सर्वदा विद्वत्सभासु सोत्साहम् उपातिष्ठत्। तत्र पण्डितैः सह अनेकवारं चातुर्येण शास्त्रार्थम् अकरोत्। स कविसम्मेलनेषु निरन्तरं काव्यम् अश्रावयत्। श्रोतारः तस्य रम्यं काव्यं श्रुत्वा भृशं प्रशंसन्ति स्म। इत्थं काव्यकलायां तस्य कीर्तिलता अल्पेनैव कालेन चतुर्दिक्षु प्रासरत्।

भारवेः पिता पुत्रस्य काव्ययशसा मनसि अत्यन्तं प्रसन्नः सन्तुष्टश्चासीत्। तथापि स वचसा भारविं कदापि न प्राशंसत्। प्रत्युत स यदा–कदा तस्य पाण्डित्यस्य आलोचनाम् अकरोत्। तेन भारविः चिन्तितः खिन्नश्च अजायत। एकदा तस्य पिता काव्यं श्रुत्वा राजसभायामेव आलोचितवान् तिरस्कृतवान् च। तेन अपमानेन भारविः पित्रे अत्यधिकं रुष्टः उद्विग्नश्च अभवत्। स चिन्तया रात्रौ निद्रां न लब्धवान्। गृहे इतस्ततः पर्यटन् स रात्रौ पितुः प्रकोष्ठाद् बहिरेव किञ्चित्कालं स्थितः। तदा स्वविषये मातापित्रोः वार्तालापम् अशृणोत् – अस्माकं पुत्रः महाकविः महापण्डितश्च। तस्य यशः निरन्तरं वर्धते। स समाजे अस्माकमपि गौरवं स्थापयति। किन्तु स इतोऽपि अधिकं कवित्वं कीर्तिं चार्जयेद् इति विचार्य सभायामद्य मया तिरस्कृतः – इति। एवं श्रुत्वा भारविः ततः प्रतिनिवृत्तः। पितरं प्रति मिथ्यारोषात् तस्यान्तःकरणे महती ग्लानिः उत्पन्ना। स रात्रौ पश्चात्तापं कुर्वन् एतत् पद्यं प्रणीतवान्–

सहसा विदधीत न क्रियाम्, अविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।

(किरातार्जुनीयम् 2/30)

शब्दार्थ

सहसा =अचानक। **न विदधीत**=नहीं करना चाहिए। **पुराकालाद् एव**=प्राचीन समय से ही। **विलक्षणा**=अद्भुत । **उपातिष्ठत्**=उपस्थित होते थे। **भृशम्**=बहुत। **इत्थम्**=इस प्रकार। **चतुर्दिक्षु** =चारों दिशाओं में। **इतस्ततः**=इधर–उधर। **पर्यटन्**=घूमते हुए। **इतोऽपि**=इससे भी। **कवित्वम्**= काव्यरचना की शक्ति को। **प्रतिनिवृत्तः**=लौट गये। **मिथ्या**=झूठा। **प्रणीतवान्**=रचना की। **वृणुते**= वरण करती हैं। **विमृश्यकारिणम्**=विवेकी पुरुष को।

श्लोकार्थ

कोई कार्य अचानक (बिना विचारे) नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेक आपत्तियों का घर है। सम्पदा गुणों से मिलती है। वह विचारपूर्वक कार्य करने वालों का अपने आप वरण कर लेती है।

अभ्यास

1- उच्चारण करें–

किरातार्जुनीयम्, काव्यरचनायामपि, विद्वत्सभासु, अल्पेनैव, चतुर्दिक्षु, उद्विग्नश्च, प्रतिनिवृत्तः, तस्यान्तःकरणे।

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) भारवेः महाकाव्यस्य किं नाम ?

(ख) भारविं वचसा कः न प्राशंसत् ?

(ग) स कविसम्मेलनेषु किम् अकरोत् ?

(घ) भारविः पित्रे कथं रुष्टः ?

(ङ) तस्यान्तःकरणे का उत्पन्ना?

3- नीचे दिये गये क्रियापदों के लकार, पुरुष एवं वचन लिखें –

	लकार	पुरुष	वचन
आसीत्	......	......	......
अपठत्	......	......	......
अर्जयेत्	......	......	......

4- अधोलिखित पदों में लगे उपसर्गों को लिखें –

परिश्रमेण = ...
विलक्षणा = ...
प्रतिनिवृत्तः = ...
नियोजितवान् = ...

विशेष–किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, और नैषधीयचरितम् इन तीन महाकाव्यों को बृहत्त्रयी कहते हैं।

5- मञ्जूषा से उचित पदों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

वार्तालापम्, सोत्साहम्, पित्रे, राजकविः।

(क) महाकविः भारविः..........आसीत्।
(ख) स सर्वदा विद्वत्सभासु .... उपातिष्ठत्।
(ग) स्वविषये मातापित्रोः ......अशृणोत्।
(घ) अपमानेन भारविः .....अत्यधिकं रुष्टः।

6- संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) वह नियम से विद्यालय जाता है।
(ख) मैं अपने अध्यापक की प्रशंसा करता हूँ।
(ग) तुम घर के बाहर खड़े रहो।
(घ) करीम कक्षा में प्रथम है।

7- जिसके प्रति कोप किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे–पित्रे रुष्टः। कोष्ठक में दिये गये शब्दों में विभक्ति लगाकर रिक्त स्थान भरें।

(क) त्वं .... क्रुध्यसि। (राक्षस)
(ख) अहं ....नैव कुप्यामि। (हरि)

शिक्षण संकेत–

1- छोटे समूह में पढ़ने और अर्थ कहने का अभ्यास कराएँ।
2- माता–पिता या बड़ों की टोका–टाकी विषय पर चर्चा कराएँ।

षष्ठः पाठः

प्रभात–सौन्दर्यम्

उदयति मिहिरो विदलति तिमिरो,
भुवनं कथमभिरामम् ।।
प्रचरति चतुरो मधुकर–निकरो,
गुञ्जति कथमविरामम् ।।1।।

विकसति कमलं विलसति सलिलं,
पवनो वहति सलीलम्
दिशि–दिशि धावति कूजति नृत्यति,
खगकुलमतिशयलोलम् ।।2।।

शिरसि तरूणां रविकिरणानां,
खेलति रुचिररुणाभा,
उपरि दलानां हिम–कणिकानां,
काऽपि हृदय–हर–शोभा ।।3।।

प्रसरति गगने हरि–हर–भवने,
दुन्दुभि–दमदम– नादः।
भज परमेशं पठ सनिवेशं
भवतादनुपममोदः ।।4।।

शब्दार्थ

मिहिरः=सूर्य । **विदलति**=छँटता है। **तिमिरः**=अन्धकार। **अभिरामम्**=मनोहर। **निकरः**=समूह। **कथम्**=कैसा। **अविरामम्**=निरन्तर। **सलीलम्**=लीला (खेल) झोंका के साथ। **अतिशय–लोलम्**=अत्यन्त चंचल। **तरूणाम्**=वृक्षों के। **रुचिः**=कान्तिः। **शिरसि**=शिखरों पर। **अरुणाभा**=लाल कान्ति वाली। **दलानाम्**=पत्तों के। **हृदय–हर–शोभा**=हृदय को हरने वाली सुन्दरता । **सनिवेशम्**=ध्यानपूर्वक।

अभ्यास

1- उच्चारण करें–

विदलति, कथमभिरामम्, प्रचरति, रुचिररुणाभा,
कथमविरामम्, सलीलम्, दिशि–दिशि, दुन्दुभिः,
खगकुलमतिशयलोलम्, शिरसि, तरूणाम्, भवतादनुपममोदः।

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) कः विदलति ?
(ख) मधुकरनिकरः किं करोति ?
(ग) किं विकसति ?
(घ) खगकुलं किं करोति ?
(ङ) कस्य रुचिररुणाभा तरूणां शिरसि खेलति ?

3- पाठ में आए उचित पदों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

(क) ....उदयति।
(ख) चतुरः ....प्रचरति।
(ग) खगकुलं ....धावति।
(घ) अनुपममोदः ....।

4- हिन्दी में अनुवाद करें –

(क) भुवनं कथम् अभिरामम्।
(ख) मधुकरः कथम् अविरामं गुञ्जति।
(ग) अतिशयलोलं खगकुलं कूजति।

(घ) दुन्दुभि–दमदम–नादः प्रसरति।

5- संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) परमेश्वर का भजन करो।
(ख) रात में चाँद निकलता है।
(ग) कमल जल में खिलता है।
(घ) चिड़ियाँ पेड़ों पर कूजती हैं।
(ङ) पत्तों पर ओस की बूँदें अच्छी लगती हैं।
(च) मन लगाकर पढ़ो।

6- रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण करें–

(क) जले कमलं विकसति।
(ख) पुष्पेषु मधुकराः गुञ्जन्ति।
(ग) वृक्षेषु खगाः कूजन्ति।
(घ) क्रीडाक्षेत्रे बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

7- निम्नलिखित पंक्तियों को सही क्रम में करके अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखें–

उपरि दलानां हिम–कणिकानां ....
शिरसि तरूणां रविकिरणानां। ....
काऽपि हृदय–हर–शोभा ....
खेलति रुचिररुणाभा।। ....

शिक्षण संकेत–

1- प्रभात के सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में करने का अवसर छोटे–छोटे समूह में दें।
2- समूह में इन पदयों का गान कराएँ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

आदर्शपरिवारः

एकस्मिन् ग्रामे जगत्पालो नाम एकः सज्जनो वसति। तस्य पत्नी कला अस्ति। जगत्पालः सप्तत्रिंशद्वर्षीयः कला द्वात्रिंशद्वर्षीया च स्तः। तौ दम्पती सुखेन निवसतः।

तयोः द्वे सन्तती स्तः, एकस्तनयः एका च तनया। तनयस्य नाम विवेकः तनयायाश्च नाम प्रतिभा अस्ति। विवेकः एकादशवर्षीयः प्रतिभा सप्तवर्षीया च। विवेकः सप्तमकक्षायां पठति, प्रतिभा तृतीयकक्षायां च।

आम्र–निम्ब–मधूकादिवृक्षाणां छायासु स्थितं जगत्पालस्य गृहमत्यन्तं रमणीयं वर्तते। जगत्पालः एकः उद्योगी कुशलश्च कृषकः। सः सर्वदा कृषिकर्मणि संलग्नः स्वकर्तव्यं पालयति। सः परिश्रमं कृत्वा स्वक्षेत्रे पर्याप्तम् अन्नम्, शाकं, फलं च उत्पादयति। तस्य गृहे एका श्वेतवर्णा धेनुः वर्तते। सा बहु दुग्धं ददाति।

विवेकः प्रतिभा च स्वास्थ्यप्रदं पुष्टिदं च भोजनं कुरुतः। तयोः शाकस्य फलस्य चाधिक्यं वर्तते। तौ यथेच्छं पयः पिबतः। स्वच्छानि वस्त्राणि परिधाय तौ मातरं पितरं च प्रणम्य पठनाय स्वविद्यालयं प्रति गच्छतः।

कला एका स्वस्था आदर्शभूता च गृहिणी अस्ति। सा सदा स्वकार्याणि सम्पादयति, पत्युः सन्तानयोः स्वास्थ्यविषये सावधाना च वर्तते। पतिः जगत्पालोऽपि स्वपत्नीं कलां बहुमन्यते। अनेन प्रकारेण परस्परं स्नेह–सौहार्द–बद्धः अयं लघुपरिवारः एकः आदर्शपरिवारः अस्ति। लघुपरिवारः एव सुखी परिवारः। आहारस्य वस्त्रस्य गृहस्य च व्यवस्था लघुपरिवारे एव समुचितरूपेण भवति। लघुपरिवारेणैव समाजस्य राष्ट्रस्य च कल्याणं भवितुम् अर्हति।

शब्दार्थ

सप्तत्रिंशत् = सैंतीस। **द्वात्रिंशत्** = बत्तीस। **सन्तती** = दो सन्तानें। **तनयः** = पुत्र। **तनया** = पुत्री। **मधूकः** = महुआ। **पत्युः** = पति का। **परिधाय** = पहन कर। **पुष्टिदम्** = पोषक तत्वों से युक्त। **प्रणम्य** = प्रणाम करके। **लघुपरिवारेणैव** = लघु परिवार के द्वारा ही।

अभ्यास

1- उच्चारण करें–

सप्तत्रिंशद्वर्षीयः, द्वात्रिंशद्वर्षीया, लघुपरिवारेणैव,
तनयायाश्च, स्वास्थ्यप्रदम्, अर्हति।

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) जगत्पालस्य परिवारः कीदृशः ?
(ख) जगत्पालः कीदृशः कृषकः अस्ति ?
(ग) कला कीदृशी गृहिणी अस्ति ?
(घ) लघुपरिवारः कीदृशः परिवारः अस्ति ?

3- निम्नलिखित पदों के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन लिखें –

पद		लिङ्ग	विभक्ति	वचन
तनया	=	......	......	......
जगत्पालस्य	=	......	......	......
कृषकः	=	......	......	......
आज्ञया	=	......	......	......
स्थानेषु	=	......	......	......

4- निम्नलिखित पदों का सन्धि–विच्छेद करें –

(क) चाधिक्यम् = ... + ...
(ख) लघुपरिवारेणैव = ... + ...

5- रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

(क) तस्य पत्नी .... अस्ति।

(ख) तयोः ....सन्तती स्तः।

(ग) विवेकः .... वर्षीयः अस्ति।

(घ) तस्य गृहे एका ....धेनुः वर्तते।

6- हिन्दी में अनुवाद करें –

(क) अयं लघुपरिवारः एकः आदर्शपरिवारः अस्ति।

(ख) विवेकः प्रतिमा च कीदृशं भोजनं कुरुतः।

(ग) आहारस्य वस्त्रस्य गृहस्य च व्यवस्था समुचितरूपेण भवति।

(घ) लघु परिवारेणैव समाजस्य राष्ट्रस्य च कल्याणं भवितुमर्हति।

7- संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) उसकी पत्नी का नाम कला है।

(ख) दोनों दम्पती सुख से निवास करते हैं।

(ग) विवेक ग्यारह वर्ष का है और प्रतिभा सात वर्ष की है।

(घ) जगत्पाल एक उद्योगी और कुशल कृषक है।

(ङ) उसके घर में एक सफेद रंग की गाय है।

शिक्षण संकेत–

1- लघु परिवार की विशेषताओं पर कक्षा में चर्चा कराएँ।

2- लघु परिवार के सम्बन्ध में अपने विचार लिखने का अवसर दें।

धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

कुम्भमेला

अस्माकं प्रदेशस्य मध्य-दक्षिणभागे अतिप्राचीनं प्रयागनगरं स्थितमस्ति, यस्योत्तरतः गङ्गा दक्षिणतः यमुना च नद्यौ प्रवहतः। तत्र सरस्वत्याः नद्याः अपि काचिद् अदृश्यधारा वहतीति पुराणेषु वर्णितम्। तस्य नगरस्य प्राच्यां दिशि तिसृणामपि नदीनां भवति कश्चित् शोभनः सङ्गमः। अतः तत्स्थानं त्रिवेणीः, त्रिवेणीसङ्गमः इति नाम्नापि सर्वत्र प्रसिद्धमस्ति यतो हि तत्र तिस्रः वेण्यः नदीधाराः परस्परं मिलित्वा एकीभवन्ति। तस्याः एव त्रिवेण्याः सङ्गमतटे प्रतिद्वादशवर्षं कुम्भमेला लगति।

अस्ति श्रीमद्भागवतादि - महापुराणेषु समुद्रमन्थनस्य प्रसिद्धा कथा वर्णिता। पूर्वं सत्ययुगे देवाः दानवाश्च मिलित्वा समुद्रम् अमथ्नन्। तस्मात् चतुर्दश रत्नानि उदभवन्। तेषु सुवर्णकुम्भं हस्तयोः धृत्वा उत्पन्नः धन्वन्तरिः अप्येकं रत्नम् आसीत्। तस्य कनककुम्भे अमृतमासीत्। श्रीविष्णोः आज्ञया तस्य वाहनं गरुडः तम् अमृतकुम्भम् अहरत्। ततः दानवाः अमृतं पातुं तम् अन्वधावन्। अनुगच्छतः तान् दानवान् परावर्तयितुं गरुडः तैः सह चतुर्षु स्थानेषु युद्धम् अकरोत्। तस्मिन् युद्धे हस्तधृतात् तस्माद् अमृतकुम्भात् किञ्चिद् अमृतं चतुर्षु स्थानेषु अपतत्। अतः तेषु चतुर्षु स्थानेषु अमृतं प्राप्तुं जनाः कुम्भमेलाम् आयोजयन्ति। तानि चत्वारि स्थानानि हरिद्वारं प्रयागः नासिकम् उज्जैनं चेति सन्ति।

प्रयागे त्रिवेणीतटे जनाः माघमासे मकरगते रवौ एकमासस्य कल्पवासं कर्तुं यद्यपि प्रतिवर्षम् आयान्ति, तथापि प्रतिद्वादशवर्षं 'कुम्भपर्व' प्रतिषड्वर्षं च 'अर्द्धकुम्भपर्व' इति नाम्ना प्रथिता कुम्भमेला प्रचलति।

अस्यां मेलायां पर्वणि-पर्वणि लक्षाधिकाः जनाः आगच्छन्ति। तेषु श्रद्धालवः गृहस्थाः, साधवः, यतयः संन्यासिनश्च सहस्राधिकाः एकमासं निवसन्ति। एतेषां सर्वेषां जनानाम् आवासार्थं शासनं

सर्वविधां सार्वजनिकसुविधां प्रददाति। मेलायाः व्यवस्थायै शासने एकः पृथक् विभागः एव स्थापितः। अतः अत्र सत्यपि जनसम्मर्दे काप्यसुविधा असुरक्षा वा न भवति। तस्मात् इमां विश्वस्य प्रमुखां कुम्भमेलां द्रष्टुं सर्वैः जनैः आगन्तव्यम्।

शब्दार्थ

अदृश्यधारा = विलुप्तधारा। **दिशि** = दिशा में। **अमथ्नन्** = मंथन किए। **धृत्वा** = धारण कर, रखकर। **कनककुम्भे** = सोने के कलश में। **परावर्तयितुम्** = लौटाने के लिए। **मकरगते** = मकर राशि पर स्थित होने पर। **कल्पवासम्** = संगम क्षेत्र में ही नियमपूर्वक रहने का संकल्प लेकर निवास करना। **प्रथिता** = प्रसिद्ध। **सत्यपि** = होने पर भी। **जनसम्मर्दे** = लोगों की भीड़।

अभ्यास

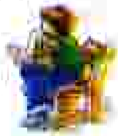

1-उच्चारण करें-

मध्यदक्षिणभागे, यस्योत्तरतः, सरस्वत्याः,
परावर्तयितुम्, सहस्राधिकाः, प्रतिद्वादशवर्षम्।

2-एकपद में उत्तर दें-

(क) सङ्गमतटे प्रतिद्वादशवर्षं का लगति ?
(ख) सुवर्णकुम्भं हस्तयोः धृत्वा कः उत्पन्नः ?
(ग) कनककुम्भे किम् आसीत् ?
(घ) कल्पवासं कर्तुं जनाः कस्मिन् मासे आगच्छन्ति ?

3-एकवाक्य में उत्तर दें-

(क) समुद्रमन्थनस्य प्रसिद्धा कथा कुत्र वर्णिता ?
(ख) सत्ययुगे के मिलित्वा समुद्रम् अमथ्नन् ?
(ग) त्रिवेणीतटे जनाः कदा कल्पवासं कर्तुम् आगच्छन्ति ?
(घ) कां द्रष्टुं सर्वैः जनैः प्रयागे आगन्तव्यम् ?

4-निम्नलिखित पदों का सन्धि-विच्छेद करें-

पद	सन्धि-विच्छेद
यस्योत्तरतः	.... + ...
अप्येकम्	.... + ...
नाम्नापि	.... + ...
काप्यसुविधा	.... + ...

5-रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण करें-

(क) <u>कनककुम्भे</u> अमृतम् आसीत्।

(ख) अमृतं प्राप्तुं जनाः <u>कुम्भमेलाम्</u> आयोजयन्ति।

(ग) <u>अमृतकुम्भात्</u> किञ्चिद् अमृतं चतुर्षु स्थानेषु अपतत्।

(घ) <u>गरुडः</u> अमृतकुम्भम् अहरत्।

6-संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) नगर की पूर्व दिशा में नदियों का संगम है।

(ख) देवों और दानवों ने मिलकर समुद्र मथा।

(ग) भारत के चार स्थानों पर अमृत की बूँदें पड़ीं।

(घ) प्रत्येक बारह वर्ष पर कुम्भ मेला लगता है।

शिक्षण-संकेत-

अपने गाँव या नगर के पास जो मेला लगता हो, उसका दस पंक्तियों में वर्णन कराएँ।

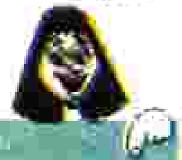

इसे भी जानें

समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्न हैं-

रम्भा	विष	वारुणी (मदिरा)	अमृत
शंख	ऐरावत (हाथी)	धनुष	धन्वन्तरि
कामधेनु	कल्पवृक्ष	चन्द्रमा	उच्चैःश्रवा (घोड़ा)
श्री (लक्ष्मी)	कौस्तुभमणि		

नवमः पाठः

व्यवसायेषु संस्कृतम्

संस्कृतज्ञाः गणकरूपेण चिकित्सकरूपेण च लोकहिते रताः सन्ति। कर्मकाण्डनिष्णाताः याज्ञिकाः अपि हव्यरूपेण ओषधिवनस्पतीनां वायुरूपेण परिवर्तनं कृत्वा मेघरचनायां साधकाः भवन्ति। मेघैः वृष्टिपातः भवति। वृष्टिपातेन अन्नानि भवन्ति। तैः प्राणिनां पोषणं भवति।

गणकः

ज्योतिषं वेदानां नेत्रं वर्णितमस्ति। तस्य विद्वान् गणकः कथ्यते। सः ग्रहनक्षत्राणाम् अध्ययनं करोति। सः ग्रहाणां जनेषु प्रभावस्यापि विचारं करोति। हिन्दुजनानां प्रत्येकं नामकरणादि–संस्कारं कर्तुं तथा नवीनकार्यस्य प्रारम्भाय सः शुभाशुभं मुहूर्तं निर्दिशति। अतः सः विनीतवेशः सत्यवक्ता शुचिः देशकालतः भवेत्। एवंविधं बहुज्ञं दैवज्ञं जनाः सम्मानयन्ति।

चिकित्सकः

ऋग्वेदादयः चत्वारः वेदाः सन्ति। आयुर्वेदादयः तेषाम् उपवेदाः भवन्ति। आयुर्वेदस्य विद्वान् चिकित्सकः भवति। सः औषधविधाने तेषां प्रयोगे च निपुणः भवति। योगतन्त्र–शल्य–शालक्यादि–प्रयोगेण सः प्राणिनां हितं साधयति। भारतीय–विद्यायां नराणामिव गजाश्वादिपशूनां वृक्षादीनामपि रोगशमनाय विचारः वर्णितः अस्ति। धन्वन्तरिः अश्विनौ, आत्रेयः, चरकः, सुश्रुतः त्र्यम्बकशास्त्री, सत्यनारायण शास्त्री अन्ये च चिकित्सकाः श्रेष्ठाः आसन्। ते शारीरिक–मानसिक–रोगहरणे समर्थाः अभवन्। एवम् अन्येऽपि अनेके व्यवसायाः सन्ति यत्र संस्कृतभाषायाः संस्कृतज्ञानाञ्च महती उपयोगिता अस्ति।

शब्दार्थ

गणकरूपेण = ज्योतिषी के रूप में। **लोकहिते** = समाज के कल्याण में। **कर्मकाण्डनिष्णाताः** = कर्मकाण्ड में पारंगत। **याज्ञिकाः** = यज्ञ करने वाले। **ओषधिवनस्पतीनां** = वह वनस्पति जिससे

औषधि का निर्माण होता है। **विनीतवेशः** = विनम्रता व्यक्त करने वाले वेश से युक्त। **चत्वारः वेदाः** = चार वेद–ऋक्, यजुः, साम, अथर्व। **औषधविधाने** = दवा का निर्माण करने में। **निपुणः** = कुशल। **रोगशमनाय** = रोग के शमन (शान्ति) के लिए।

अभ्यास

1- उच्चारण करें–

संस्कृतज्ञाः	कर्मकाण्डनिष्णाताः	ओषधिवनस्पतीनाम्
गजाश्वादिपशूनाम्	वृक्षादीनामपि	संस्कृतज्ञानाच्च

2- एक पद में उत्तर दें–

(क) वेदानां नेत्रं किमस्ति ? (ख) वेदाः कति सन्ति ?
(ग) गणकः कीदृशो भवेत् ? (घ) कम् उपवेदं ज्ञात्वा जनः चिकित्सकः भवति?

3- मञ्जूषा से उचित पदों को चुनकर रिक्त–स्थानों की पूर्ति करें–

उपयोगिता, चिकित्सकः, याज्ञिकाः, नेत्रम्।

(क) ....यज्ञे हव्यरूपेण आहुति–द्वारा मेघान् उत्पादयन्ति।
(ख) ज्योतिषं वेदानां ....वर्णितमस्ति।
(ग) बहुषु व्यवसायेषु संस्कृतज्ञानां महती ....अस्ति।
(घ) आयुर्वेदस्य विद्वान् ....भवति।

4- निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें –

(क) आयुर्वेद एक उपवेद है।
(ख) ज्योतिष–शास्त्र से ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव का ज्ञान होता है।
(ग) चिकित्सक को विनीत और कुशल होना चाहिए।
(घ) चिकित्सक व्याधियों को दूर करता है।

5- नीचे दिए गए पदों से संस्कृत वाक्य बनाएँ–

मेघैः, कन्दुकेन, पुष्पेण, वायुयानेन, जलयानेन, जलेन।

शिक्षण संकेत–

1- विविध संस्कारों में, शुभ कार्यों में, कालगणना एवं चिकित्सा के क्षेत्र में संस्कृत ज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डालें।
2- भारतीय मासों एवं तिथियों के नामों की जानकारी कराएँ।

परिशिष्टम्

व्याकरणम्

सन्धि-विचार तथा रूप

व्यञ्जन-सन्धि

वाक् + जालः = वाग्जालः जगत् + ईश्वरः = जगदीश्वरः

अच् + अन्तः = अजन्तः षट् + दर्शनम् = षड्दर्शनम्

1- यदि किसी वर्ग के प्रथम अक्षर क्,च्,ट्,त्,प् के बाद उसी वर्ग का तीसरा अर्थात् ग्,ज्,ड्,द्,ब् या चौथा अक्षर अर्थात् घ्,झ्,ढ्,ध्,भ् या अन्तस्थ अर्थात् य्,व्,र्,ल् अथवा कोई स्वर आये तो वर्ग के उस प्रथम अक्षर के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है।

2- इसी प्रकार किसी वर्ग के प्रथम अक्षर के बाद किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर ङ्,ञ्,ण्,न्,म्, आये तो प्रथम अक्षर के स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है, जैसे–

प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः जगत् + नाथः = जगन्नाथः

उत् + गमः = उद्गमः उत् + भवः = उद्भवः

षट् + मासः = षण्मासः सत् + आनन्दः = सदानन्दः

उक्त प्रयोगों से यह स्पष्ट होता है कि यदि त् के बाद कोई स्वर अथवा ग्,घ्,द्,ध्,ब्,भ् तथा य्,व्,र्,ल्, आये तो त् के स्थान पर द् हो जाता है। इनके कुछ अपवाद भी हैं, जो इस प्रकार है, यथा त् के बाद ज् आने पर त् का ज् और ल् आने पर त् का ल् हो जाता है, जैसे–

सत् + जनः = सज्जनः तत् + लीनः = तल्लीनः

विसर्ग-सन्धि

जब पहले शब्द के अन्त में विसर्ग हो और बाद में आने वाले शब्द की प्रथम ध्वनि स्वर या व्यञ्जन हो तो ऐसी स्थिति में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं, जैसे-

निः + मलः = निर् + मलः = निर्मलः

निः + आहारः = निर् + आहारः = निराहारः

हरिः + चन्द्रः = हरिस् + चन्द्रः = हरिश्चन्द्रः

निः + सन्देहः = निस् + सन्देहः = निस्सन्देहः

ऊपर लिखे हुए उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि -

(क) यदि विसर्ग के पहले इ हो और बाद में वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है।

(ख) यदि विसर्ग के पूर्व इ हो और विसर्ग के बाद आ आया हो तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है।

(ग) यदि विसर्ग के पहले इ हो और बाद में च् अथवा तालु-स्थानीय कोई वर्ण आया हो तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है।

(घ) यदि विसर्ग के पहले इ हो और बाद में क् अथवा प वर्ग का कोई वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है।

शब्दरूप

इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

मुनि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः!

हरि, ऋषि, कवि, रवि आदि के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं।

तकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

सरित्- नदी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित् !	हे सरितौ !	हे सरितः !

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु-गाय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः

तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे / धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः!

धातुरूप

परस्मैपदी धातु

दृश् (पश्य्)—देखना

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यमपुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तमपुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लोट्लकार (आज्ञा / प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यमपुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तमपुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्लकार (विधि / सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यमपुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तमपुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

8. स्था (तिष्ठ्) ठहरना

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यमपुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तमपुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट्लकार (आज्ञा / प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यमपुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तमपुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यमपुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तमपुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्लकार (विधि / सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यमपुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तमपुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यमपुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तमपुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

पा (पिब्) पीना

विशेष – 'पा' को लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में 'पिब्' आदेश हो जाता है।

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यमपुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तमपुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पिबतु (पिबतात्)	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यमपुरुष	पिब (पिबतात्)	पिबतम्	पिबत
उत्तमपुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यमपुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तमपुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यमपुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तमपुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यमपुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तमपुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

नी (नय्) ले जाना

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यमपुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तमपुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लोट्लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यमपुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तमपुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यमपुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तमपुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्लकार (विधि/सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यमपुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तमपुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यमपुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तमपुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

कृ धातु (करना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यमपुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तमपुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट्लकार (आज्ञा / प्रार्थना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करोतु / कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यमपुरुष	कुरु / कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उत्तमपुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्लकार (विधि / सम्भावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यमपुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तमपुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यमपुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तमपुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

भारत का संविधान

(मूल अधिकार)

भारतीय नागरिकों को निम्नलिखित छह मूल अधिकार प्राप्त हैं ।

- **समता का अधिकार (अनुच्छेद 14 से 18)**
  (1) विधि के समक्ष समता।
  (2) धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध।
  (3) लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता।
  (4) अस्पृश्यता का अंत।
  (5) उपाधियों का अंत।
- **स्वातंत्र्य–अधिकार (अनुच्छेद 19 से 22)**
  (1) वाक्–स्वातंत्र्य आदि विषयक कुछ अधिकारों का संरक्षण।
  (2) अपराधों के लिए दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण।
  (3) प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण।
  (क) शिक्षा का अधिकार।
  (4) कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।
- **शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23 से 24)**
  (1) मानव के दुर्व्यापार और बलात्श्रम का प्रतिषेध।
  (2) कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।
- **धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25 से 28)**
  (1) अंतःकरण की और धर्म की अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता।
  (2) धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता।
  (3) किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के बारे में स्वतंत्रता।
  (4) कुछ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता।
- **संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार (अनुच्छेद 29 से 30)**
  (1) अल्पसंख्यक–वर्गों के हितों का संरक्षण।
  (2) शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक–वर्गों का अधिकार।
- **सांविधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32 से 35)**
  (1) इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिए उपचार।
  (2) इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों का, बलों आदि को लागू होने में, उपांतरण करने की संसद् की शक्ति।
  (3) जब किसी क्षेत्र में सेना विधि प्रवृत्त है तब इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों पर निर्बन्धन।
  (4) इस भाग के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए विधान।

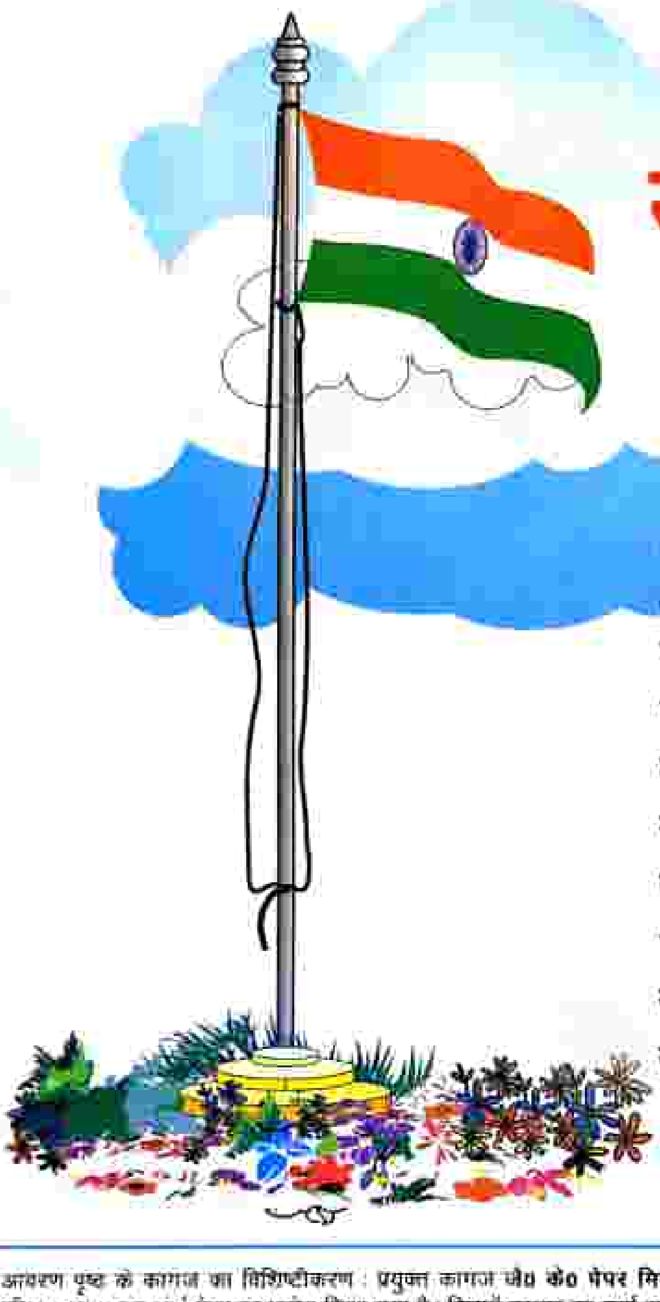

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक, जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा–
द्राविड़–उत्कल बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगल दायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे!

सत्र 2020-2021

आवरण पृष्ठ के कागज का विशिष्टीकरण : प्रयुक्त कागज जे0 के0 पेपर मिल्स लि0 / बिल्ट ग्राफिक्स वर्जिन पल्पयुक्त 175 जी0एस0एम0 का आर्ट पेपर का प्रयोग किया गया है। जिसमें कागज का बर्स्ट इण्डेक्स–न्यूनतम 0.9, वैक्स पिक्स–नो पिक्स ऑन 5ए, ग्लास परसेंट–न्यूनतम 55, ब्राइटनेस न्यूनतम 72 प्रतिशत और सरफेस पी0एच0 5.5 से 8.0 होगा। कागज की अन्य विशिष्टियाँ बी0आई0एस0 कोड आई0एस0–4658–1988 के अनुसार है, एवं कागज 53.34 सेमी0X78.74 सेमी है। आवरण पृष्ठ का बाहरी भाग चार रंगों तथा अन्दर का भाग एक रंग में मुद्रित है।

उ0 प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद्

निःशुल्क वितरण हेतु

लखनऊ प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित